

ललनचन्द्रिका का निवेदन

विदित हो कि यह पारावार रहित घोर संसार में एक से एक महान् विद्वान् ज्ञानवान् गुणवान् चतुर सुजान लोग हो गये हैं यथा श्री व्यासदेव जी महाराज महान् कुशल कवि कि जिन्होंने अठारह पुराण रचकर जगत् को मुक्ति मार्ग व हरिभक्ति का प्राप्त होना सूचित किया अथवा शुकदेव जी महाराज कि जिन्होंने भागवत द्वारा राजापरीक्षितको मोक्षपदवीका प्रधान बनाया अथवा बाल्मीकि जी जिन्होंने अपने बुद्धि विक्रमसे बाल्मीकीय रामायण कल्पित कर इस जगत् के उद्धारणार्थ एक नौका बनायदी इत्यादि अनेकों मुनी अनेकों गुनी अनेकों कविजन अनेकों बुध सुजन अपनी अपनी युक्ति बुद्धिबल से सनातन उस परब्रह्म परमात्मा के गुणानुवाद गाते ही चले आते अरु नहीं अघाते हैं तौ फिर इससे यही जानाजाता है कि इस असार संसार में यह महादुर्लभ मनुष्य चोला पायकर केवल परमात्मा के गुणानुवाद ही गान करना कथन करना स्मरण करना व सुनना यकसार है और सब असार है क्योंकि हरिभजन का वो प्रताप है कि साक्षात् हरिस्वरूप जीव को बनाय इस जगत् के आवागमन के महान् दुःखों से छुड़ाय देता है ॥ अतएव ॥ इसी कारण से इस ललन सरीखी मतिवाले ललन ने अपनी तुच्छ लघु बुद्धि के अनुसार आप महाशयों की परम अनुग्रह वा आशीर्वाद से यह ललनसागर में का एक चतुर्थ विभाग कि जिसमें बारह खरिक अकार से हकार पर्यंत वर्ण सम्बंधी शब्दों में अनेक

भावालंकार नायकाभेद संपन्नित अनेक रसों से चुचुहाते हुये जमक प्रिय विधानिक पूर्वार्द्ध में तो अनूठे अनूठे कवित्त और उत्तरार्द्ध भाग में अन्योक्ति कवित्तों की श्रेणी अभित भाव सुख सृजेणी, यथा, पक्षाविलास, व, प्रमून प्रकाश, वाना किराना, व, मसालादि अनुमाना, विटप वर्णना, व, साग भार्जा विषर्णना, व्याख्यान तरुफलान, व, रंग गणना विधान, पात्रण शैली, व, नखशिख गैली, तंडुलादि अनाज जाति वर्णन, व, प्रकरण वस्त्रन, संख्या मिष्टान्न, व, निमकीन सामान, पात्र सृजायक शस्त्र सूचनिका, लोह पात्रस्य गणनिका, आभूषण प्रसंग, व, रत्नादिकनु तरंग, गोटा किनारी बाना, व, भूमिका विसांतखाना इत्यादि अनेक प्रसंगों में अनेक नायका भेद, अनेक रस भावालंकारों में अतिशय रँगीले ढँगीले, व, छबीले फबीले, व, चटकीले मटकीले, व, रसीले सुख सरसीले प्रबंधों में अनोखे अनोखे कवित्त मुद्रित हैं वनाया अब आप समस्त गुणज्ञ कविजन व महाशयों सज्जनों व सर्व साधारणों से मुझ अल्पज्ञ की ये सविनय प्रार्थना है कि कदापि किसी पद में व कोई शब्द में, व, कहीं अर्थ भाव प्रबंध में, या, छापे ही में छपजाने की अनुचिता से कहीं पर अशुद्धता हो गई होय तौ आप महाशयों को जरूरी कपट रहित हो उचित है कि मुझे अपना लघु (छोटा) ललन जानकर क्षमापन करें अथवा पत्र द्वारा ज्ञात करा देने का उद्योग करें मैं उनको अनेकों आशीर्वाद व धन्यवाद देकर अपने आप को कृतार्थ करूंगा ॥

अग्रे प्रार्थनावत् सर्व सज्जनों को प्रकट किया जाता है कि पुस्तकें तो कवित्तोंकी अनेकों छापी गई हैं परन्तु इस प्रकरण संब-

धिक कि जिसमें सिलसिलेवार समस्त स्वर व्यञ्जनिक शब्दों सम्पन्नित कि जिनमें क्रिया तक अन्य वर्ग की न छुड़जाय ऐसी पुस्तक कवित्तों की आज तक कोई नहीं देखने में आई थी सो हे महाशयो भेरी इस जीजान मारी महागूढ़ मेहनत पर ध्यानधर आप सज्जनोंको मुझे यही आशीर्वाद सच्चे हित चित्त से देना चाहिये कि ऐसे ऐसे अमित प्रकार के अपूर्व सुखदायी पदार्थ आपकी सेवा में मैं सदैव सनातनही निवेदनकर अपने आप को कृतार्थ समझा करूं ॥ यथा ॥

दोहा ॥

सुजनन की आशीश से होत सुजन अल्पज्ञ ।

यहि कारण विनवत ललन कृपा करहु सर्वज्ञ ॥ १ ॥

कवि न कछुक पंडित न कछु बुधिवल विद्या हीन ।

ललनमती अघ कर्मबश सकल कलामति छीन ॥२॥

औगुन गठरी शिर धरे मन माया में मेल ।

ललन वनों विहस्त चहुं विषय असत रचि खेल ॥ ३ ॥

गुरु गोविंद की कृपा बश धौं तुव आशिप पाय ।

ललनहुं की बनिजाय कछु कह अचरज अधिकाय ॥४॥

हूं द्विज दीन अकिंचनहि बुधि विद्या हतमान ।

भेरिहु सब बनिजा जो तुम द्रवहु ललन मुहि जान ॥५॥ इति ॥

आपका

पंडित ललनपिया शर्मा सारस्वत अष्टवंश भारद्वाजी

फर्रुखाबाद मुहल्ला मित्तूकूंचा निवासी ॥

अब इस ललनचन्द्रिका के संकेतिक नियमों को सरल विधिसे सूचित करते हैं ॥

इस पुस्तक में जो कि टीका कवित्तों का किया गया है उसका यह नियम संकेत रखा है कि पहिले तो कवित्त लिखा है और जिस आशय पर जो कवित्त बांधा गया या बँधा है सो आशय प्रसंग में मुद्रित कर दिया है पश्चात् कवित्त में जो जो मिलेहुये शब्द हैं उनकी संधि प्रकरण से रूप खोलदिया और + इस तरह का चिह्न लगायदिया है तिस पीछे उसी कवित्त का टीका किया गया है, और फिर, सरल से सरल विधि शब्दों का अर्थ समझ लेने की यही रक्खी गई है कि कवित्त और टीका दोनों के शब्दों पर अंक चिह्नित कर दिये गये हैं ताकि सर्वसाधारण भी जिस शब्द का अर्थ जानना चाहें तौ अङ्क गणनाके मिलान करने से हरेक पद का भाव रस व अर्थ जान सकें हैं क्योंकि यह प्रसिद्ध बात है कि जो जानै सो मानै ॥ जब तक किसी पद का अर्थ व भाव न जाना जाय तब तक कुछ उसका स्वाद नहीं आवता और न कुछ मनको आनंद प्राप्त होता है । इसी हेतु अपनापरिश्रम सुफल करने के वास्ते और आप महाशयों के प्रसन्नार्थ टीका करके यह पुस्तक प्रतिष्ठित रईस लखनऊ के मुंशी नवल-किशोर साहब (सी, आई, ई) के सुशील पुत्र भार्गव कुल मुकुट-मणि धर्मपारायण मुन्शी प्रागनारायण साहब की सेवा में मैंने निवेदन करदी है सो उन्हीं की सहायता व अनुग्रहसे प्रकाश की गई है यह ललनसागरके दश हिस्सोंमें का यह एक चतुर्थ भाग है ॥

यह ललनचन्द्रिका क्या है आनंदमन्द्रिका है पीयूषवृन्दिका है इसकी चसक लेते ही हृदयाम्बुज प्रफुल्लित हो उठता है ॥ लीजिये लीजिये इस रसको भी पीजिये और सुख से तृप्त हूजिये ॥

ललनचन्द्रिका का

समर्पण ॥

प्रियवर

कविता रसिक शिरोमणि

श्रीमान् महामान्याधीश गोद्विज धर्मपालनीय धर्मधुरीण
धर्मावतार अखिल गुणग्राही गुणि गुणहित उत्साही प्रतिष्ठित
प्रधाननीय परम सुखद स्थल मल्लापूर जिला खीरी अवध शा-
रदा समीप निवासी श्री वर यशेश ठाकुरेश राउ साहब श्रीमुने-
श्वर बरुश सिंह समीपेषु ॥

महाशय

यह तो मैं जानता हूँ कि ऐसे तो आपने अनेकों क्रीट कुंड-
लादि आभूषण पहिर डाले होंगे परन्तु फिर भी मैं आप को अ-
नन्य हरिभक्त गुणग्राही जानकर यह एक छोटी सी गरीबामऊ
प्रेमपूरित उत्साह अंकुरित यथोचित मुकुटमौरी सटीक ललनच-
न्द्रिका रूपी भेंट जिसमें कि अनेक चित्र विचित्र हरिचरित्र रूपी
अनमौलिक काव्य संबंधिक ललित रत्न मुद्रित हैं आप की सेवा
में निवेदन करता हूँ सो इसे आप प्रीति पूर्वक प्रमोद मानयुति
अंगीकार कर अपने भक्ति शिरोमणि मुकुट की चन्द्रिका बनाय
पहिरियेगा ॥ यथा ॥

दोहा ॥ तव प्रसाद सत्संग फल प्रथम कमाई मोर ।

अन धनदा पितु ललन के करत समर्पण तोर ॥१॥

गौर और विधि करिय कछु गुनिन गरीब निवाज ।

तौ तव ललनै का न फल हो सहजहि सुख ताज ॥२॥

अथ आशीर्वाद ॥

चिरंजीव हो ललन वृधि कुल जिय कोटि बरीस ।

फूलहु फलहु हमेश लहि मम अशीश बकसीस ॥३॥

वही आपका पंडित ललन पिया शर्मा

सारस्वत अष्टवंश भारद्वाजी

फर्रुखाबाद मुहल्ला मिचूकूंचा निवासी ॥

ललनचन्द्रिका का मङ्गलाचरण ॥

बंदना श्री गणेशजी की ॥

(१) सवैया किरीट छन्द ॥

^१ आदि ^२ गणेश ^३ बुधेश ^४ मुखेश ^५ विशेष ^६ सुवेष ^७ यशेश ^८ जनायक ।
^{१०} वेश ^९ क्लेश ^{११} अँदेश ^{१२} दली ^{१३} अभिषेक ^{१४} अनन्द ^{१५} हमेश ^{१६} करायक ॥
^{१७} देश ^{१८} नरेश ^{१९} धनेश ^{२०} खगेश ^{२१} दिनेशरु ^{२२} शेष ^{२३} प्रजेश ^{२४} धियायक । जै
^{२५} ललनेश ^{२६} जनेश ^{२७} तपेश ^{२८} महेश ^{२९} उमा ^{३०} सुत ^{३१} सिद्धिविनायक ॥ इति ॥

^१ टीका ॥१॥ प्रथम (पूजनीय) गणनके स्वामी, बुद्धि व सुखके स्वामी, अत्यन्त
^२ करिके, जेसुन्दर वस्त्राभूषण तिन्है ^३ धारण ^४ किये हुये, कीर्तिके स्वामी, (जो) जाने
^५ जाते है ॥ (और) दुःखादि चिन्ता रूपी, स्थल के दूर करनेवाले, (व) सदैव सुख
^६ का तिलक करावनेवाले ॥ (और) संसारमें राजाओं, कुबेर गरुड़, सूर्य, अरु
^७ शेषजो पृथ्वी भार धारी (व) ब्रह्मादि (देवतों करके) बन्दनीय ॥ (और) अल्पज्ञों
^८ (व) सेवकों के स्वामी, यज्ञ यंत्रादि के स्वामी महादेव पार्वती जी के पुत्र जो
^९ गणेशजी महाराज सर्वसिद्धी देनेवाले (उनकी) जय यानी हैम होय ॥१॥ इति ॥

ललनचन्द्रिका प्रारम्भः ॥

वासुकिशय्या ॥

अवर्ग ॥ कवित्त ॥ २ ॥

आली आवलोकी आज अबला अनोखी असि आनन
अनूप अमि आकरीहि आभा ही । अंजन अँजाये अक्षु अजब
अदा अधीक अरु अवलोकन हूँ अलबेलि आला ही ॥ अधर
अनूठे अलगारन अरुणताई अमृतावली अगार आदरहिं आ-
थाही । अंगअंग अतन अभूषण अनन्त अँगे ललन अधिप
आभा अकथित आंकाही ॥ इति ॥

सखि प्रति हरिवचनम् ॥

अथ प्रकरण संधि ॥ अमृत+अग्ने+अवली=अमृतावली ॥

टी० ॥२॥ (हे) सखि आज मैंने ऐसी अद्भुत सुन्दरी देखी (कि जिसका)
अत्यंतसुन्दर मुख अमृत समूह की शोभा को प्रगट करै था॥ (और) नेत्रों में अंजन
लगाये (तिसकी) अतिशय आश्चर्यमय शोभा और सुन्दर अनोखी चितवन भी
थी॥ (और जिसके) अजूवा होंठोंपर अत्यन्तकरके ललिआई (मानो) वे अनुमान
सुधा पंक्तियों का स्थल सुशोभित हो रहा था ॥ (और जिसके) प्रतिअंग में कामदेव
(कीफवन) अनेक (रत्नजटित) गहिने पहिरेहुये प्यारीप्यारी शोभा की स्वामिनी
कि जो कहने में न आसके जचती भई ॥ इति ॥

सखि शीक्षा ॥

अवर्ग ॥ कवित्त ॥ ३ ॥

^२ आज ^९ अवलोको ^१ आली ^७ अलवेलो ^८ आचरण ^३ आनिआनि
^४ अबला ^६ अगार ^६ अधिकारी ^{१२} को । ^{१०} अगम ^{११} अगाध ^{११} अन्य ^{११} आभहि
⁺ ^{१३} अकिंचनासि ^{१४} ओछे ^{१५} अपनाये ^{१६} अंग ^{१८} आपदा ^{१७} अगारी ^{२१} को ॥ ^{२१} अङ्क
^{२०} अंगना ^{१९} अपन ^{२३} अनादरै ^{२२} अग्र ^{२५} अग्र ^{२८} अतनै ^{२४} अंगावै ^{२६} अरी ^{२६} असन
^{२७} अनारी ⁺ ^{२९} को । ^{३०} आदरादराहि ^{३२} अलगावत ^{३१} ललन ^{३६} असि ^{३६} अञ्जुलदे
^{३५} अब ^{३३} सौ ^{३४} में ^{३४} अरसी ^{३४} अचारी ^{३४} को ॥ इति ॥

सखि प्रति सखि वचनम् ॥

⁺
 अथ प्रकरण संधि । आदर+अग्रे+अदराहि=आदरादराहि ।

⁺
 अकिंचन+अग्रे+असि=अकिंचनासि ॥

३ ॥ प्रसंग ॥ एक सखी अपनी परम सहेली से अपने हितू गोपाल लाल की सच्ची मित्रताई अरु हित की सगाई की सदैव बड़ाई किया करती थी एक दिन कहीं उसने रसिकशिरोमणि भक्तवत्सल कृष्णचन्द्र भगवान् को किसी अन्य सखी के गृह जाते हुये देख अपनी हितू से आन हरिका उरहना दे चितावा देती भई कि तैं तो हरिकी बड़ी प्रशंसा किया करती थी ॥

टी० ॥३॥ (३) सखि इस समय (तु) और और सखियों के घर जानंचाले

का अञ्जुत बरताव देखा । (जो) पराये रूपही का अधिक से अधिक ऐसा लोभी (व
 दरिद्री) है (तिस) हलके मनुष्य से प्रीति करने में शरीर को आगे चल दुःख (ही मिल-
 ना है देखु पाहिले तो) ॥ अपनी सगी बनावते पीछे फिर अपमान करै हैं (सो इन्में तेरा
 कुछ दोष नहीं है) हे प्यारी कामदेवही ऐसा प्रबल है जो पंसा नादान को
 अंगीकार कराय देता है । सम्मान देकर (जो) परित्याग करै (तौ) ऐसे नादान रस्तरहित
 विचार करने वाले को परबसहूँ में भी दूरही से प्रणाम करना चाहिये ॥ इति ॥
 अथ सखि शृंगारिके पटरंग वर्णन ॥ रंगानुमान संख्या ॥ २४ ॥

अवर्ग ॥ कवित्त ॥ ११ ॥

आवी आफतावी अवरई अंजनी अजीव अँविरि अँगूरी
 आसमानी अमरुदिया । अँवई अमौआ अकरोटी अगरे अनूप
 आगी अलवानी अफसानी अछ अलिसया ॥ अरुण अँजीरी
 अर्गजी अपूर्व अम्बरीहु अद्रकी अतेव अल्वुस्रारिया अनारिया ।
 +
 अलिकया अनन्त अम्बराभिराम अंग अंग आभरन अँगे असि
 ललना अजूबिया ॥ इति ॥

अथ संधि प्रकरण अम्बर+अग्ने+अभिराम=अम्बराभिराम ॥

इस कवित्त में कोई छिष्ट शब्द न होने से इसका अर्थ नहीं किया गया क्यों-
 कि केवल अर्वांगों के नाम मुद्रित हैं तिनहैं सभी जानते होंगे ॥ इति ॥

अथ सखि शृंगार वर्णन ॥ वस्त्ररंगानुमान संख्या ॥ १६ ॥

अवर्ग कवित्त ॥ ५ ॥

आली अलमस्त अंग आँगियां अनूठि अति अरुण अँगूरी
 औ अँजीरि अम्बईसी हैं । अंबरी अबीरी अमरुदी अरु अर्गजीहु
 अद्रकी अनारी असमेठी अगईसी हैं ॥ आछी अलवानी आस-

मानी अलिप्तया अजीव आबी आफताबी अंजनी अगईमी हैं ।
 अति अभिराम आभरन अप्सरा अनूप ललनप्रिया अपूर्व अद्वा
 अर्वाइसी हैं ॥ इति ॥

सखि प्रति सखि वचनम् ॥

प्रसंग ॥ ५ ॥ श्रीरामचन्द्र महाराज के विवाह में
 जनकपुर की सलोनी सुकुमार सखियाँ इस प्रकार
 शृंगार साज सुहावती भईं कैसी शोभा है कि ॥

टी० ॥५॥ (हे) सखि अतिशय शोभा से भरी हुई देवांगना (कि जिनके)
 मद से भरे हुये शरीरों पर (इस कवित्त के तीन चरणों में मुद्रित जो रंग हैं इन
 इन रंगों की) अत्यन्त अनोखी अंगियां (व) अतिशय सुन्दर आभूषणों (से
 शोभायमान और फिर कैसी हैं कि) बाल्यावस्था यानी छोटी उमर की प्यारी
 अर्धनतरह की अद्भुत शोभाओं से (शोभायमान होती भई) इति ॥

आशीर्वाद ॥

इवर्ग ॥ कवित्त ॥ ६ ॥

ईंगित इमहिं इतिहास इहिदेशनादि इतरलोकान ईश इक्-
 छत राजहो । इकाइक इकटक ईश्वरीहि इच्छासन इत्थमहिं इन्द्र
 इव इकवाल वाजहो ॥ इन्दीवरनी इन्दुआननीहु इच्छतनी
 इन्द्रासन इन्द्र इभु इदानी इकाज हो । इत्महु इमारत इजारदार
 इक्षित्यरै ललन इच्छाहूवत इक्षण दराज हो ॥ इति ॥

अथ संधि प्रकर्ण ॥ इहि देशन+आदि=इहि देशनादि १ ॥
इन्द्र+आसन=इन्द्रासन ॥ २ ॥

नृप प्रति बुध वचनम् ॥

ॐ ॥ १ ॥ (इहि राजन हमारे इस) व्याख्यान का यही प्रयोजन है (कि) इन दे-
शनको आदि दैकर सम्पूर्ण भुवनके मनुष्यों के स्वामी है निष्कण्टक (चक्रवर्ती)
राज्य करो। (और) यही प्रकार परमेश्वर की दृढ़ कृपासे एकाएकी (शीघ्र) सुर-
पति समान भाग्यशाली होहु ॥ कमलके सदृश नेत्र (व) चन्द्रमा सरीखा मुख ऊख
(गन्ना)के समान दुबरीपतरी (रसीली रंगीली स्त्री व) सुरराज सरीखा आसन
(व) पुरन्दर के बाहन सम ऐरावत हस्ती इसीसमय यहफल प्राप्तहोय। (और)
विद्यारूपी सुन्दरगृह आपकी मलकियतमें बशीभूत होय (व) तुम्हारी इच्छानु-
सार बहु पुत्रों का दर्शन होय ॥ इति ॥

अथ सखि समूह शृंगार छवि वर्णन ॥

अथ रंगानुमान संख्या ॥ ४ ॥ नामानि ॥ इमली १ ईशपातिया २
ईटिया ३ इलायचिया ॥ ४ ॥
इवर्ग कवित्त ॥ ७ ॥

इन्दुमुखि इन्दुतनि इन्दुभालि ईगुरीहु इतिरी इठैली इक
इकअलकावली । इमृतसरीइमारती इजार इच्छित इरानियाँ
इजार इ ईमिली इवासली ॥ इन्दीवरनैनी इमु इंजनी इलीम-
दार इक्षुबदनहुँ इलेमासियाम्बरामली । ईशपातियारी ईटिया
इलाचियाहु इस्तेभालिया इमान ललनेश इशिकयाकली ॥ इति ॥
प्रसंग ॥ ७ ॥ श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् के बिवाह

में भीष्मक नरेश नगर की सलोनी सुकुमार सखियाँ
जिस प्रकार शृंगारसज श्रीकृष्ण मुरारिकी शोभा दे-
खने आवती भईं तिन की छटा वर्णन ॥ इति ॥

अथ संधि प्रकरण ॥

अलक + अग्रे + अवली = अलकावली ॥ इव + अग्रे + असली = इवासली ॥
इलोमासिया + अग्रे + अम्बर = इलोमासियाम्बर + अग्रे + अमली = इलोमा-
सियाम्बरामली ॥ इशिक्रया + अग्रे + अकली = इशिक्रयाकली ॥

टी० ॥ ७ ॥ (कोई) चन्द्रमुखी (कोई) मयंकवत्शरीर की द्युतिवारी (कोई)
निशाकर सदृश अमृतयुत मस्तक पर लाल बेंदी लगाये (कोई की) इतर लपेटी
घुंगुरवारी हरेक अलकोंकीपंक्ती । (कोई के तनपै) अमृतसरदेशके बनावटकी सुत्थन
(जिनमें) मनमाने ईरानदेशीय असली इमली कैसे हरेरंग के कमरबन्द (शो-
भायमान) ॥ (कोई) ऐसी कमल सरिखे नेत्रवाली सुरमा (व काजर लगाये
कोई) वेदपाठिनी (कोई) गन्नासरीखी दुबरी पतरी बनेचुनेसुन्दरवस्त्र (आ-
भूषण धारण किये) । (कोई) ईशपाती रंग के (कोई) ईटसरिखे रंग के (कोई)
इलायची के रंग से (वस्त्र धारण किये) पतिव्रता (सुधर्मा) पुत्रवती (कोई) चट-
कीली मटकीली चतुरसखी (सुहावती भई) ॥ इति ॥

नायकानां छविवर्णन

उवर्ग कवित्त ॥ ८ ॥

अथ रङ्गानुमान संख्या नामानि ऊदा १ उन्नाबी २ उरदई ॥ ३ ॥

उत्तूदार ऊदिया उरोजिनी उरोजौ उत उन्नती उत्तंगता उमंग-
ती उरातरी । उलहे उरुज उमराई उमुदाई उग उभ्रउभ्र उभ्रभ्रान
उत्तमोजिआररी ॥ उद्यत उनाबी उभ्र उरदी उझाहनीहुँ उलकापु-

२३ २६ २४ २७ २८ २९ ३०
 रीक ऊजनी उमूल उत्तरी । ऊजरोनमत्ति भाह उर्वशी उजागरीक
 ३१ ३२ ३३ ३४
 ललना उला उम्रऊपर उदाररी ॥ इति ॥

अथ संधि प्रकरण ॥ उत्तम+अग्रे+उजियार=उत्तमोजियार ॥ १ ॥
 ऊजर+अग्रे+उनमत्त=ऊजरोनमत्त २ ॥

प्रसंग ॥ ८ ॥ श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् की बरातिनु दे-
 वांगनों की छवि वर्णन कैसी शोभा है कि किसीके तो ॥
 सखिप्रति सखि वचनम् ॥

टी० ॥ ८ ॥ उचूकरी हुई ऊदेरंगकी अँगियाँ कुचों पर हड्डी व उचाहट बढ़ती हुई
 १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
 (जोस भरी) प्रकाश होती हुई । (और जिनके) अमीरी ऐश्वर्य्य अच्छाई से भरे
 ९ १० ११ १२ १३
 १४ १५ १६ १७ १८
 हुये सुहायमान प्रकाश है हैकर सुन्दर छटा को प्राप्त सुशोभित होतेहुये ॥ (और) उत्सा-
 १९ २० २१ २२ २३ २४
 ही (मन पसन्दी) पोशाक सुन्दर उन्नावी रंग की उलकापुरकी तरंदाजी (व) उत्तर
 २५ २६ २७ २८ २९ ३०
 के पहिराव की शोभायमान । गौबर्यामस्तानी शोभा अप्सराओं की शोभा-
 ३१ ३२ ३३ ३४
 यमान पुत्रों करके सुशोभित वित्तबाहर उदारचित्त (देखाती हुई) ॥ इति ॥

उवर्ग कवित्त ॥ ६ ॥

उरोज वर्णन ॥

३ ४ २ १ ६ ६ ७ ८
 उनमत्तता उदित उन्नती उरोज धहु उग्र उमराइया उरूज उ-
 ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७
 लहेउतै । उर्वरा उदर उतपन्ने उभु उमलान उदै उमुदाइयां उमंग
 १८ २० २१ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०
 उवहे उतै ॥ उक्किं उमेश उमै उत्तम उजागरहि उत्तमांग उपरन
 ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४०
 ऊदे उमहे उतै । उर्वशी उरै धौं उडनाह उदयागिरिहि उचरै ल-
 ४१ ४२ ४३
 लन उपमेशहैं उहे उतै ॥ इति ॥

अथ संधि प्रकरण ॥ उमा+ईश=उमेश ॥१॥ उत्तम+अग्ने+
आंग=उत्तमांग ॥२॥ उपमा+अग्ने+ईश=उपमेश ॥३॥

नायका प्रति नायक वचन ॥

प्रसंग ॥६॥ कोई एक नायक किसी सुरूपवती
सखी की सुन्दरताई देख कर एक नायका से पूछे है
कि उस सुन्दरी के ॥

टीका ॥ ९ ॥ कुचौपर वृद्धी (त्र) वस्तानापन प्रकाशित है अथवा सुन्दर
अमीरी ऐश्वर्य्य शोभायमान हैं । (अथवा) वीज उपजाऊ धरती रूपी हृदपर
दो कमल प्रकाश है उपमे हैं (अथवा) सुन्दरताइयों की वृद्धी उच्चता को प्राप्त
हैं ॥ अथवा यह कहिये कि द्वै सुन्दर शिवमूर्ति शीशपर ऊढ़ी पात दिखे सुशो-
भित शोभायमान हैं । (कि) अप्सरा के उरोज हैं अथवा चन्द्रमा के (द्वै)
उदय थल हैं याने प्रकाश होने के पर्वत हैं (अथवा) ललन (पिया कवि)
का कथन है कि वही निजु उपमा के स्वामी (की मूर्ति हैं) ॥ इति ॥

नायकानां शृङ्गारवर्णन ॥

अथ रत्नानुमान संख्या ॥ ३३ ॥

घनाक्षरी कवर्ग कवित्त ॥ १० ॥

कुन्दनी कपूरिआ कदम्बिआ कपासी कल क्युलई करीली
काकरेजी कंजई कराल । कन्नकी कमली कारि कीरी कुल क्यो-
डईहु कम्लगडई कनीजी कस्तुरी काही कमाल ॥ कानी क-
सारी कांचकी कचूमरी कशीशि कथै कचनारी कपसी कनेरि
कौड़ियाल । कोकी कारचोबी किर्मित्री करेलि केशरीहु कोऊ के
ललन कपड़े कुमुम्भि कज्जगल ॥ इति ॥

प्रसंग ॥१०॥ इस कवित्त में भी कोई गूढार्थ न होने के कारण से टीका नहीं किया क्योंकि इसमें केवल रंगी हुई पोशाकों के कवर्गी रंगों के नाम वर्णन हैं ॥ इति ॥

सुरसवारिकखगनामानि वर्णन ॥

अथ खगानुमान संख्या ॥ ३२ ॥

कवर्ग कवित्त ॥ ११ ॥

कोकिला करारी कुरी काकातूहु कीर काक कौड़िल कटाई कठफुर्वा किनयानुरी । कांकुल कुरंगी करियलिया करोरी कंध कञ्जरी ककेरि केरि कांकड़ा कुजानुरी ॥ कुमुही कुलंग कटनास कुञ्जली कपोत कलपुँछी कुम्हारी ककरील कर्करानुरी । कन्दुल कराकुल कर्बानक कल्हर्क कल ललन कहत कोई कृष्ण कोई कान्हुरी ॥ इति ॥

प्रसंग ॥११॥ इस कवित्त में केवल देवतों की सवारी के कवर्गी पक्षियों के अनेक नाम वर्णन हैं कोई गूढशब्द नहीं है इसीसे इसका अर्थ नहीं लिखा ॥ इति ॥

अथ कपोत जाति वर्णन ॥

अथ जाति अनुमान संख्या ॥ ३१ ॥

कवर्ग कवित्त ॥ १२ ॥

काविली कमाऊ केरि कालेहू कलांख कल क्योंड़ई कमखी काही कलिसरे किनारिये । कल्दुमे कपासी काकरेजी कञ्जई कराल कड़ी बाज कागदीहु कासनी कपूरिये ॥ क्योलई कशीशी कचकमरे कौड़ील कुल किर्मिची कुमुम्भी कलपोटिये कुम्हारिये । कप्सिआहु किस्मिसी कर्मरबन्द कुन्दनीहुँ कर्थई ललन किस्म कौ कपोत कुम्रिये ॥ इति ॥

प्रसंग ॥ १२ ॥ इस कवित्तमें केवल ककाररूपी क-
वृत्तोंकी जाति वर्णन हैं ॥ अर्थकी कुछ आवश्यकता नहीं
है सर्व साधारण भी समुझसके हैं इसीसे टीका नहीं
किया गया ॥

कुचि वर्णन ॥

शङ्काभाव ॥

कवर्ग कवित्त ॥ १३ ॥

कुमकुम कँदलइ केरि कलई कनक कलश कि कामदेव कञ्ज
 ११ १० १२ १३ १४ १६ १९ १७ १८ १९
 कुचि कर्कसी । कैधौं कामरिपु कैधौं कन्दुक कलित कैधौं कान्ति
 १६ २१ २० २४ २३
 के कँगूरनहिं केरि कान्ति कलसी ॥ कुविधिक कृतिक कन्दर्प के
 २६ २२ २६ २७ २९ २८ ३२ ३१
 नगारे कैधौं कैधौं कक्रमरडल कुरुखि कर वटभी । ललन कनिष्ठि-
 ३० ३३ ३४ ३६ ३६ ३७ ३८
 क कनिष्ठिक कि कुम्भ कम्बु कैधौं कामिनी की काय कौनकर
 ३९
 कृत्तसी ॥ इति ॥

अथ दूती प्रतिनायक वचनम् ॥

प्रसंग ॥ १३ ॥ किसी सुन्दरी के कुचिकी शोभा
देखकर नायक को शंका होने से नायका प्रति प्रश्न
करै है कि ॥

टी० ॥ १३ ॥ कँदला कियेहुये कुमकुमा (हैं या) सोने के कलशां पर कुंदन
 ७ ८ ९ १० ११ १२
 की कलई है अथवा मन्मथ (व) कमल (या) कठोर स्तन हैं ॥ अथवा (लुई)
 १३ १४ १६ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२
 शिवमूर्ति व सुन्दर गेदै या शोभाके शिखरोंकी सुन्दर सी छटा हैं ॥ अथवा
 २३ २४ २६ २६ २७ २८
 कामदेव के औंघे (व उलटाये धरेहुये) नगाड़े व ब्रह्माकी उलटी (व उलटीकवच
 ३

से औंधाई धरी हुई) तोड़ी है अथवा छोटी छोटी प्यारी (सुन्दर) कलशी (अथवा चिकने चिकने) शंख या सुकुमारी के उरःस्थल पर किसके हाथ की कारीगरी है ॥ इति ॥

अथ सखि श्रृंगार वसनरंग वर्णन ॥

रंगानुमान संख्या ॥२१॥

स्ववर्ग कवित्त ॥१४॥

खासी स्वामी स्वस खासी स्त्रीमखापी खापरई खासी खासईक
खीरी खारुआई खाकीसी । खीरई खजूरी खीलदार खपरील खुली
खुशरंग खानेदार खूबै खड़ियारीसी ॥ खंती खामसूई खंजनी
खफीफ खजलई खैरिया खंधारी खारी ख्युरी खरबूजीसी । खुसहाल
ललना खुशीन निधि खींच खींच खिलतै खदीं खरीसी खालिक
खयालीसी ॥ इति ॥

प्रसंग ॥ १४ ॥ इस कवित्तमें निम्न लिखित स्ववर्गी
रंगोंकी पोशाकें पहिरकर श्रीकृष्णचन्द्र भगवानके वि-
वाह में भीष्मक नगर की सलोनी सखियां जिस प्रकार
से सुहायमान होतीभई तिनके कपड़ोंके केवल रंगरूप
वर्णन हैं ॥ कोई ऐसा शब्द नहीं है जोकि समझमें न
आयसकै इसीहेतु इसका टीका नहीं कियागयाहै ॥ इति ॥

नायकानां श्रृंगार वर्णन ॥

रंगानुमान संख्या ॥ २३ ॥

स्ववर्ग कवित्त ॥ १५ ॥

खारुई खुलासा खारुई खजूरिया खरेति खासे खामसूई खुले
खापरी खंधारिया । खीली खोपरई खाकी खिनी, खर्वुजी खरीलि
स्त्रीमखापी खैरुआह खाली स्वस खामिया ॥ खंजनी खसीस खीरी

खंती खीरिया खमीरि खाकमीऊ खाजलई खुर्मई खमीरिया । खुरी
हाल खिल्लैं खींच खींच कै खदे ललन खारदार खँड़े खनकावैं
खल मारिया ॥ इति ॥

अथ संधिविवर्ण ॥ खरा + अग्रे + इति ॥ खरेति ॥ १ ॥

प्रसंग ॥ १५ ॥ इस कवित्त में श्रीकृष्णचन्द्र महा-
राजके बराती व योधान की अनेक खयगी रंगकी छ-
वीली पोशाक वर्णनहै इसीकारण से सरलता जानकर
इसका अर्थ नहीं किया ॥ इति ॥

नायकानां शृंगार वर्णन ॥

अथ रंगानुमान संख्या ॥ २४ ॥

गवर्ग कवित्त ॥ १६ ॥

गुंजई गुलावी गुलखैरा गुठ्महेंदियादि गुले सपतालू गुल्दु
पैरिया गिरंटई । ग्युँहाँ गिरुअरे गुलेचीनियाँ गुभीले गुल
छब्बी गंदुमी गुलेहजारी गुलतुरई ॥ गुलेनार गुल्फरंगि गंधकि
गोलई गूढ़ गुलावासि गोभै गाजरी गहीरगंगई । गन्नई गँभीर
रंग गेंदई गसेसु गात ललनगुपाल गुण गावैं गति गर्भई ॥ इति ॥
अथ संधिप्रकरण गुलमहेंदिया+अग्रे+आदि = गुलमहेंदियादि ॥१॥

प्रसंग ॥ १६ ॥ इस कवित्त में सखियों के गकार
रूपी रंगोंकी रंगबिरंगी पोशाकों का वर्णन है कोई गू-
ढार्थ न होनेसे टीका नहीं किया ॥ इति ॥

नायका छवि वर्णन ॥

गवर्ग कवित्त जलहरण दंडक ॥ १७ ॥

गोरेगोरे गालुरी गुराई गहरी गँभीर गोलगोल गालन

^७ गुलाब ^९ गुण ^८ गति ^{१०} गइ । ^{११} गौरी ^{१२} गुलबदन ^{१३} गजब ^{१४} गजगामिनीसी
^{१६} गहे ^{१८} गरबीली ^{१६} गुनगूढ़ ^{१७} ग्रामनी ^{१९} गुनइ ॥ ^{२०} गोलमोल ^{२१} गोरोदर ^{२२} गुल
^{२३} गुल ^{२४} गादीगुल ^{२६} गुलूबंद ^{२९} गुंजिका ^{२४} गरे ^{२७} गहिर ^{२६} गुहरइ । ^{२६} ललना
^{३२} गिरंटपट ^{२९} गात ^{३०} गुलेजारिया ^{३१} से ^{३३} गहिगहे ^{३४} गखेदार ^{३६} गोठ ^{३६} गुठ ^{३६} गज-
रइ ॥ इति ॥

अथ संधिप्रकरण ॥ गोरा+अब्रे+उदर = गोरोदर ॥ १ ॥

सखिप्रति हखिचनम् ॥

प्रसंग ॥ १७ ॥ एक सुकुमारी सखीको देख श्रीप्रभु-
एक हूतीसे उसकी प्रशंसा करते भये कि वह ॥

टी ॥ १७ ॥ (कैसी सुन्दर सखी है कि जिसके) ^१ उज्ज्वल ^२ उज्ज्वल ^३ शरीरपर ^४ अधिकसे
अधिक ^५ सुन्दरता ^६ गुलाई ^७ लियेहुये ^८ कपोलोंकी ^९ ललितआईपर ^{१०} गुलाब ^{११} के ^{१२} फूलकी ^{१३} रंगत ^{१४} व
शोभा ^{१५} लज्जित ^{१६} होतीहै ॥ (फिर वो कैसीहै) ^{१७} सुन्दरी (कि जिसका) ^{१८} फूलोंसा ^{१९} कोमलतन
(और) ^{२०} अनूठी ^{२१} हस्तांसी ^{२२} चालढाल ^{२३} धारण ^{२४} कियेहुये (और) ^{२५} समस्त ^{२६} गुणोंके ^{२७} समूह
स ^{२८} भरीहुई ^{२९} सोहावती ^{३०} हुई ॥ (और जिसका) ^{३१} सुडौल ^{३२} गौरवर्ण ^{३३} पेट (मानोगु-
लागुली) ^{३४} कोमल ^{३५} पुष्पोंकी ^{३६} गद्दी (अहजिसके) ^{३७} गलेमें ^{३८} गुंज (व) ^{३९} गुलूबन्द ^{४०} नामक
गहना ^{४१} अमोलिक ^{४२} मंतिरोंका (सोहायमान) ॥ (फिर वो कैसीहै कि जिस) ^{४३} स्त्री
के ^{४४} शरीरमें ^{४५} अतिकार ^{४६} चटकाले ^{४७} रंगके ^{४८} रेशमीवस्त्र (जिनमें) ^{४९} कितादार ^{५०} गोटा ^{५१} गजरा
टँकेहुये (सोहायमान है) ॥ इति ॥

नायकानां अवि वर्णन ॥

धवर्ग कवित्त जलहरण दंडक ॥ १८ ॥

^१ योग्योर ^२ धांभो ^३ विरील ^४ धुंननील ^५ धनि ^६ घुटना ^७ घुमारदार ^८ वि-

रित घुमाउघन । घुनुकघुनुक घुँघुरु घमोरैँ घंठिक्षुद्र घनन घनन
 घननाना घननाना नन ॥ घुँघुटा घिगान घनघोरि घुमड़न घर घुमि
 घुँघुवारी घाँतैँ घरनीअजगरन । ललन प्रिया घमण्डघाती
 घन्नानघटीं घोठनु घुटे घँमील घँमसन घेतलन ॥ इति ॥

टी० ॥ १८ ॥ (कैसी सखियाँ सुन्दर श्रृंगारसजे हैं कि) बड़ेबड़े लहँगा
 घुँघुचीके रंगसरीखे पहिरेहुये (अरु) बहुतसी घेरदार अत्यंत फैलाव के पैजामे
 (वइजारैँ पहिरेहुये) ॥ (और बहुतोंकी कमरमें) करधनी (जिनके) घुँघुरुबों
 (बबोरया बटानोंकी) घुनघुनाहट निम्न लिखित शब्दों सी यथा घननघनन
 घननाना घननाना नन होरहीहै ॥ (और बहुतों के शशिमुखपर) घुँघुट की
 अतिशय भाईं (मानों) श्यामताका घर (तिसमें) लहिराती हुई टेढ़ीबेंड़ी (घुँघुर-
 वारी) नागिनीसी अलकें चोट करैँ हैं ॥ (और फेर कैसी खीहैं) भोलीभाली
 मनोहर अभिमानरहित सावधानचित्त (कायम मित्राज) जिलाकरेभये महा
 चिमित्कारी उपानह (पहिरेहुये सोहावती हुई) ॥ इति ॥

देव सवारीन के चवर्गी पक्षी नामानि वर्णन ॥

अथ खगानुमान संख्या ॥ १५ ॥

चवर्ग सवैया ॥ १६ ॥

चकवा चकई चिरुटा चिई चढ़ चाल चकोरन चाँगलिया ।
 चिमगादर चिकुट चर्य्य चढ़े चअना चुउँ चूँ चपला चिरिया ॥
 चँदरा चिनियाँ चिनकौ चिकुड़ी चखवैँ चट चबुक चिर्भिलिया ।
 चउवाहु चितौन चुभी ललनैँ चहुँदेव चसैँ चक चातुरियाँ ॥ इति ॥

प्रसंग ॥ १९ ॥ श्रीमाधो मुकुन्द मधुसूदन बनरे के विवाह की शोभा देखनेके तई देवता अपने २ बाहनोंपर जो इस सवैया के तीन चरणों में देवतों की सवारी के अनेक चवर्गी पक्षियों के नाम मुद्रित हैं तिनपर सवार होकर नृप भीष्मक नगर को आवते भये इसी से इस सवैयाके त्रिपादका अर्थ नहीं किया अग्रे चतुर्थ पदका भाव लिखते हैं ॥

टी० ॥ १९ ॥ (देवगण विभन लिखित पक्षियोंपै बैठेदुये) कृष्णचन्द्रभगवान् की (कृष्णानिधि) चिनवन प्यारी रीतिसे चुभीहुईका चतुर (सपानी) देवसैन्या रसग्रहण कर चक्रित होतीभई (वकित होमीभई) ॥ इति ॥

नायकानां शृंगार छटा वर्णन ॥

अथ रंगानुमान संख्या ॥१३॥

चवर्गकवित्त ॥२०॥

चुन्नई चकोतरई चम्पई चमंकवत छूनई चुनर चारु चंदनी
 चुभीलियाँ । चीकने चनाकी चीर चिंचिनीक चोरैं चित चन्द्र
 चाँदनी चमेलि चादरैं चुभीलियाँ ॥ चाँवली चिरायतई चूरिया
 चमाकेदार चारखनू चाकल चौतनियाँ चहीलियाँ । चम्बुली
 चिनावी चुस्त चोली चटकीलि चुभी ललना चतुर चोरैं चित
 चरबीलियाँ ॥ इति ॥

प्रसंग ॥ २० ॥ (श्रीकृष्णचन्द्र भगवान्की ससुराली सलोनी सुकुमार सखियों की शोभा वर्णन करते हैं कोई कोई तो) ॥

टी० ॥ २० ॥ चुन्नी सरीखे रंगकी (व) चकोतरा के रंगसी (व) आवदार
 चंपई रंगकी (व) चूनासे रंगकी (व) चन्दनके रंगसी सुन्दर मनचुभतीहुई चूनरै
 (धारण कियेहुये और कोई कोई) ॥ साफ चनाके रंग सराखे (व) इमली के
 रंगसे मनहर लेनेवाले (व) चमेली के रंगसे चन्द्रचांदनी सरीखे शोभायमान
 रूपसे (और कोई) रंग चुचुआतीहुई चादरै (पहिरेहुये) ॥ (और कोई कोई)
 चावलकेरंगसे (व) चिगायतीके रंग सरीखे छथादार चूड़िया नामक वस्त्र (ग्रहण
 किये और कोई) चारखाना की धरदार सोहावने सलुआ अथवा भूलानामक
 फनोई (सजेहुये और कोई कोई के गानमें) चंचुल देश (व) चेनादेश की रंगवि-
 रंगी तंग अंगियां कसीहुई चंचल सयानी सखियां चित्तोंको चोरावती भई ॥ इति ॥

कुलटा नायक ॥

छवर्ग सवैया ॥ २१ ॥

छहरी छिति पै तलनै पनकी छवि छाजतियाँ छहरांय छला
 छइ । छनकैरि छुये छहँछोर छदीलिहि छर्लछटीलि छतीसि
 छकागइ ॥ छमकैरि छमाक्यहिदार छड़ाछड़ छागतियाँ हूँ छ-
 जीलि छलापइ । छपकाहु छलैँ छनकीछ छला छन छैल छ-
 मंकिछमंकि छटा नइ ॥ इति ॥

सखिप्रति हरिवचनम् ॥

प्रसंग ॥ २१ ॥ एक नवयौवन वाली सखी कि जिस
 की चाहनामें महाराज का मन रमित होरहाथा उसके

रूपकी प्रशंसा किसी एक दूती से करते हुये कैसी वो
सलोनी नारि है कि जिसके शरीरपर ॥

टी० ॥ २१ ॥ ल^१ङ्क^२पन की सोहावती^३हुई मभा (और) छ^४लों से भरी^५हुई सो-
हायमान पृथ्वीमंडल में विख्यात । (फिर वो चौक^६नी व होशियार कैसी है कि जिस
के) छा^७ंहके छोरको छूतेही भागजाती है (याने अपनी छा^८ंह किसी को नहीं दबा-
वने देती है) लाखों में एकछटी होशियार दुबरी पतरी शरीर की शोभासे मनको
छ^९कितकर जाती भई ॥ (और जिसके पैरोंमें) आवाजदार छड़ा नामक आभूषण
(व) सुहावनी छा^{१०}गलैं नामक आभरण मनको छलनेवाली सोहायमान ॥ (और
हाथों में आभूषण) छा^{११}प छन्न आदि (व अँगुलियों में) बाजने छल्ले मन हरेलेते है
(इसभांति) छवीली की शोभा नई भांतिकर प्रकाश होरही है ॥ इति ॥

नायकानां छवि वर्णन ॥

अथ रंगानुमान संख्या ॥ १० ॥

॥ जवर्ग कवित्त ॥ २२ ॥

जो^१गिया जचील जा^२फरानि जा^३मुनी जमंक जा^४लई जँभीरिया
जँगा^५लि जा^६मदानियाँ । जु^७गुई जु^८हान जरबखितया जु^९लूसजोते
जक^{१०}सी जु^{११}लूसी जाली जौ^{१२}जई जु^{१३}गानियाँ ॥ जू^{१४}फई जमाके जोर
जौ^{१५}कई जमीनी जो^{१६}ट जागी जो^{१७}मती जहूर ललना जवानियाँ ।
जो^{१८}ति की जु^{१९}न्हाई जानों जा^{२०}मिनीश जग्मगात जौ^{२१}वन जमीली
जू^{२२}थ जु^{२३}वती जु^{२४}रानियाँ ॥ इति ॥

प्रसंग ॥ २२ ॥ श्रीरामचन्द्र महाराज के विवाह में जो जनकपुर की सुकुमारियां जमाहुई रहीं तिनकी शृंगार शोभा वर्णन कैसेकैसे बसन आभरणोंसे सुहावती भई कोई कोई तो ॥

टी० ॥ २२ ॥ जचेहुये^१ जोगियारंग (कोई)^२ जाफ़रानी (व)^३ जामुन के रंग सरीखे^४ बैजनी बसन पहिरेहुये (कोई)^५ जालीके^६ जँधीरी रंग सरीखे (कोई)^७ नीने जंगाली जामदानी बसनके ॥ (कोईके^८ जुगुनू) पटविजना सरीखे चमकदार दिखाई^९ परै (व) जरी जरवरुत कामके शोभाभरे हुये (कोई)^{१०} जालीपरके^{११} बनेचुने (कोई)^{१२} जौजई रंगके (कोई अमोल)^{१३} पुरानी चालके ॥ (कोई)^{१४} जूफई रंगके पट पहिरेहुये (कोई)^{१५} गाड़े जोंकई रंगके (कोईके)^{१६} मटीले रंगके जोड़े मदसे भरीहुई शोभा (नाजो अदा) नरुण स्त्रियां ॥ (जिनकी) छविकी फवन मानों चन्द्रमा के समान सोहायमान रूप भरी (यहिभांति) वृन्द अबलानके जमाहोतेभये ॥ इति ॥

शठ नायक ॥

जवर्ग कवित्त ॥ २३ ॥

जुलमी जनावै^१ जोर जागती कलाहि^२ जासु^३ ज्वानियाँ जमीलो^४ जोम ललना जशोदाको । जासन जुहारबोहु जानिये जुलूम^५ जीय जोरे जो जमात जोहै^६ जूवतीनु जुवा को ॥ जौवनजुलूसी जोय जाइये जमून जनि जोहि जौन जायगो जो जादवेश जराको । जौवन जवालक जमकैगो जमैसो जब जोरलेगो जुगतहि जुदवैगो जुटाको ॥ इति ॥

सखि प्रति सखि वचनम् ॥

प्रसङ्ग ॥ २३ ॥ एकसखी अपनी परमसहेली से नन्दललनकी बुराई करती भई कि ॥

टी० ॥ २३ ॥ यशोदाजी का कुँवर ज्वानीके मदसे भराहुआ जिसकी आज
कल) प्रारब्धकला जोरहै अतीकरनेवाला जुलुम जोते फिरहै ॥ उससे दंडवत्
प्रणाम करना भी (मानो) मनको विपत्ति विसावनाहै जोकि ग्वालसमाज संग
लिये तरुण स्त्रियों को ताकता फिरहै ॥ (हे) सुरूपवती नारि (तू) यमुनाको न
जैसे जोबो मोहन (तुझे) जराभी देख लेयगो ॥ (तौ) दूसरोंकारूप विगारनेवाला
यमराज के समान घेर लेयगो (और) यदि अपनाप्रयोजन काढ़लेयगो (फिर
पीछेसे) प्रीति छोड़देयगो (याने जोड़ा बिछुराई देयगो) ॥ इति ॥

निर्गुणब्रह्म भगवत्प्रधानता वर्णन ॥

जवर्गकवित्त २४ ॥

जुलुम जवालकौ जवालीजूथ जंगजित जतन जतनमय जुझी
जंत्र जरमाँ । जग्मग जितेन्द्रिजशीजोहेना जुहात जग ललन
जुलूस जोति जोतिराज नरमाँ ॥ जापनेश जोगियानु जीवनेशु
जादोपति जापत जहान जन जननि जठरमाँ । जीवटजवर जर-
दार जोरावर नर जांचो जौनजौन जिये जानौ जनगरमाँ ॥ इति ॥

टी० ॥ २४ ॥ (वो प्रभु सर्व शक्तिमानहै जो) अभिमान नाशक समरमें दुष्ट
समूहका जीतनेवाला (और) चतुराई (व) मंत्ररूपी धनमें हरएक विधिसे व्याप्त ॥
तेजस्वी विषय रहित कीर्तवान (कि जिस सरीखे) वैभवका छोटा व थोड़ा चि-

२७ १८ १९ २० २१ २२
 पितृकार भी (कोई) देवता व जगत के मनुष्य में ढूंढने से नहीं दिखलाई देता है ॥
 (फेर मभुसैसा है कि) जपौं कास्वामी योगधारियों का जीवनधन यदुव्रंशियों का
 २३ २४ २५ २६
 रक्षक (जिसका कि) संसारी मनुष्य माता के गर्भनिवास में (अत्यन्त खेदपाय)
 २७ २८ २९ ३०
 स्मरण करते हैं ॥ दृढ़ हिम्मतवाला ऐश्वर्यवान पराक्रमी (ऐसा जो) परमपुरुष
 ३१ ३२ ३३ ३४ ३५
 (उसको) जाननेवालोंमें जिसजिसने स्मरणक्रिया है (उन्हीं पुरुषों को) जीवित
 ३६ ३७ ३८ ३९
 जानना चाहिये ॥ इति ॥

मध्यानायका ॥

भ्रवर्गकवित्त २५ ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
 भांभरी भरोखे भुकि भूमभूम भांकिभांकि भूमक भकानी
 ८ ९ १० ११ १२ १३ १४
 शी भपट भिभकीलीसी । भीनिही भकोरनी सुभीनोही भगा
 १५ १६ १७ १८ १९ २०
 भमंके भुलनी भमाकेदार भिलिमली भकीलीसी ॥ भांभभनकार
 २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९
 भारि भनक भकोरी भम भोरती भुमाय भोंक भोरनी भपीली
 ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८
 सी । भुकतीभुकाती भट्ट भांकिही भकाय भक भपकै न भांकी
 ३९
 भरिललनाभरीलीसी ॥ इति ॥

दूतीप्रति नायकवचन ॥

१ २ ३ ४ ५
 टी० ॥ २५ ॥ (एकसखी) भँभरी के छिद्रों से भुककर मस्त है है देखिदंखि
 ६ ७ ८ ९ १० ११
 जलदी से सकुचाती हुई छबिकीरमक देखावती भई । हलकीसी ओढ़नी (व)
 १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९
 सुन्दर सोफियाना सलूका (और) टिमाकदार सुन्दर बनीचुनी अंगिया पहिरे ॥
 २० २१ २२ २३ २४
 (और पगोंमें) शब्द करती हुई भांभांके शब्दकी भकारन (हृदयको) साँघ्र भ-

२६ २६ २७ २८ २९ ३०
 कभीरती (व) मोहित करती (और) फहरान चूनी से लसित । शीघ्रही भुँक
 ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८
 भुँक एकबार सुन्दर शोभा दिखाय (वो) पुत्रवती फिर न देखाती भई ॥ इति ॥

धीरानायका ॥

टवर्गकवित्त २६ ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११
 टेढ़नुटिदाई हूरी टूटती टिदाईसन टूटीजो टिमांकु टांकसों टकै न
 १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२
 टोभिये । टांकुनी टटोल टेंकटेंक टेव टोली टंचु टोना साहिया टकोर
 २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३
 टूमै टिकु टेमिये ॥ टांठैगीटांठेही टीपुटीपु टीकती न टपु टावरी न टांचु
 ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४
 वीरिटोंकन टटोलिये । टकुटकु टोटा टारूटोलाहू टुकोनों टीकटोहुटुक
 ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५

नंदललनहिं टंटा टारिये ॥ इति ॥

साखिप्रतिसखिवचनम् ॥

प्रसङ्ग ॥ २६ ॥ एकसखी अपनी मानवती सहेली
 से जिसकी पतिसे लड़ाई होगई थी उसको शिक्षा देती
 भई कि हे सखि देख कहीं ॥

टी० ॥ २६ ॥ खोंटोंकी खोंटाई कहीं क्रोध करने से जाती है टूटीहुई जोके
 (प्रीतिहै सो) मानरूपी टांके से नहीं सीं सहेहै (नमानैतौ) सींदेखु । (औरजोतू)
 टोनासाही कहिये जो बेदाग निश्चलकी ठसकरकरवा चाहती हो (तो) इससमय
 चित्त स्थिरकरु (फेरि) धीरे धीरे समूह शुभ प्रकृतियोंको ग्रहण कर (जिससे कि
 मनकी फटीहुई प्रीति टेंकजायसो) सूजी हूंढनी चाहिये ॥ (बयोंकि अपनी प्रीति
 अपने आपही) मजबूत करने से मजबूत होयगी लिखरखु लिखरखु में तुभसे
 कहती हूं भूल मत (हे) प्यारी लड़कपनको न ग्रहणकरु (मेरी) शिक्षापर ध्यान

३४ ३५ ३६ ३७
 धरु देख देख प्रीतिरूपी हानी को दूरकरु (अरुफिरतू अपने) मोहलेको भी अं-
 ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४
 गुरी नचानेवाला समझ तनक ईश्वरका स्मरण करु इस लड़ाई पर धूरडारु
 (दूरकर) इति ॥

अधीरानायका ॥

उवर्गकवित्त २७ ॥

१ २ ४ ३ ६ ७
 ठालेही ठूलेहीमांभ ठूंठीही ठिकावै ठप ठगईठगौनी ठानो ठी-
 ८ ९ १२ १३ १४ १५ १६
 करा ठाऊंगी । ठगनी ठगोरी ठाहे ठीकती ठगैगी ठंठ ठांकठांक ठो-
 ११ १८ १७ १९ २० २१ २२ २५ २३ २४
 ली ठीक ठांकरी ठिकाऊंगी ॥ ठाकुरी ठिकावै ठुकरावै ठावे ठाली ठठ
 २६ २७ २८ २९ ३१ ३० ३५ ३२ ३४
 ठाँठरीठठैत ठड़ीठौरै ठुनकाऊंगी । ठानिये ठठोली ठहरायजो लल-
 ३३ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१
 न ठीक ठकुरानी ठाकुरसौं ठेंग ना ठगाऊंगी ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ २७ ॥ एकदूती किसी सखीका फजीता क-
 रनेको उसके भवन में आय कुछ कहती भई उसका क-
 थन सुन क्रोधित कै वो बोलती भई कि अरी प्रपंचिनि
 तू मुझे ॥

दूती प्रतिसखिवचनम् ॥

टी० ॥ २७ ॥ बिना बातही में वृथा दोष लगावै है फरेबों से छलनेवाली (जो
 ६ ७ ८ ९
 मुझसे) प्रपंच फैलावैगी (तो) ईंट (पथरा) भुरायमारुंगी । (अरी) बदचलनी फ-
 १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७
 रेविनि नारि कुचाल फैलावती है भींकती फिरैगी मारे (लातोंकी) ठाकरों से
 १८ १९ २० २१ २२ २३ २४
 सीधी करदेऊंगी ॥ ठकुराइत दिखावै है पैरोंसे पृथ्वी खोदे डारै है भूँठमूठका जाल
 २५ २६ २७ २८ २९
 फैलावै है ये भांखर सरीखा शरीर लिये खड़ी है सो इसीजगह तोरामरोमडा-

रौंगी (मसककै धरदेवैंगी) । (उससे) हँसीकर जो कोई बिल्कुल नादानहो (भैतो)
 ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१
 श्यामा श्यामकी शपथ खाती हूँ (मेरातो) सींगभी (तुझसे) नहीं उगावनेवालाहै
 (जोतू कहतीहो कि यह कुछ मुझे देदिवायकै दबजाये सो ऐसा वचनाव मुझसे कभी
 न होयगा) इति ॥

दूनीनिन्दा ॥

द्वर्गकवित्त २८ ॥

उहकै डकैती डींग डोलै डौलडाल डटे डोंगपनो डारूरी डिगाये
 ११ १४ १३ १२ १६ १६ १७
 हू डिगैयेना । डोमनी डिवोनी डील डांकिनी डरोनीडर डोरिहि
 १८ १९ २० २६ २१ २६ २४ २२ २३
 डराय डु तजायगी डुवैयेना ॥ डिंभैगीवो डंभन डटीली डंगरिन्न डंभ
 २८ २७ २९ ३० ३२ ३१
 डुकीडुकीना डगरीडगरी डसैयेना । डिगैतौ डाक़ोरजीपै ललना
 ३३ ३४ ३६ ३६ ३७
 डिगाउरीजो डोंगिहू डुवायनाहिं डिगरी डुँडैयेना ॥ इति ॥

साखिप्रतिसाखिवचनम् ॥

प्रसङ्ग ॥ २८ ॥ एकदूती किसी सुकुमार सलोनी
 यौवनाङ्गना को देखि उससे स्नेहकर अपना प्रयोजन
 निकालने के वास्ते रोज़ उसके घर जानेलगी पश्चात्
 किंचित् काल के कहीं दूसरी दूतिका ने भी उसके रूप
 की सुन्दरताई देखपाई और उससे मिलनेकी युक्ती फै-
 लावती भई भेदलगावने पर उसे मालूम हुआ कि इस
 सुरूपवती से तो किसी दूसरी दूती से मित्रताई होर-
 ही है अतएव उसके निकलावने के वास्ते उपाय कर
 सुन्दरी समीप जाय ये कहती भई कि यह प्रपंचिनि जो

कि तेरेपास आया करती है हे प्यारी तू इसे नहीं जानती है यह जो तुझसे ॥

टी० ॥ २८ ॥ बड़ी बड़ी बातें माराकरती है (सो अपनी) घात लगाये फिर है अरीप्यारी लड़कपन मतकरबैठिये इसके चलायेपर चलनजइये । शरीर की खवारीकरायदेनेवाली (ये) म्लेच्छिनी कुच्छिपिनी (जिसके देखने से) शंका भी शंकितहोय है दूसरेसे भीति पुरवाय आपअलगहोजायगी (इससे अपने कुल की मर्यादा में) कलंकमतलगाइये ॥ वह पर्वतकेसमान फरेबों से भरीहुई अनेक झूठी बातों को बनावेगी गली गली (घरघर) में बखानीभई है उसकेकब्जे में मत अइये । (और जो तेरा मन किसी पर चलायमान होई रहा होय तौ सुतु जो) मन चलायमान करै तौ प्यारी श्रीकृष्ण महाराजपै मोहितहो याने श्रीकृष्ण जी से मिल (तौ तेरी) नैया पार होजाय तथा आवागमन से छूटजाय मनोकामना को प्राप्त होजाय याने डिगरी फतेयाव होजाय) ॥ इति ॥

प्रौढ़ा धीरानायका ॥

द्वर्गकवित्त २६ ॥

ढीलकै ढंगीले ढंग ढोटात्रो ढपोरशंख ढाँकढोंक ढाई ढोठ ढिठई
 ढपारकै । ढाँढतो ढपोरै ढुलढावतो ढवीलो ढव ढीलेही ढवैगो ढवि
 ढावहि ढुँढारकै ॥ ढोरिये ढिँढोरो नाहिं ढोंगपनै ढारदुर ढाढस ढ-
 ढाई ढोंग ढोंगिया ढिँढारकै । ढाँकेहि ढँकैहै ढोल ढीलरो ढँगी लल-
 नि ढाँढीहँढँढी न ढंग ढुरको ढवारकै ॥ इति ॥

सखिप्रति सखिवचनम् ॥

प्रसङ्ग ॥ २६ ॥ एकसखी अपनी नगर निवासि-
नि मिलापिनिसे कृष्ण महाराज का उरहना दे कहती
भई कि ॥

टी० ॥ २९ ॥ नन्दके ललन^१ नासमुझ^२ नादानने सुन्दर^३ चालचलनों को छों-
६ ६ ७ ८ ९ १०
डकर कुचलनों को धारणकर^{११} नटखटने अपनी^{१२}बँधीहुई^{१३} मर्यादाको विगाड़^{१४}
रखा है । अपन मतलबी दाँव घात लगाये (युवतिन के पिछाड़ी लगा) अनु-
१५ १६ १७ १८
चित करता चारोंतरफफिरै है (सो हेसखी अबमुझे कोई) मेलका मकान हूँडकर
१९ २०
(गोकुल का बास) छोड़तेही बनेगा ॥ (इतनी बात अपनी सहेलीसे कहतेतो कह-
गई परन्तु फेर कृष्णके भयसे शंकित है उससे यह उपदेशिक मार्यना करती भई
२१ २२ २३ २४ २५
कि कहीं) मूर्खताकी ओर डुलकर (इसबातकी कहीं) मुनादी न पीटदीजिये
२६ २७
(याने किसी से कहना मती क्योंकि आजकल में) छत्र रचनेवारे नटखटना-
२८ २९ ३०
गरनटके मारे सावधानीकरके रहितहोरहीहूँ याने चित्तसावधान नहीं है (क्योंकि
३१ ३२ ३३ ३४ ३५
अपना) फटा ढोल मड़ानेही से ठीक बोलताहै याने अपनी जाती हुई लाजपर
३६ ३७
अपने आपही परदा डारना उचित होताहै प्यारी में बहुतही हूँडहारी (परन्तु
३८ ३९ ४० ४१
कोई) सीजा मकान मिलने का नहीं लगा है (इसीसे चुपचाप बैठी हूँ) इति ॥

नायकानां शृंगार वर्णन अथरंगानुमान संख्या २१ ॥

तवर्गकवित्त ३० ॥

तीखेतीखे^१ ताखी^२ तीत्रतूसिया^३ तमाली^४ तिली^५ तामबूलिया^६ तारी-
९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६
फि तोंबई^{१७} तलीसिया । तोरी^{१८} तामखूई^{१९} तूनी^{२०} तीतुरी^{२१} तयूसी^{२२} तूली
तोफा^{२३} तिलसमाती^{२४} तामुबादलाई^{२५} तूतिया ॥ तांजरीक तेजपाति तो

तोसकी ललन तेज तीतुली तिलोरिपखी तामड़ई तेलिया । ताजे
 ताजे तेकरा तमंकते तरंग तूल तेजसी तपेस्वी तन तोपे तरुणी
 तिया ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ३० ॥ श्री सौभाग्यदशरथ नृपनन्दन छेश-
 कन्दन रघुनन्दन के विवाह समाजमें इसप्रकार सोरहु
 श्रृंगार बत्तीसो आभूषण रत्नकार सखि सुकुमार त्रि-
 दार सँभार सुधार पुरनारि आवती भई कोईकोई तो ॥

टीका ३० ॥ तेज तेज ताखी रंगके (व) गहिरें तूसी रंगके (व) घोर स्याह रंगके
 (व) तिल सरीखे रंगके (व) पानके रंग सरीखे (व) उत्तम ताँबी के रंग सरीखे
 (व) तलीसके रंग सरीखे ॥ (व) तोरई के रंग सरीखे (व) तमाकू के रंग के
 (व) तुन रंगसे (व) तीतुर रंग सरीखे (व) मोर या तयूसी रंगके (व) तूलीवसन
 (व) सुन्दर बनेचुने जरीतास बादलाई कामदार तूतिया रंगके ॥ (व) ताँबे रंग
 के समान (व) तेजपात के रंग सदृश (व) तोसक सरीखी छपावट के प्यारे (व)
 बढिया तीतुली के रंग सरीखे (व) तिलोरी पंख सरीखे (व) तामड़ई रंग के (व)
 तेन के रंग से ॥ नई तरताजी बनीहुई पोशाकें शोभा की अत्यन्त फवन से भरी
 सुरूपवती मतामती युवा अवस्था में प्राप्त अबजा अंगन पै धारण किये हुये सो-
 हायमान होती भई ॥ इति ॥

तुरंगरंग वर्णन ॥

अथ रंग व जाति अनुमान संख्या ॥ २३ ॥

तवर्गकवित्त ॥ ३१ ॥

तांबई तयूसी तूसी ताखी तेलिया तराल तोतई तमाली तूनी

तीतुरी तिलंगहैं । तोफई ललन तीत्र तोंवई तिलकखा ताजी तल्ल-
 रा तमीस तोपे तुन्दित तरंगहैं ॥ तीतुली तँजेवी तूलि तामड़ा त-
 रैल तुकी तेंडई तुपकी तर वारी तनेतंगहैं । तकत तमकत तड़कत
 तुरकत तुनकत तनकत तरकत तुरंगहैं ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ३१ ॥ श्रीकृष्ण महाराज के विवाहमें जौ-
 न आयेहुए थे तिन बरातियों की सवारी के घोड़े जो
 कि इस कवित्त के तीन चरणों में रंग वर्णन हैं इन इन
 रंगों के घोड़े सुन्दर जीन तंगादि साजों से सजेहुए
 सुहायमान होते भये इसी कारणसे तीन पादों का अर्थ
 नहीं किया (अग्रे चतुर्थ पादका अर्थ लिखते हैं कैसे
 घोड़े रहे) (कोई तो) चारोतरफ देखतेहुये (कोई)
 तेजचालसे दौड़ते हुए (कोई) उछालै भरते हुए (को-
 ई) बाग तोर (कोई) हींसने वाले (कोई) क्रोधी
 व रिसहे (कोई) जोमभरे लड़ने वाले (लड़ाका)
 घोड़े इस इस भाँति (सुहावते भये) ॥ इति ॥

विप्रलब्धानायका ॥

थवर्गकवित्त ॥ ३२ ॥

थीरी थिरु थीरी थिरु थाहत हूं थाह थम थानहिं थपायकै थि-

^{११} रौंगीहों ^{१२} थिरौंगीहों । ^{१३} थलक ^{१६} थुराउनाहिं ^{१४} थूनिहीं ^{१८} थपाकु ^{१७} थुआ ^{१६}
^{१९} थोक ^{२०} थापरा ^{२१} थमात ^{२२} थायही ^{२३} थपौंगीहों ॥ ^{२६} थिरकुल ^{२४} थारो ^{२६} थिर ^{२७} थोरहू
^{२८} नतू ^{२९} थपक ^{३१} थाथोही ^{३०} थपाको ^{३२} थाहू ^{३३} थँहूँ ^{३४} नाथुरौंगीहों । ^{३६} थूथूथू ^{३६} थुका-
^{३९} येहू ^{३७} थवैगी ^{३५} तौ ^{३८} थुरील ^{४०} नाहिं ^{४१} थानापती ^{४२} थांम ^{४३} थप ^{४४} ललनै ^{४४} थँलौं-
 गीहों ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ३२ ॥ (एकसखी अपने सनेही श्रीकृष्ण
 भगवान् से मिलनेको अत्यंत व्याकुल रही इतनेमें ए-
 क दूती जो कि उसे जानती थी आदती भई उस की
 बिडलताको देख उपदेश दै हिम्मत बाँधाय ये कहती
 भई कि प्यारी तू इतनी क्यों घबराई जाती है) ॥

सखिप्रति सखिवचनम् ॥

^१ टीका ॥ ^२ ३२ ॥ ^३ तनक ^४ सावधान ^५ हो ^६ धीरज ^७ बांध ^८ भैं ^९ खोज ^{१०} लगावती ^{११} हूँ ^{१२} ठहरना
^{१३} तेरे ^{१४} घरपै ^{१५} बोलायबैठार ^{१६} तब ^{१७} मानौंगी ^{१८} तब ^{१९} मानौंगी ॥ (^{२०} दर्शाहुईबातकी ^{२१} कुदर ^{२२} न
^{२३} कर ^{२४} याने ^{२५} किसीको) ^{२६} प्रगट ^{२७} न ^{२८} कर ^{२९} (जैसे) ^{३०} मिट्टी ^{३१} के ^{३२} ढेर ^{३३} के ^{३४} सहारे ^{३५} की ^{३६} लगाईहुई
^{३७} टेकनी ^{३८} व ^{३९} थुनीपर ^{४०} बड़ा ^{४१} छप्पर ^{४२} इस्थित ^{४३} होजाताहै (^{४४} उपाय ^{४५} ऐसीही ^{४६} वस्तु ^{४७} है) ^{४८} भैं ^{४९} भेद
^{५०} लगाय ^{५१} ही ^{५२} कर ^{५३} तब ^{५४} निचली ^{५५} है ^{५६} बैठौंगी ॥ (^{५७} और) ^{५८} तेरो ^{५९} (^{६०} जो) ^{६१} चंचल ^{६२} (^{६३} श्रीकृष्ण-
^{६४} मित्र) ^{६५} विराजमान ^{६६} हैं ^{६७} तू ^{६८} (^{६९} उन्हें) ^{७०} देखु ^{७१} थोरा ^{७२} न ^{७३} समझिये ^{७४} (^{७५} यानी ^{७६} उनका ^{७७} हर ^{७८} एक
^{७९} कामिनीपर ^{८०} मन ^{८१} चलायमान ^{८२} रहता ^{८३} है ^{८४} इसीसे ^{८५} भैं ^{८६} जाँन) ^{८७} बड़ाचतुर ^{८८} धेदी ^{८९} विदित ^{९०} है
^{९१} (^{९२} उसे) ^{९३} ढूँढती ^{९४} हूँ ^{९५} कोई ^{९६} यतनकरने ^{९७} से ^{९८} बैठ ^{९९} न ^{१००} रहूंगी ॥ ^{१०१} राम ^{१०२} राम ^{१०३} राम ^{१०४} (^{१०५} छी ^{१०६} छी
^{१०७} छी) ^{१०८} (^{१०९} हे) ^{११०} नादान ^{१११} फजीहतकरायेहू ^{११२} तो ^{११३} नहीं ^{११४} बनैगी ^{११५} (^{११६} इससे ^{११७} अपना) ^{११८} मन ^{११९} रोक

जुपकी है बैठ प्यारी मैं उपाय करनी हूँ (सिद्धिही होगी गड़हा खोदती
 पानी मरगया जो मरगया भरगया तो भरगया धीर्यरख) इति ॥

तुरङ्ग जाती व शोभावर्णन ॥

दवर्गकवित्त ॥ ३३ ॥

दुल^१दुल^२ दमीले^३ से दमीले^४ दामवार^५ दीर्घ^६ दादुरी^७ दिलावर^८ दवंग^९
 दुति^{१०} दामेहैं^{११} । दीनता^{१२} दुराते^{१३} दरशाते^{१४} दम^{१५} स्वन्दराज^{१६} दन्तिया^{१७} दुपाद^{१८}
 दपू^{१९} दामिनी^{२०} दवामें^{२१} हैं ॥ दुलरत^{२२} दुलराते^{२३} दौर^{२४} दुलकी^{२५} दुनाते^{२६} दन्द^{२७}
 दन्दते^{२८} दताते^{२९} दीसि^{३०} दिव्यतामें^{३१} हैं । दुमन^{३२} दवाँवै^{३३} दुवई^{३४} हूदहांवै^{३५}
 हग^{३६} दम^{३७} दमकावै^{३८} ललनता^{३९} दिखारमें^{४०} हैं ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ३३ ॥ (श्री अवध नरेश दशरथ महाराज धिराजके सुत मर्यादा पुरुषोत्तम अवतारी श्रीरामचन्द्र महाराज के विवाह में जौन जौन प्रकार के तुरंग आवते भये तिनका रंग रूप छल बल वर्णन कि को-ई तो) ॥

टीका ॥ ३३ ॥ दुलदुल नाथक घोड़े बड़े बड़े दमदार बड़े मोलके मशीले रंग
 के हिरमलार अत्यंत शोभाको प्राप्त हैं ॥ (कोई) स्वस्ती को दूर करतेहुये (चंचल)
 महा पराक्रमों को दिखाते हुये (कोई) युवा अवस्था को प्राप्त दो पैरों से खड़े
 होकर चपला की चंचलताको लज्जित करै हैं ॥ अपने स्वामियों का लाड़ जना-
 वतेहुये छिनमें दुलकी नामक चाल (व छिनमें) सर्पट चालको चल अनेक ऊ-
 धमों से ऊधम मचावते हुये सुन्दरता में सुहायमान होरहे हैं ॥ (कोई) पूंछों को

३१ दबकाये हुये शरीरसे ३२ रुष्टपुष्ट ३३ खिनमें नेत्रों को ३४ चमकावते ३५ फिरावतेहुये ३६ लड़कपन
 ३७ को प्रकाश करै हैं ॥ इति ॥

अधीरानायका ॥

धृष्टनायकसंवाद ॥

ध्वर्गकवित्त ॥ ३४ ॥

१ धांधली २ धरौगे ३ धाम ४ धाओ ५ धमकाओनाहिं ६ धांकरी ७ धुवैगी ८ धोख
 ९ धांधके १० धँधैयोना । ११ धायधाय १२ धरधर १३ धमकत १४ धमाधमै १५ धीमेहूधुरील
 १६ नतु १७ धानपान १८ ध्यैयोना ॥ १९ धूंहधां २० धमैगी २१ धूमधामधरधूमसोंह २२ धूर-
 २३ ता २४ धकौगे २५ धूरि २६ धूंधरी २७ धुरैयोना । २८ ध्यानीहीं २९ धर्ताहै ३० धूरधानीहौ
 ३१ ध्वनैको ३२ धूर्त ३३ ध्यायेही ३४ ललन ३५ धर्म ३६ धूमीही ३७ धिकैयोना ॥ इति ॥

प्रसंग ॥ ३४ ॥ (एकसमय यमुना किनारे एक
 स्थलपर दशपांच सखियों का वृन्द खड़ाहुआ देखकर
 रसिक शिरोमणि कृष्णमहाराज उनके समीप जातेभये
 सो गोपाल लालजीको आवते देख और उनको चंच-
 ल रसिक जानकर सखियाँ इस प्रकार बोलती भई कि
 महाराज) ॥

टीका ॥ ३४ (क्या कुछ) १ तकरार २ करनेवाले ३ हौ ४ अपनेघरको ५ चलेजाओ
 ६ धमकीमतदिखलावना (नहीं तो तुम्हारा) ७ नीचपन ८ बहाबहाफिरैगा (कहीं)
 ९ भिगड़े के भरोसे (हमारे समाज के भीतर) १० न घुसि आवना ॥ (ऐसी) ११ जल्दी
 १२ जल्दी करकरके १३ जोरशोरसे उखलते १४ कूदते १५ हौ (कि) १६ कुछ शरीर का होश ही

नहीं है (कुछ हमें) ^{१६} धानपान ^{१७} सरखा कोमल मतसमभना ॥ (जो नहीं मानौगेतौ)
^{१८} भली चंगी तरह ^{१९} से मारधार ^{२०} मच ^{२१} जायगी ^{२२} मूर्खता करौहौ (कहीं मार तोर
^{२३} की) ^{२४} घोर धूरसे (रेगुका से) ^{२५} धुरिआय मत जैयो ॥ (तुम्हारी) ^{२६} प्रकृति ^{२७} जानी
^{२८} हुई है ^{२९} फजिहतखोरा ^{३०} हौ कौन ^{३१} मुडखपराव तुम से करै (क्योंकि) ^{३२} कुचाली (व)
^{३३} नादान को ^{३४} पूजेही से ^{३५} भलाई है (अपनी) ^{३६} बनीबनाईबात ^{३७} मतीबिगार डारियो ॥
 इति ॥

अविसारिका नायका ॥

नवर्ग कवित्त ॥ ३५ ॥

^१ नागरी ^२ नवेली ^५ नेक ^६ नागिनि ^७ नागिनि ^३ निशि ^४ नगरि ^८ निवास्थुँ
^{१०} नैन ^{१२} न्यूनरी ^{१३} नवाई तैं । ^{१६} नौकर ^{१४} निकर ^{१५} नृप ^{१७} नुकश ^{१९} निहरत ^{२०} नित नू-
^{२२} तनी ^{२३} नवीनी ^{२४} का ^{२५} निरखि ^{२६} नियराई तैं ॥ ^{२७} निलयनिरासिक ^{२८} निवास
^{३०} नीपनेहो ^{३१} नेमनेकियां ^{३२} नगीनी ^{३३} नेकनजरी ^{३४} नुमाई तैं । ^{३५} ललन न-
^{४०} रायण ^{४१} सौं ^{४२} नीरजनैनी ^{४३} नमूंद ^{४४} नेह ^{४५} निबहन ^{४६} निधि ^{४७} नोखी ^{४८} निरखाई
 तैं ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ३५ ॥ कोई एक सुकुमार सलोनी सखी श्री
 कृष्ण महाराजसे मिलने की एक पहर रात्रिपर्यंत तक
 की अवधि बांध अपने घरको सिधारती भई दैवयोग
 से वो कुछ ऐसे फँसाव में फँसजाती भई कि वो अपने
 नियत किये हुए समयपर न पहुँचसकी तब महाराज
 निराश हैं अपने मकानके किवाँर बंदकर सोयजातेभये

इधर जब अर्द्धरात्रि का समय नियराना तब उस अबलाको अवकाश मिलनेपर याद आई कि मैं तो कृष्ण भगवान् से मिलने का वचन दे आई थी अगर मैं न पहुँचूँ तो गोपाललाल जी कहीं मुझसे खेद न मानने लगें मन में कहने लगी कि खैर देरहोगई तो होजाने देउ लेकिन महाराज के पास चलना निश्चय चाहिये ऐसा समझकर अकेले ही चलदेती भई कृष्ण द्वारपहुँचकर दरवाजा बंद देख सांकरी खटखटावती भई कि हरि सांकरी का शब्द सुनकर किवाँर खोल उसी सुन्दरीको अनुचित समय आई हुई देख बड़ा आश्चर्य्य कर उससे पूछते भये कि ॥

सखिप्रतिहरिवचनम् ॥

टीका ॥ ३५ ॥ (हे) नवीनि सुन्दरि (तैनेऐसी) विकराल रात्री को कुब्ज
 भी नहीं ख्यालकिया (क्या) ग्रामवासियों के नेत्रों मेंतैने धूल भोंकदीनी (जो
 कि तू यहां तक चलीआई और किसीने तुझे नहीं देखपाया अथवा) ॥ अनेक
 राज पहरुये (ऐसीऐसी) पेंचीदाबातों व ऐबों को हमेश देखाही करते हैं (सो
 तेरी हे) नवयौवनि क्याकोई नईरास्ता देखीभई थी (जोधरे) तू पासतक च-
 लीआई ॥ (मैं तो विल्कुल ना उम्मेद होगया था लेकिन तुझने मुझ सरीखे)
 वे उम्मेदवाले या वे आशवालेके मकान में सुंदर विश्रामलेने का प्रण पूराकिया
 (सो यह तो) तैने बहुतभलाई करी (और) अनुग्रह प्रगट करी है (अरी) अ-
 नमोल कमल सरीखे नेत्रोंवाली प्यारे परमेश्वर की शपथ (करकहताहूँ कि तुझ
 सरीखी) प्रीतिके निबाह की अद्भुत सागरी (मुझे एक) तुहीं देखपड़ीहै ॥ इति॥

कलहांतरितानायका ॥

पवर्ग कवित्त ॥ ३६ ॥

^१ प्रीति ^६ पुञ्जपुष्करि ^३ पुनीत ^२ प्रेम ^४ पूरी ^५ पय ^७ पुनि ^९ पी ^८ प्यारे ^{१०} पहीं
^{११} पराइये ^{१२} पराई ^{१३} क्यों । ^{१४} पावसेश ^{१५} पिकी ^{१६} पाय ^{१७} पूजी ^{१८} ना ^{१९} प्रपूर्ण ^{२०} प्यास पु-
^{२१} ष्येश ^{२२} पराग ^{२३} पै ^{२४} प्रफुल्लता ^{२५} न ^{२६} पाई ^{२७} क्यों ॥ ^{२८} पूतरी ^{२९} प्रवीनता ^{३०} पुरातन प्र-
^{३१} वीनपन ^{३२} प्रबल ^{३३} पाण्डित्त ^{३४} पुजी ^{३५} पुती ^{३६} पण्डिताई ^{३७} क्यों । ^{३८} पाले ^{३९} पोढ़
^{४०} परीरी ^{४१} प्रपञ्ची ^{४२} पै ^{४३} पण्डित ^{४४} पै ^{४५} ललनु ^{४६} प्रतीतु ^{४७} प्रिय ^{४८} पूरिही ^{४९} पराई
^{५०} क्यों ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ३६ ॥ (चन्द्रावलि सखी जोकि श्रीकृष्ण
 भगवान् को परमप्रियाथी और तैसेही चन्द्रावलि को
 भी भगवान् परमप्रियथे कभी आँखों आँट न होतीथी
 सो एकरोज भगवान् से रुष्टहोकर अपनेघर चलीआ-
 वती भई तिसकी एक परममित्र सहेलीने उसको इधर
 उधर फिरते हुये देखकर उससे पूछतीभई कि हे प्यारी
 तू ऐसी होकर कि) ॥

सखिप्रति सखिवचनम् ॥

टीका ॥ ३६ ॥ प्रीति जो कि स्नेह है (ब) प्रेम जो कि सांचीलगन तिस की
^३ सुन्दर ^४ व निर्मल ^५ पूर्ण ^६ क्षीरसागरी ^७ फिर (आज अपने) ^८ प्राणप्यारे ^९ पिया ^{१०} से फटी
^{११} फटी ^{१२} काहे ^{१३} फिररही है ॥ (देख पपीहा एक स्वाति बूंद के कारण प्रभुने स्नेहयुत
 रटलगाय पावस ऋतुमें मनोरथको पाय संतुष्टना को प्राप्त होता है तेरा कैसा पिया

१४

है कि) पावस ऋतुका स्वामी कि जिस पावसमें कोटिन स्वातिबिंदु उपजते हैं
 (हे) मृदुबैनि पपीहनी (तिसको) प्राप्तकर (तेरी) भीतिरूपी सम्पूर्णतृष्णा
 नहीं पूर्ण हुई (अथवा देखु भँवरा पुष्पका सुगंधि रसग्रहण करके संतुष्ट होता है
 और फिर तुझे तो कैसा पिया बिलाहै जोकि) कोटिन रसीले पुष्पोंका रचने
 वाला (तिसकी) सुगंधी से तेरेमनको आनन्द नहीं प्राप्त हुआ ॥ (जो मैं कहूँ तू
 कुछ नादानहै सोतो तू) चतुराई की पुतली (व) छोटेपन से चतुराई चालांकी
 से भरी है (और अबतो) अत्यन्त गुणोंकरके संपन्नित है (फिर तेरी ऐसी)
 बुद्धिमानी कहाँ खो गई ॥ (इतनी वार्त्ता अपनी सहेली की सुनकर चन्द्रावलि उ-
 त्तर देती भई कि तू नहीं जानै है कि मैं) बलबल रचनेवालों में तो अत्यन्त
 निपुण के अन्वछितारह से बशमें फँसीहूँ तौ प्यारी (इसबातपर तू) ख्यालकर
 (कि) ऐसेनादानसे (भलाईही कबहोगी) ॥ भीति कैसे निबहेगी ॥ इति ॥

सखिप्रतिसखिशिक्षा ॥

फवर्ग कवित्त ॥ ३७ ॥

२ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
 फरेफरे फतुओं फरेवन फयाती फुर फूलिही फिरै फनफनातिया

१० ११ १२ १३ १४ १५ १६
 फजीतीसी । फूहरपनादि फट्टई फली फितूरि फैल फनों फटकारी

१७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६
 फन्द फारी फहरीलीसी ॥ फूंकफांक फूंकनीहूँ फाल फुरमावनीहूँ

२७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६
 फोकटी फसाद फँसि फिरती फवीलीसी । फेंकु फंद ललने फणीश

३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६
 पति फांसु फेरि फँसरी फिकिर फूंकजावहीं फलीतीसी ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ३७ ॥ एक सखि जोकि कुट्टतत्रत पारायणि

और त्रिमुखि नारायणर्था उसकी परम मित्र सहेली उसे उपदेश देतीभई कि अरी कुचालिनि ॥ ईश्वरका स्मरण कियाकर कि जिससे परिणाम बनै और भलाई होय वृथाके वास्ते अपनी अनमोल मनुष्य योनिको बरबाद न कर देखु अबभी सोच समुभु ॥

सखिप्रति सखिवचनम् ॥

टी० ॥ ३७ ॥ मैं सांचकहतिहूं (कि तू) भलेचङ्गे छल कपटों से भरीहुई
दुर्दशाकरीहुई फजिहन के समान अभिमानभरी डोलती है ॥ (और) कुकर्म-
दि (व) भूँठवचनादि (व) कलहरूपी गुणों से भरीहुई (और) सुन्दर
गुणों से रहित (व) फौरेबोंकी मवाह धारा (होरही है) ॥ (व) भ्नाड़फूंक
करनेवाली (फाल) गुप्तहाल खोलनेवाली (निरर्थक) राहचलतू भगड़े करने-
वाली सौखीन सरीखी (बनी) फिररही है ॥ सो प्यारी (अब इन) कुचालचल-
नों को परित्यागकर श्रीकृष्णचन्द्रभगवान् को रिफाउ तौफिर (जो तू) चि-
न्तारूपी जाल में फँसरही है (उनसे) छूटहीजाय ॥ (अथवा तेरी चिन्तारूपी
फांसी मशाल के तरह जल भस्म होजाय) ॥ इति ॥

अधीरानायका ॥

ववर्ग कवित्त ॥ ३८ ॥

बीर बिगौरैल बनवारी वो बिहारी बड़ बाटबिच वादनुबिवादन
बढ़ावतो । बावरी बनाय बिदराय बिचकाय बकबधुटी बिलोकती
बिलोकतै बनावतो ॥ बांधो वा प्रजेश बैर बिकट बिहद बिधि

२३ २४ २६ २६ २७ ३० २९
 बरसाने बसिहौं विषाद ब्रज ब्यावतो । बरण बताऊंगी विवस्था
 २८ ३१ ३२ ३३ ३४ ३६
 वृषभानसुतै बाँकुरो ललन ब्रज बसिबो बिहावतो ॥ इति ॥

सखिप्रति सखिवचनम् ॥

प्रसङ्ग ॥३८॥ एकसखी अपनी परमसहेलीसे श्रीकृष्ण-
 चन्द्र का उरहना दे अपनी व्यवस्था कहती भई कि ॥

टी० ॥ ३८ ॥ (हे) प्यारी कृष्ण बड़ा कुचाली है रास्ताचलते भ्रगड़े करत
 १ २ ३ ४ ५ ६ ७
 है ॥ (कभी मुझे) बुराभलाकह ओंठोंसेचिदाय बकभक पागलसी बनाय
 ८ ९ १० ११ १२
 देता है (सो ये दशा) ब्रजकी स्त्रियां देखाकरती हैं (औ मुझे भी) देखतेही
 १३ १४ १५ १६ १७ १८
 बनझावता है ॥ उस गोपाललाल ने (मुझ से ऐसी) महाभारी अथाह शत्रुता
 १९ २० २१ २२ २३ २४
 कररकखी है (सो अब मैं) राधिकानगरी में जायरहूंगी (काहेसे कि अब)
 २५ २६ २७ २८ २९
 प्रजके निवास से खेद होता है ॥ (और) राधिकाजी महारानी से समस्त दशा
 ३० ३१ ३२ ३३ ३४
 कहसुनावोंगी कि कुचाली नन्दको कुँवर ब्रजमण्डलका निवास (मुझसे) छो-
 ३५
 ङावता है ॥ इति ॥

प्रोषितभर्तृकानायका ॥

ववर्ग कवित्त ॥ ३९ ॥

२ ३ १ ६ ६ ४ ७ ८ ९
 बानक बिगारो बिध बिलमो विदेश बर बाबुल बखरी बैस वृ-
 १० ११ १२ १३ १४ १६ १७
 थहि बिहातुरी । बीररी बिराहिनी बियोगिनी बिहाल बहु बिरहा
 १८ २० २१ २२ २४ २५ २६ २७ २८
 बिहद बिथा बक्र बगरातुरी ॥ बेपरा बिहंगम बनायो वो बिधातही
 ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७
 ने बनै ना बनाये बिधि बात ना बिसातुरी । बैरी बिनतन बेधना

३८ ३५ ३९ ४२ ४१ ४० ४३
बिलंद री ललन बावरीवनी विना विहारी बिलखातुरी ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ३६ ॥ (कोई एक पति वियोगिनि से एक सखी अपने पियाकी वियोगरूपी दुःखकी अवस्था वर्णन करती भई कि) ॥

सखिप्रति सखिवचनम् ॥

टी० ॥ ३९ ॥ ब्रह्माने मेरेसुखकाबनाव विध्वंसकरदिया (मेरा) पिया
(था सो) परदेश छायरहा मातापिताके घरमें मेरी उमर निष्पयोजन बीती
जाती है ॥ (हे) प्रिय वियोगवति मैं भी दुःखसेसंपन्नित अत्यन्त कुदशा को
मातृहं (और) पिया के बिछोह का अतिशय कठिन खेद बढ़ताजाय है ॥ उस
ब्रह्माने (मुझे) बिन पंखों का पक्षी रचा है (इसी से) न कोईयुक्ती चला-
ये चलै न कुछ प्रयोजन बनै है ॥ (अरु) हेप्यारी शत्रुकामदेवकी व्यथा अत्यं-
त बृद्धी को प्राप्त होरही है (सो मैं) प्यारे कृष्ण बिदून सुधिवुधि विसराये हुये
बिलाप को कररही हूं ॥ इति ॥

शस्त्रनामानि ॥ अथ शस्त्रानुमान संख्या ॥ ११ ॥

ववर्ग कवित्त ॥ ४० ॥

बल्लम बुलंदी बांकु बांकुरी बिलूह बूह बानेहु बलाने बंद बंड-
खहु वारे हैं । बरुतर बलाके बाण बीषत्त बुभाके बृद्धि बहल व-
लाके ब्रह्म बाण व्यवहारे हैं ॥ बिजई विनाशी वपु वर्छे बर्छियां
बिपुल ललनु बलीसुवीर बेहद विहारे हैं । वाद बरुवादन बहैयाह
बिदूनबात बलभद्र बैरी बहु बदन बिदारे हैं ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ४० ॥ श्रीरुक्मिणी महाराणी के विवाह

समरमें श्रीकृष्णमहाराज व बलदेवजी महाराज के स-
न्मुख जौन प्रकार करके शिशुपाली सैन्याके शूरवीर
नानाविधानके अस्त्रशस्त्र लेकर आय लड़ेरहे उन अस्त्रों
के इस कवित्त में नाम वर्णन हैं इसी से सरलता जान
इसकी भाषा नहीं करी ॥ इति ॥

देवयान स्वगवर्णन ॥ अथ स्वगानुमान संख्या ॥ २६ ॥

ववर्ग कवित्त ॥ ४१ ॥

बदक बरीला बाज बबई बटेर बरु बिनता बिरहि बृन्द बृषभ
विकासहीं । बाजे बुलबुल बया बिहँग बुँदीला बौधि बावर व बे-
सरा बिलंगनी बिलासहीं ॥ बटई बिपुल बगरेल बनमुर्ग बैरी बै-
गमा बिलाई बाघ बिमलित बाजहीं । ललन बिनोदवत बरगैलि
बैजनादि बाजे बाजे बीर बांके बाहन बिराजहीं ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥४१॥ इस कवित्तमें केवल कृष्णमहाराजकी
बरातमें जो देवगण आये रहे उनकी सवारियों के अने-
क खगादि नाम वर्णन हैं इसी से टीका नहीं किया ॥ इति ॥

देवयान पक्षी वर्णन ॥ अथ स्वगानुमान संख्या ॥ १६ ॥

ववर्ग सबैया ॥ ४२ ॥

बैठ बकासर बंधर बीर बिसांतिनु बर्कुल बृन्द बनाये । बिन्दुकि
बाज बजूल बढी बिगरा बुटही बरटानु बकाये ॥ बायस बास बि-
राजबहू बिजहावर बाघ बिमान बसाये । बीन बजावत वै ललनेश
विहारि ब्रजेश बिनोद बढाये ॥ इति ॥

टी० ॥ ४२ ॥ इस सबैया बंद में केवल देवसवारियों के पक्षियोंके नाम वर्णन
हैं इस कारण से इसका अर्थ नहीं किया ॥ इति ॥

देवसवारिक पशु वर्णन ॥ अथ पशु अनुमान संख्या ॥ १२ ॥

ववर्ग कवित्त ॥ ४३ ॥

बांकुरे बराह सिंह बाघन बलीन बृन्द विज्जुन बहूत वैठ बीर ब-
करानवर । बेहरैं बराह बिपत्तापरान बिकराल बीछी बिपवारन वि-
लारन वथानवर ॥ बेहद बली बृकोदरान वांदरानि बहु बिपुल वि-
नोदी बनमानुष खानवर । वृषन विराजैं बाजे ललन विशालबाजे
वर्ण वर्ण बाहन वित्तासिया विमानवर ॥ इति ॥

टी० ॥ ४३ ॥ इस कवित्त में भी केवल देवबाहनों के नाम वर्णन हैं इसी से
इसका टीका नहीं किया ॥ इति ॥

श्री रुक्मिणी शोभावर्णन ॥

भवर्ग कवित्त ॥ ४४ ॥

भोरीभोरी भामिनीहुँ भामनी भरील भाह भीनेभीने भूपनान
भूषित भलीभली । भक्भकी भभूकैं भूर भावनी भवाती भाहैं भावों
भभकतीं भांतिभांति भर्म भर्मली ॥ भागवंत भी ललन भोगवति
भेषभल भाल भल्भलाहट भलाइयां भ्रमंतली । भानुहुँ भुलावैं भुर-
मावैं भैरवीभटून भीष्मकजा भागवान भामा भक्त्रत्सली ॥ इति ॥

सखिप्रति सखिवचनम् ॥

टी० ॥ ४४ ॥ सोहावनी शोभा से भरीहुई अत्यंतसौधी सुकुमारि सुन्दर
सुन्दर आभरण (पहिरैहुये) सुवरीतिसे दर्शातीभई ॥ अत्यन्त जागतीहुई सलो-
नी छत्रोंकी अनेक कलाओं के सारोंको दर्शावतीहुई बहुआश्चर्यों से संपन्नित
सुहायमान ॥ नसीबिवर निश्चय करके प्रिय सुखभोगोंको विहारनेवाली उच्चललाट

^{२७} कीर्तीकी ^{२८} सुघराई से ^{२९} भरीहुई (कि जिसकी शोभाको देख) ^{३०} सूर्यनारायणभी
^{३१} विमोहित होजाते हैं (और) ^{३२} सम्पूर्ण ^{३३} देवांगना ^{३४} सुधिबुधि ^{३५} भूलिजायँ (ऐसी)
^{३६} भाग्यशाली ^{३७} भीष्मकराजाकी ^{३८} कन्या ^{३९} कृष्णभगवान् की ^{४०} प्यारी की (शोभाद-
 शर्ती भई) ॥ इति ॥

आनन्द संमुहिता नायका ॥

भवर्ग कवित्त ॥ ४५ ॥

^३ भोरभयो ^२ भोरी ^७ भइ ^६ भापितरी ^१ भानु ^४ भाह ^९ भाग ^{१०} भौन ^९ भामिनिरी
^{११} भीरभटु ^{१२} भेरैगी । ^{१३} भुरमी ^{१४} भ्रमानी ^{१५} भरतारभग्नि ^{१६} भाँपहिगी ^{१८} भिटबो
^{१९} भूलैगी ^{२०} भौरि ^{२१} भौरहू ^{२२} भ्रभेरैगी ॥ ^{२३} भलिभलिभांति ^{२४} भारी ^{२६} भौभयंक
^{२७} भानतिहूँ ^{२८} भग्वत ^{२९} भलाई ^{३०} भरै ^{३१} भाभई ^{३२} भँभेरैगी । ^{३३} ललानि ^{३४} भवेश ^{३५} भक्क
^{३७} भजु ^{३८} भूरि ^{३९} भोगप्रद ^{४०} भंजौ ^{४१} भगवान ^{४२} भापु ^{४३} भीरु ^{४४} भर्भरेरैगी ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ४५ ॥ एकदूती किसी एक सुकुमारिसुन्द-
 रीको घरकी चोराचोरी से उसे श्रीकृष्णमहाराज के
 रंगमहल में पधराय इस प्रकार शिक्षादेकर कि देखु
 हे प्रिये तैं मुंहअँधियारे गुपचुप अपने भवन को यहां से
 चलीजइये ऐसा कहकर अपने घर को जाय सुचित्त
 निद्रा में प्राप्त होतीहुई प्रातस्समय जागने पर कृष्ण
 भगवान् के समीप चलती भई भानुउदयपर हरिमंदिर
 में पहुँच क्या देखैहै कि वो सखी अबतक अपने भवन
 को नहीं पधारी है तब तौ चक्रित होय उस सुकुमारि

प्रति यह कहती भई कि अबतक तू अपने घरको नहीं
गई अरी उठ देखुतो ॥

सखिप्रति दूतिकावचनम् ॥

टीका ॥ ४५ ॥ अरी सीधेनुभाववाली सेवेरादोगया सूर्यनारायण की
किरणों उदय होयआई अरीप्यारी (तू) घरको पधार (नहीं तो फजिहत हो-
जायगी जो मार्ग में) स्त्रियोंकासमूह मिलजायगा ॥ कौनभूलमें भूलीहै (तेरी)
ननदी देखलेयगी (तौ फिर) हे रूपरसलोभिनि मधुकरी मिलना भूलजायगी यह
कृष्णरूपी मधुकरभी हाथसे जातारहेगा ॥ अच्छीअच्छीतरहसे कहूँ हूँ कि अ-
त्यन्त बड़ा भयदायक डरहै ईश्वरहि रक्षाकरै (आजकुछ तुझे) क्लेश मिलनेवाला
है ॥ (इस से हे) प्यारी कृष्णचरण सेवकनि (तू) सर्व सुखदेनेवाले (जो गो-
पाललाल हैं तिनका) स्मरणकरू (अथवा) कृष्णमहाराज सेही कह (कि मेरे
ऊपर) जो आपत्य होनेवाली है उसे दूरकरो (यानी घेरी फजिहत न हो सो
उपाय मुझे बतलाइये जिससे कि मैं निर्भय घर पहुँचजाऊँ) ॥ इति ॥

पक्षीनामानि वर्णन ॥ अथ खगानुमान संख्या ॥ १३ ॥

भवर्ग कवित्त ॥ ४६ ॥

भीनेभीने अमर अमंत अंगिया भँभेर भीरभार अंगराज भाट
भर्भरातु हैं । भारथ भुँगेला भल भुरजैट भाद्रभाते भीना भुसकैटा
भांतिभांति भन्भनातु हैं ॥ भद्रकुल भोलेभोले भामनीक भाम-
नीक भामिनी भ्रमाती भ्रम भुजँग भुलातुहैं । भावते ललन भजु
भगवंत भंज भार भव भय भूरि भाग भागते भगातु हैं ॥ इति ॥

प्रसन्न ॥ ४६ ॥ जिस समय कि श्रीकृष्ण भगवान्‌के समीप श्री रुक्मिणी महाराणीका भेजा हुआ हरीदास विप्र पातीले द्वारिका को चलता हुआ तो मार्ग में इस प्रकारके पक्षियों के मुखसे हरिकीर्त्तनरूपी शब्द सुनकर प्रसन्न होताभया ॥ इति ॥

उमाप्रतिशिव वचनम् ॥

टीका ॥ ४६ ॥ [कहीं तो] सुन्दर^१सुन्दर^२ भँवरा [कहीं] लाखोर^३के वृन्द^४
 [कहीं] बहुत^५ से भंगराजनामक पक्षी^६ विचर^७रहे [कहीं] भाटनामकपक्षी^८ बोल^९रहे
 [कहीं] भारत^{१०} [व] भुरजैटा [कहीं] सुहावनेभाद्र [व] सुन्दरसभुंगेला [कहीं]
 भीना [व] तरह^{१४} तरह^{१५} के भुसकैटा^{१६} चहकर^{१७}हे ॥ भोली^{१८} भोली^{१९} सूरतवाले भद्रकुल [व]
 सुहावनी^{२०} सुहावनी^{२१} भामिनी^{२२} मनका^{२३} खेद^{२४} हरै^{२५}हैं [कहीं] भुजंगा^{२६} भ्रमण^{२७} करते ॥ प्री-
 तिसे^{२८} प्रिय^{२९} घनश्यामको^{३०} स्मरण^{३१} करतै^{३२} हुये [कि जिस स्मरण^{३३} से] संताररूपी म-
 हाभयदायक^{३४} पातक^{३५} खंडखंड^{३६} है नशिजाते^{३७} हैं [इस प्रकार पक्षियों को देखकर
 द्विज प्रसन्न होताभया] ॥ इति ॥

पक्षी नामानि वर्णन ॥ अथ स्वगानुमान संख्या ॥ २६ ॥

मवर्ग कवित्त ॥ ४७ ॥

मोरी मोर मुनियाहू मैनी मैनाहूं मराल मुरग मँडूक मान पु-
 ष्करी मुदामहा । मारची मझाकुल महूक मगचिकनीहूँ मूमुरी मु-
 सरिहा महरि मुंडिया महा ॥ मालिनी मयूर पंखि मुरुक मनोहरीहु
 मुँगही महोवरी मुँचील मटकुला महा । मांगली मन्हूसी मुरगावीहू
 ममाखमनुं ललन मतंग मोद मोहित महा महा ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ४७ ॥ इस कवित्त में केवल पक्षियोंके नाम वर्णन हैं इसीकारण से टीका नहीं किया ॥ इति ॥

श्रीद्वारतिप्रीता नायका ॥

मवर्ग कवित्त ॥ ४८ ॥

^{४४} ^{४०} ^{४१} ^{४३} ^{४२} ^२ ^३ ^४ ^७ ^६
 मोह्यो मनमोहन मुरारि मन मोर मीत माधुरी मनोज मूर्ति मो-
^५ ^१ ^८ ^६ ^{१०} ^{११} ^{१२} ^{१३} ^{१४} ^{१५}
 हिनी महानरी । मृदु मुसक्यान मानों महा मार मानमनी मंजुल
^{१६} ^{१७} ^{१६} ^{१८} ^{२०} ^{२४} ^{२१} ^{२२}
 मजान मिलि मुख मंजु मानरी ॥ मालाकारिया मोहालि मुकतनु
^{२३} ^{२५} ^{२६} ^{२८} ^{२७} ^{२९} ^{३०}
 मालमणि मालामालसे महँगि मोति मकुनानरी । मलया महक
^{३१} ^{३२} ^{३४} ^{३३} ^{३७} ^{३८} ^{३६} ^{३९} ^{३५}
 माथ मुकुट मुरलि मुख मधुवनमें ललन मुँहिं मुलकानरी ॥ इति ॥

सखिप्रति सखिवचनम् ॥

^१ ^२ ^३ ^४ ^५ ^६
 टीका ॥ ४८ ॥ अरी मित्र सुन्दर कामदेव [व] अतिशय मोहनी मंत्रों से भरी
^७ ^८ ^९ ^{१०} ^{११} ^{१२} ^{१३}
 हुई सी सूरत । मीठी मंदहँसन साक्षात् अत्यन्त कामदेवकी छविकी पद्धति
^{१३} ^{१४} ^{१५} ^{१६} ^{१७} ^{१८} ^{१९} ^{२०}
 [आनसान] सेवरी सुन्दर सुखोंसे सम्पन्नित [ऐसा] शोभित वदन सुहाय-
^{२१} ^{२२} ^{२३} ^{२४}
 मान ॥ जो किसीको नसीब न होसके ऐसे मोती मँगियोंके मालाओं के वृंद [व]
^{२५} ^{२६} ^{२७} ^{२८} ^{२९} ^{३०}
 अमितधनसे अमोल गजमुक्तों की [मालापहिरे] । [व] चन्दनसे सुगंधित
^{३१} ^{३२} ^{३३} ^{३४} ^{३५}
 [तन] मस्तकपर मुकट [क्रीट] आनन में वंशी [अधरोंपर धारणकिये] हे
^{३६} ^{३७} ^{३८} ^{३९}
 सखि [आज] मोंको वृन्दावनके बीच नन्दकुँवर देखाई पड़ा [उस] मन मो-
^{४०} ^{४१} ^{४२} ^{४३} ^{४४}
 हनेवाले मोहनने मेरा चित्त चोरायलिया ॥ इति ॥

मानवती नायका ॥

मवर्ग कवित्त ४६ ॥

मानुमानु मानिनी मनोहरी मयंकमुखी मानके मनैबे में महा-
 तम महातु है । मानहुँ न मानहुँ श्रीमाधरीजी मोर मती मंदै सु-
 दिताई मलिनता महिंगातु है ॥ मीतरी मिलापै में मजातु मजा
 मंजु महा मूजिवामूजिव मूल मनमां मुलातु है । माधो मोहिनी
 मुलायमी ललनि मेंढु मत मानुज में मुख्य मृदुताहि मामुलातु
 है ॥ इति ॥

श्री राधिका प्रति सखिवचनम् ॥

प्रसङ्ग ॥ ४६ ॥ एकसमय श्रीराधिकाजी महाराणी
 कृष्णभगवान् से मानकर बैठतीभई कि एक दूती श्री-
 कृष्णमहाराज की तरफसे आनकर यह प्रार्थनाकर उप-
 देशिक वचन कहतीभई कि ॥ इति ॥

सखि प्रति दूतिका वचनम् ॥

टीका ॥ ४९ ॥ [हे] मानकरनेवाली [रूठनेवाली] चितचोरिनि चन्द्रव-
 दनी [मेरी शीक्षा] ग्रहणकर ग्रहणकर [देखु] पद्धति युन सत्कार से बङ्गप-
 न बड़ैहै । [आगे] प्यारी मेरी सलाह मानने न माननेका [तुम्हें अख्त्यार है
 परन्तु न मानने से] सुख घटता है [और] दुःख बढ़ता है ॥ [क्योंकि] [हे]
 प्यारी सुखप्यारै में अत्यन्त श्रेष्ठ आनन्द प्राप्त होता है [और मेरे कहने का]
 उचित अनुचित सार [आपके] हृदयमें मालुम होता होगा । [हे] भिये कृष्ण

२८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४
 चित्तचोरनि नम्रताको न दूरकर मनुष्य के तनमें [केवल] शीलही एक मूल
 ३५
 पदार्थ है ॥ इति ॥

वैसिकनायका ॥

कवित्त यवर्ग ५० ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
 यादवेश याबास येहिही यकीने यशु योवनयाकृत यावरीही
 ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७
 युति यारभे । यदिहि युबाई योमी यत्र युक्ति यंत्र योगे यादतै
 १७ १८ २१ २० २२ २२ २६ २३ २४
 युगुल यारी योगी येतवार भे ॥ यातोही यकंती योहीं यकायक
 २५ २८ ४० ३७ ३५ ४१ २३
 यादगारि यक ना यामिनि याम योगयुग्मकारभे । येहोयों यरू-
 २६ २५ २७ २४ २८ २९ ३० ३१
 जन यथोचित यरूजकै ललन यदु युवती यरै यमानमारभे इति ॥

हरिप्रति सखिवचनम् ॥

१ २ ३ ४ ५
 टीका ॥ ५० ॥ [हे] स्याम सनेही [तुमको] यही भलाई करनी उचितथी
 ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
 [कि] हीरारूपीयौवनकी उमंगही पर मित्रवने ॥ जबतो युवाअवस्था प्राप्तथी
 १३ १४ १५
 [याने मेरी ज्वानी चढ़ी हुई थी तबतो तुम्हारे] उपाय [व] चतुराईरूपी टोंना क-
 १६ १७ १८ १९ २० २१ २२
 रनेसे [हम तुम] दोनों प्रीति करतेही विश्वास करनेके समतुल्य भये [याने
 २३ २४ २५ २६
 यकीन करने के लायकहुये] अजीओ प्यारे यथायोग्य सुखरूपी ऐश्वर्यों को
 २७ २८ २९ ३०
 [मेरेसंग] भोगकर [अब तुम और और] यादत्रौकी स्त्रियोंसे प्रीतिकर[ऐसे]
 ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६
 बेनियत होगय हौ । [कि] कहाँतो इसप्रकार एकदमसेही [मेरी] सुरत विसराय
 ३७ ३८ ३९ ४० ४१
 दीन्हीं है [कि अब कभी कोई] रात्रिके एक पहरके [वास्तेभी] नहीं दोनोंजने
 मिलसक्ते हैं ॥ इति ॥

शान्तिरस ॥

स्वर्ग सवैया ५१ ॥

राम रसायन राचु रंगील रदैं रुज रंकित रांड रजोवति । राख-
 १ २ ४ १ ९ ८ ७ ६ ६ १३
 १२ १० ११ १४ १७ १६ १६ १९ २०
 हि रज्जु रघूपति सों रति रांध रमें रिरियावति रोवति ॥ रास रहस्य
 १८ २१ २२ २६ २३ २४ २५ ३२ ३३ २९
 रमापति के रुचि राज रजै रमणी ललनै रति । रारि रुदैं रघुनायक
 २७ २८ ३० ३१
 राजिवलोचन रामक रोजहि रोजति ॥ इति ॥

उपदेश ॥

टीका ॥ ५१ ॥ [हे] प्यारे सुखकाधाम [जो] रामनाम है [तिसको] भजु
 १ २ ३ ४
 व [स्मरणकरू तौ] विधवा मासिकधर्मणी स्त्री के नीच दर्शन तुल्य [जो]
 ६ १०
 दरिद्ररूपी रोग हैं [सो] दूरहोजाय । [और जो] रामचन्द्र महाराज से प्रीति-
 ११ १२ १३ १४ १६
 रूपी लव [डोर] लगावै [तौ जितनी] विपत्ती है [सब] विलाप करती भीं-
 १६ १७ १८ १९ २० २१
 कती फिरैं ॥ [जो] परमेश्वर के गुणानुवाद में रमै [तौ] मनमानी नरदेव
 २२ २३ २४ २६ २९
 पदवी [व] सुन्दर स्त्री [व] संतानादि सुख [व] हरिपदभक्ती प्राप्तहोय ।
 २७ २८ २९
 [और जो] कमलसरीखे नेत्रवाले सबमें वर्तमान रामचन्द्रमहाराज [तिनका-
 ३० ३१ ३२ ३३
 प्रेमरूपी] व्रत धारण करने से [संसाररूपी जंजालकी] व्यथा मिटजाय है
 [आवागमन से रहित होजाय है] ॥ इति ॥

अनुकूल नायक ॥

स्वर्ग कवित्त ५२ ॥

रामसौंह रावरी स्टतु रोंप रोंप कर रंक रहुं रूपरस रसना रसी-
 ४ १ ६ ३ २ ९ १० ६ ७ ८
 १२ ११ १३ १६ १४ १६ १७ १८ २०
 लीको । रीति रति रोचतही रोचतहौं रीतिरस राग रँग रंग रुचि

राखत रुचीली को ॥ ललने री रमणीक रमणी रमणकार रोष रांधि
 रहत री रागिया रतीलीको । रामक रसिकरति रामकि रुचिक रुख
 रोमरोम रमों रूप राधिका रंगीलीको ॥ इति ॥

सखि प्रति हरिवचनम् ॥

प्रसङ्ग ॥ ५२ ॥ किसी समय एकसखी श्रीकृष्णम-
 हराजसे कुछ प्रीति मार्गका उरहना देती भई तब मदन-
 गोपाललालजी उससे उत्तरमें ये कहते भये कि तू ऐसी
 बात मुझसे मतकहु ॥

टीका ॥ ५२ ॥ हे प्यारी [मैं तो] हाथ उठाय उठायकर परमेश्वर की क-
 समखात हौं [कि मैं तो सदैव] सुन्दर छवि [व] सुखरूपी मीठेवचनों का
 लोभी रहताहूँ । [और जो मुझसे] प्रीतिरूपी बर्ताव बर्तै है [उससे मैंभी] प्रे-
 मरूपीबर्ताव करताहूँ [और] स्नेहरूपी आनन्दसे संपन्नितकर इच्छाकरनेवाली
 का मनोरथ पूराकरहूँ ॥ अरी प्यारी [मैं तो] सुशील स्त्रियों से प्रीतिकरनेवाला
 [और] हे सुकुमारि क्रोधरूपी व्याधा दूरकर [जो] प्रीतिवाली है [उससे
 मैं सदैव] प्रीति करताहूँ । [व] प्रेमियोंकी प्रीतिमें रमनेवाला [व] वाञ्छि-
 तार्थी की मनशा पूर्ण करनेवाला [ऐसे जो सर्व गुणोंसे संपन्नित मेरी परमप्रिया]
 प्रेमवती वृषभानदुलारीका गुण [चालचलन मेरे] रोंयाँ रोंयाँ में रमिरहाहै ॥ इति ॥

प्रौढ़ा अधीरा नायका ॥

लवर्ग कवित्त ५३ ॥

लाड़िलो लड़ावै लाड़ लाड़िली लड़ाई लड़ाई ललनी ललन

पन लेति लरिकाईं को । लखलखु लोचनहिं लहु लहु लाभालाभ
 लोक लाज लिपु लंगु लञ्छन लुगाईं को ॥ लाहत लड़ैती लाल
 लाहुनी लकीर लय लेनुलागि लली लुंगरील लम्पटाईं को । ली
 पतु ललन लागी लाती लतियावै लेउ लालीहू लखाहु लठियाउ
 लंगराईं को ॥ इति ॥

सखि प्रति सखिचनम् ॥

प्रसङ्ग ॥ ५३ ॥ एक समय ललितासखी महाराजसे
 रूठकर मानकर बैठतीभई तौ उसके मनावने को एक
 दूती जायकर यों उपदेशिक प्रार्थनाकर कहती भई
 कि देखु ॥

टीका ॥ ५३ ॥ [हे] ^१दुलारी [तेरेसँग] ^२लालजी तो [बड़ा] ^३प्यारकरते हैं
 [और तू उनसे नित्य] ^४मानकरैहै [भगड़ाकरैहै और] ^५नादान लड़कपन का
 बर्ताव ^६ग्रहण किया करैहै। [अपने] ^७नेत्रोंसे देखु देखु हानिलाभका सोच विचार
 कर [और] ^८संसारकी लज्जाको गहु [कुचलन] ^९स्त्रियों सी प्रकृती दूरकरु
 [सोंचु] ^{१०}प्यारी गोपाळलाल [तो] ^{११}विश्वासरूपी लीक खींचकर [तेरेसँग] ^{१२}प्रीति
 करते हैं [और] ^{१३}नादान [तूअब] ^{१४}ओखे व खोटे चाल चलनों को ^{१५}ग्रहणकरैहै ।
 ये देखु [अपने] ^{१६}प्यारसे बड़ीहुई ^{१७}प्रीति को पैरोंसे ^{१८}ठाकराय ^{१९}मिटायेडारैहै [इन]
 खोंटी प्रकृतियों को ^{२०}झोंड़ कुछ भलाई [करके] ^{२१}दिखाउ [तब मैं जानूं तू च-
 तुर है] ॥ इति ॥

उपदेश ॥

श्री हनुमान् ध्यान विनय ॥

लवर्ग कवित्त ५४ ॥

^१ ललित ^२ ललाट ^३ लटों ^४ लसित ^५ लवन्नताई ^६ लोललोल ^७ लोचन ल
^८ खन ^९ लोचवालहै । ^{१०} लाललाल ^{११} ललिताङ्ग ^{१२} लहरी ^{१३} ललकि ^{१४} लाल
^{१५} लकदक ^{१६} लुगराहु ^{१७} लहरात ^{१८} लालहै ॥ ^{१९} लंकृत ^{२०} लँगोट ^{२१} लंक ^{२२} लालहै
^{२३} लुंगील ^{२४} लस ^{२५} लैलहो ^{२६} लहातो ^{२७} लेप ^{२८} लेपित ^{२९} लदालहै । ^{३०} लाहुनि ल
^{३१} हान ^{३२} लहु ^{३३} ललन ^{३४} लगाउ ^{३५} लव ^{३६} लाड़िलो ^{३७} लँगूरपति ^{३८} लकुटिया ^{३९} बाल
 है ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ५४ ॥ श्री हनुमान्जी महाराज की कैसी
 शोभा है कि जिनका ॥

उपदेश ॥

^१ टीका ॥ ५४ ॥ ^२ सुन्दर ^३ उच्चभाल ^४ केशोंपर ^५ सुन्दरता ^६ सुहायमान ^७ सुभग ^८ सुभग
^९ नेत्र ^{१०} नम्रतावत् ^{११} चितवन । ^{१२} अरुण ^{१३} अरुण ^{१४} सुन्दर ^{१५} शरीरपर ^{१६} मनभावती ^{१७} ललियाई
^{१८} सोहायमान ^{१९} अनमोल ^{२०} साजों ^{२१} से ^{२२} सजा ^{२३} अरुणवर्ण ^{२४} का ^{२५} पटुका ^{२६} धारण ^{२७} किये ॥ ^{२८} कमर
^{२९} में ^{३०} सुहावनी ^{३१} रक्त ^{३२} लुंगीकी ^{३३} कछनी ^{३४} काछे ^{३५} यथोचित् ^{३६} चिमित्कारिक ^{३७} (शरीरमें) ^{३८} अ-
^{३९} तिश्य ^{४०} सिंदूर ^{४१} रंगका ^{४२} लेप ^{४३} लगाहुआ ^{४४} तथा ^{४५} चोला ^{४६} चढ़ाहुआ । (ऐसे जो ^{४७} मन ^{४८} बांछितप्रद
^{४९} पवनकुमार ^{५०} हैं ^{५१} तिनसे ^{५२} हेमन) ^{५३} नादान ^{५४} आनन्द ^{५५} भरे ^{५६} आनन्दों ^{५७} को ^{५८} प्राप्तकरा ^{५९} चाहे
^{६०} (तौउनसे) ^{६१} सुरतलगाव [^{६२} किनसे ^{६३} जोकि] ^{६४} प्राणजीवन ^{६५} वानरों ^{६६} के ^{६७} स्वामी ^{६८} गदा
 धारण करने वाले हैं ॥ इति ॥

लक्षितानायका ॥

सवर्ग कवित्त ॥ ५५ ॥

सुन्दरिः सुजान स्यान्सदन सलोनी सुठि स्यामसौ सनेहिके
 सगाइए सगावैगी । सांवेरे सुशील सन सुनऊं संदेश सुनु सौंनु सा-
 गरी समुक्त सुखन सजावैगी ॥ सारी सुकुमारनी सनेहिन सलो-
 नेहिं की सांभडी सकारे सुनुगत सो सुनावैगी।संगहीं सिधाऊं ल-
 लने सरा सवाऊं सब संक सियराऊं सांची सर्वहि सुभावैगी ॥इति॥

सखिप्रति सखिवचनम् ॥

प्रसङ्ग ॥ ५५ ॥ कोई एक दूती किसी एक सुकुमा-
 रिनीयौवना से बहु प्रकार चतुराई चलांकी से भरेहुये
 वचनोंकी रचना कर नखता से कहती भई कि ॥

टीका॥५५॥ (हे) सुखनवति सुन्दर रसीलीशोभावाली चतुराईकी स्थली ज्ञान-
 वती कृष्णमहराज से स्नेहकरनेके योग्य (जो) प्रीति है (सो) करैगी । (जो तू
 अंगीकार करै तौ मैं)-सुन्दर सुभाववाले गोपाललाल से खबर कर्क (हे) बुद्धि
 की सरिता ख्यालकर विचार देखु (जो मेरी शिक्षाको मानैगी तौ) बहुत से आन-
 न्द प्राप्त होयेंगे ॥ (और तू किसी तरहका संकोच न कर यह) समस्त व्रज अ-
 बला कृष्णहिं की मिलापिनी हैं ये सयाचार (तुझे) आजैकल में पालुम होजा-
 यगा । (तू किसी तरहसे घबराइये मत) (हे) धारी मैं तेरेसँग चलकर सकन
 वर्ताव बताय (तेरा) डर मिटायदूंगी (तव तुझे मेरा कहना) सब सच्चा पा-
 लूम परैया ॥ इति ॥

पक्षीनामानिवर्णन ॥ अथ खगानुमानसंख्या ॥ २८ ॥

सवर्ग कवित्त ॥ ५६ ॥

संकुली सुगंधिका सुनारिका ससैनासिपा संबुलादि सूरीसन
कुनि स्याहती तरा । सौला सुरभृंगि सोनचिरई सुआसफेद सर्व
सूली सनपिडुकी सुवाक सुंदरा ॥ सुभ्र सुकमारी सुरखाव सक-
खोर सुठि सुतरमुग सीलवाज श्यामचिल्हरा । सीनेवाज सास
सीमुर्ग सिकरा समूह श्यामा श्याम सुमिरै ललन सुख सा-
गरा ॥ इति ॥

टीका ॥ ५६ ॥ इसकवित्त में केवल पक्षियोंहीं के नाम वर्णन हैं इससे टीका
नहीं किया ॥ इति ॥

कपोतजातिवर्णन ॥ अथ क०जात्यनुमानसंख्या ॥ २९ ॥

सवर्ग कवित्त ॥ ५७ ॥

सालिषी सुरंग सीमतनिये सजांहपुरी सेवती सिराजी स्याह
सोसई सुहाने हैं । सुंदरासहावी सुहे सीनेवाज सर्वती सुन्हैरासेख
संदली सँजाफदार स्याने हैं ॥ सुख सब्ज सिर्जे सुलेमानी सो-
सनी सफेद सुर्मई सरोजी सुभ्र ललन सुध्याने हैं । सुन्दर सलो-
नियाँ सकील सान सोहैसुभ श्यामा श्याम श्यामा श्याम सोधै
सुख साने हैं ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ५७ ॥ इस कवित्त में केवल कबूतरों की
जाति वर्णन है इससे सरलताजान इसका टीका नहीं
किया ॥ इति ॥

शृंगारवर्णन ॥ अथ रंगानुमानसंख्या ॥ ३० ॥

सवर्ग कवित्त ॥ ५८ ॥

साजि स्यातुरीसपेद सोसनी सुन्हैरी सब्ज सर्दई सिंगफीसुख

सोसनी सुफालुकी । सेवती सिंदूरी सूही सहतूती संतरई संदली
सहावी सुलेमानी सपतालुकी ॥ सीपिकी सिराजी सो सागौनी
सर्बती सुस्याह सूसी साठनी सुरंग सोसई सुढालुकी । सल्मकी
सितारी सारी सोरहू सिंगारवारी ललन सहेलि सोहैं सगरी सुवा-
शुकी ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ५८ ॥ श्रीकृष्णचन्द्र महाराज के विवाहमें
जो भीष्मक नगरकी नागरी सर्व्व गुणआगरी रूपउ-
जागरी शोभाकी सागरी भरी सुहागभागरी नानाप्र-
कारके शृंगार साजकर आईरहीं तिनकी पोशाकों के
केवल रंग इस कवित्त में वर्णन हैं इसी से टीका नहीं
किया ॥ इति ॥

सखिशृंगार वर्णन ॥ अथ रंगानुमानसंख्या ॥ १५ ॥

सवर्ग कवित्त ॥ ५६ ॥

सेवती सफेद सुर्व संदली सुन्हैरी सब्ज सर्बती सहावीसुही
सुर्मई सुहानसो । सोजनी सिराजी सुलेमानी सोसहीसी स्याह
सारी सुभकारी सीससाजी सखियानसों ॥ सोलहूसिंगार सुकुमार
सो सभार साज सोहत समाज सर्व्व सुन्दरी सुजानसो । सिरसों
सरीर सबी सुन्दर सरूप सुभ्र सभिही समान सान ललन सवा-
नसो ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ५६ ॥ इस कवित्तमें भी रंगीन वस्त्रों के
नाम व सखियों की सूक्ष्म शोभा वर्णन है कोई छिष्ट
शब्द न होने के कारण से टीका नहीं किया ॥ इति

विप्रलब्धानायक ॥

हवर्ग कवित्त ॥ ६० ॥

^८ ^९ ^४ ^७ ^६ ^३ ^१ ^२ ^{१०} ^{११}
 हहरै हिवारी हहकारनी हुजूम हवा हेरी हे हितूनि हियहूलत ह-
^९ ^{१३} ^{१४} ^{१२} ^{१७} ^{१५} ^{१६} ^{१९} ^{१८} ^{२२}
 मार है । हमरे हितूहीरी हटायो हमसोंहिं हेत होनहार हाँसी हाह-
^{२१} ^{२०} ^{२७} ^{३३} ^{२४} ^{२५} ^{२६} ^{३०}
 जारन हँसार है ॥ हाँसैं हमभोली हेलि मेली ललनौ हमेश हा-
^{२८} ^{२६} ^{३१} ^{३३} ^{३२} ^{३६} ^{३४} ^{३६}
 लि ही हवेली हेचहोवती हिकार है । हिया हिलकावन हिलोरन
^{३७} ^{३८} ^{४०} ^{३९} ^{४४} ^{४२} ^{४३} ^{४१}
 हनावत हौं हेरति हरी हिसत हांथ ना हजार है ॥ इति ॥

सखिप्रति सखिवचनम् ॥

^१ ^२ ^३ ^४
 टीका ॥ ६० ॥ अरी सहेली (तुझने) देखा (यह जो) अतिशय उत्पातका-
^९ ^६ ^७ ^९ ^{१०} ^{११}
 री (व) शीतकारी पवनके भर्रोखे भकोरै हैं सो मेरे हृदयको बड़ी पीड़ा होती
^{१२} ^{१३} ^{१४} ^{१५} ^{१६} ^{१७}
 है ॥ (काहेसे) प्यारी मेरे (जो) सनेही हैं (उन्हीने) मुझसे प्रीति दूरकर
^{१८} ^{१९} ^{२०}
 रक्खी है (सो मैं जानो हैं कि मेरी) हँसी हानेवाली है हँसनेवाले (जगमें) व-
^{२१} ^{२२} ^{२३} ^{२४}
 हुत है हाय ॥ (वो मेरी) बराबरवाली (व मेरी) मिलने दिलनेवाली सनेहिनी
^{२५} ^{२६} ^{२७}
 (व) लघुवैसिनी भी (मुझे कृष्ण से रहिन देख) नित्यप्रति दुरावैगी (और
^{२८} ^{२९} ^{३०} ^{३१} ^{३२} ^{३३}
 मेरा जो) हृदयरूपी घर है (सो) कंपित होरहा है बुरी बदनामी होती है ॥ (ऐसी)
^{३४} ^{३६} ^{३६} ^{३७} ^{३८} ^{३९} ^{४०}
 दुःखों की लहरोंमें (मेरा) मन बूड़ रहा है (कि) मैं कृष्णमहाराज को खोज-
^{४१} ^{४१} ^{४२} ^{४३} ^{४४}
 ती फिरती हूँ (अरु) वो हजार (सहस्र) हाथ तक (करतक) नहीं दिखाई
 परै हैं ॥ इति ॥

पक्षीनामानिवर्णन ॥ अथ खगानुमानसंख्या ॥ १४ ॥

हवर्ण सवैया ॥ ६१ ॥

हंस हँसै हिंसकै हिंसकन् हबुआंय हमीर हजारनहीं ।

होरिल होर हवूहवकात हजारहु दास्तह हुदहुदहीं ॥

हस्नहुसेन हरेवनहुफ हरीहर हर्दिय हुकरहीं ।

हेलुहुकै हलुआंगिहरी हरएक ललन् हरपैहियहीं ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ६१ ॥ इस सवैयामें केवल पक्षियोंके नाम व उनके बोलचालों का वर्णनहै कोई गूढ़ शब्द न होने से इसका टीका नहीं किया ॥ इति ॥

खगनामवर्णन ॥ अथ पक्षीअनुमानसंख्या ॥ २६ ॥

गवर्ग व घवर्ग कवित्त ॥ ६२ ॥

गण गउगाई गोरखा गरिल गौरियान गिद्ध गिरगिटी गूना गुंजरी गहागरी । गुलई गुँदीला गारादल गुलुवदनादिगाहे गिल गिल गिरदानियाँ गहवरी ॥ घाघर घुरीला घसियारी घमछई घामा घुग्घू घुनखावा घन्नई घरैलघोररी । घुड़हाघेतल घोसलीन घीसुँ घीघनेहि घनश्याम ललन घोषेँ घरी घरी घरी ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ६२ ॥ इस कवित्तमें भी केवल पक्षियों के नाम वर्णनहै इसीसे इसका अर्थ नहीं किया गया ॥ इति देववाहनीय खगनामानि ॥ अथ विहंगानुमानसंख्या ॥ २० ॥

चौवर्गा ॥ छ.ज.भू.ट, कवित्त ॥ ६३ ॥

छांकर छजोहें छैल छपका छवीलेछज छांगुती छिकुई छिर्नखीनु छिन्नपंखीपर । जूथजमे जलासिंधु जुम्मस जलकुक्कुट जलमुर्गा-बी जुगुनूई जुराँ जल्लगर ॥ भीनेभींगुरी भँगारभामकें भँगगा भू-मक भानीभीनी भालरें भूकोरती भूलाभलर । द्वियां टिकुई ट-

टीरि टिपौलि टिटिहरि ललनहुँ टीपटापटेरै टुकहरीहर ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ६३ ॥ इस कवित्तमें भी केवल पक्षियोंके नाम वर्णन हैं कोई छिष्ट पद न होने से टीका नहीं हुआ ॥ इति ॥

सुरसवारिकखगनामानि ॥ अथ विहंगनामानुमानसंख्या ॥ ७ ॥

द्विवर्गा ठ.ड.कवित्त ॥ ६४ ॥

ठुमुकु ठुमुकुठुमुकत ठये ठीक ठीक ठोंकर ठवत ठर ठहरठहरकै ।
ठिकरई ठेंगरीनु ठाठउठके ठैत ठनक ठनक ठनकें ठुनकठरकें ॥ ड-
मरूली डूंमाडोंज डुँडपुँछीडोंगरीनु डोलें डोलडाल डटे डटाडट डर-
कै । डांगरे न डांगरे डिगें न डग डग डारे डोरीहि डाकोरजीसों
ललन पियरकै ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ६४ ॥ इस कवित्त में देवगण ईश्वर का स्मरण करतेहुये जिन वाहनीय विहंगमोंपर सवार होकर हरिदर्शनार्थ आवते भये केवल तिन पक्षियों का नाम वर्णन है इससे टीका नहीं किया ॥ इति ॥

देववाहनीय पशुपक्षीवर्णन ॥ पक्षी व पशु अनुमानसंख्या ॥ १२ ॥

चौवर्गा थ. द. ध. न. कवित्त ॥ ६५ ॥

थिरिक थिरिक थुन्थुन् थिरकें ललन थिक थर थर थोम थृथु-
नंगथामियां । दिव्य दिव्य दिग्गज दुदंत दंतिया दराज देवदल
दामिनते दुगुण दिपामियाँ ॥ धूतीहू धमकै धाप धापीहू धपाहें
धर धोबिन धमाकें धाके धूमधाम धामियाँ । नीलकंठ नरकुली
नील बांदरान नाक नकुत्रानिकुही नाग नौअन निनामियाँ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ६५ ॥ इस कवित्त में केवल सुरसवारियों

के पशु पक्षियों का नाम वर्णनहै गूढ़ार्थिक शब्द न जानकर इसका टीका नहीं किया ॥ इति ॥

देवयानपक्षीनामानि ॥ अथखगानुमानसंख्या ॥ २३ ॥

द्विवर्गा प. फ. कवित्त ॥ ६६ ॥

पीलूहू परेवापाखी पनडुब्बिया पतारी पिडुखी पतेरा पाढा पे-
पनु पयामहीं । पीलख पतैनाहुँ पतंग पिडुकी पिपीलपीन पुंज
पूंगे पैन पंडुक पुगामहीं ॥ फूजभूधिहू फलेन फूलमुर्ग फुदकून
फांदे फीलमुर्ग फाकता फरे फड़ामहीं । फुलालैन फुलवरी फरा-
सीसि फर्द पट फनुई फबील फवें ललनाभिरामहीं ॥ इति ॥

टीका ॥ ६६ ॥ इस कवित्तमें भी केवल देशतों की सवारी के पक्षियों का नाम वर्णन है इसी से इसकी भाषा नहीं हुई ॥ इति ॥

सखिशृंगार प्रभावरणन ॥ अथ रंगानुमानसंख्या ॥ ८ ॥

बहुवर्गी कवित्त ॥ ६७ ॥

१ २ ४ ६ ३ ७ १०
भिल्लिमली भलक्री भनी भान्गुली भमाकेदार भामई भमं-
६ ८ ९ ११ १२ १३ १४ १५
क भक्क भाड़दार भाउकी । टूली टापटी ठडूअ ठप्पेदार ठीकरीहु
१६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३
टसरी डोरई ढांकपाटनी ढराउकी ॥ ललना दुधील दूबी द्योलई
२४ २६ २९ ३० ३१ ३२ ३३
दमंकवत दारमी दराज दाखियाहु दमदमाउकी । धारे धूपछांहीं
३६ ३४ ३३ ३० २९ ३१ ३०
धोती धानियां धमारधर धीहें धीरवंत धूमधाम धक्ककाउकी ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ६७ ॥ इस इस प्रकार सखियाँ श्रीगोपाललाल के विवाह में शृंगार साज आवती भई ॥

सखिप्रति सखिवचनम् ॥

टीका ॥ ६७ ॥ (कोईतो) बनीचुनी छविदार सुन्दर महीन बसन की भँगुलिया

(कोई) साफ चमकदार बेलबूटे बपी भाऊ सरीखे रंगकी (सारी) पहिरेहुये (कोई) ११ १२ १३ १४ १५
 हूलीरँगकी (व) टापटी परकी (व) ठटुआ छेहुये वख (व) गेरुअई (कोई) १६ १७ १८ १९ २०
 सूती रेशमी टसरी (व) डोरिआ (व) ढाँकापाटन की सुडौल सींहुई॥ (कोई) २० २१ २२ २३ २४ २५
 सखी दूधिया रँगसी (कोई) घासके रँगसी (कोई) जर्द चिमितकारी (व) गहिरी २६ २७ २८ २९ ३० ३१
 गुलेसमालू (कोई) अनार के सुमन से गहिरी । धीर्यवान स्त्री न.नामकारके
 आभूषण संगन्धित रेशमी धूपझाँहीं (व) तेज धनिआई रँगसी सारियां पहिरेहुये
 सोहावती भई ॥ इति ॥

खगनामानिवर्णन ॥ अथ विहंगमानुमानसंख्या ॥ २१ ॥

द्विवर्गी ल. र. कवित्त ॥ ६८ ॥

लावा लमदुभी लेल लाललाल लालसर लामलहतोरा लहि
 बुड़िया लसालसे । लगघड़ ललाम लिजुकुल लालसुआ लख
 लीलकंठ लिटुक लखोरहू लखातसे ॥ रामचिरई खीना खरख रा-
 जरहिं खरुरइदासी रामा राजते रसालसे । राधावरी राधावर लल-
 न रटनरहै राजाजी रटन रामराम रसारामसे ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ६८ ॥ इस कवित्त में केवल पक्षियोंके ना-
 म वर्णन हैं इसीसे टीका नहीं किया ॥ इति ॥

सखिशृंगाखर्णन ॥ अथ रंगानुमानसंख्या ॥ १७ ॥

द्विवर्गी न. प. कवित्त ॥ ६६ ॥

नर्गिसी नवीनियां नखूनिहू नईनईहि नैनमुखी नैनूनीमई न-
 यावनीलकी । नीलीहू नरिंजीनोखी नर्यली निराली नीप ललना
 नुकीली नीकी नेहे नजरीलकी ॥ पीयरी पलासी पापुलैनियां प-
 तंगी पुनि पोहकी पियाजी पाकपानकी पिपीलकी । पन्नई पुदीनि

की पिंडोरी पिस्तई पुनीत प्रीते पुःखराजी प्रियाँ पटका पुरी-
लकी ॥ इति ॥

सखिश्रृंगार ॥ अथ रंगानुमानसंख्या ॥ १७ ॥

चौवर्गी फ. व. भ. म. कवित्त ॥ ७० ॥

फलालैनि फुल्बरीक फरासीसि फाकताई फालसाई फावती
फवन फहरानसी । बैजनी विशाल बूंदवार बादलाई बर बादली
बदामिया बसंतिहू बखानसी ॥ भँवरीलि भाँगी भड़कीली भड़-
कीली भल भोरी भोरी भली भली ललना भुलावसी । मूंगई मजी-
ठी मुलतानिया मयूरपंखि मासिया मलीदी मखतूलिया महा-
नसी ॥ इति ॥

सखिश्रृंगार ॥ अथ रंगानुमानसंख्या ॥ १५ ॥

चौवर्गी म. र. ल. ह. कवित्त ॥ ७१ ॥

माठहू पिलामी मौठी मल्मली मरीनि मंजु मोमई मजील मा-
निकीहु मोतिया महा । रोरिकी रँगेरे रंग रीति रीति राचे रुचि
राखी राती रूपहरी राजतीं रहा रहा ॥ लाल लंकलाटी लीला ल-
सहिं ललीत लख ललन लहाते लाखी लूगरा लहिलहा । हरे
हरताली हर्दि हिर्मिजी हजारहान हेमी हुरमतियाहु ही हमेल ही-
रहा ॥ इति ॥

सखिश्रृंगार ॥

अथरङ्गानुमान ॥ १६ ॥

दोहा ॥

माठ पिलामी मलमली मंजु मरीनि मटेल ॥

मोमी माजी मानकी महा मोतिया मेल ॥ १ ॥

रोरि रूपहिली रोचकी राखी रङ्ग रँगेर ॥

लाल लहरिया लीलई लाखी ललित लुँगेर ॥ २ ॥
 हरित हजारी हिरमिजी हरताली हरदेल ॥
 हेमी हुसमतिया हिये हीरन हार हमेल ॥ ३ ॥ इति ॥
 कपोत जाति वर्णन ॥

अथक० जात्यनुमान संख्या ॥ २९ ॥

द्विवर्गी ख. ग. कवित्त ॥ ७२ ॥

खाखी खूबसूर्त खिकेबंद खुर्दनुखे खूब खैरिये खतंगे खिम्से खि-
 निये खरेसे हैं । खीरिये खजूरी खोपरै खड़ील खाखमीन खंजनी
 खसीस खाजी खम्सई खुलेसेहैं ॥ गिरावाज गोले गुन्जागन्नई
 गुलाबी गण गेंदई गुटुरे गूँहँ गूँ गूँ गाजरेसे हैं । गंडेदार गुलेदार
 गुलेखार गंडुमीये गेहुयें ललन गूढ़ गुनन गरेसे हैं ॥ इति ॥

अथक० जात्यनुमान संख्या ॥ ३० ॥

कपोतजाति कवित्त ॥ ७३ ॥

चीनी चप चित्तीदार चुहरे चमेलियेच चुन्नई चुटीले चंदान
 नौ ललन प्रिया । चम्पई चँदनिये चौरीले चांदतारा चारु चितले
 छतीले जागजरचेहू जोगिया ॥ जंगली जलौनी जरदखहु जलं-
 धरीक भूपेदार टाटीटारु टीकेदार टर्किया । ठाठिया ठियारे ठक्
 ठक् ठीकठीक डंडबाज डीलडौल डोंगे ढिठियारे ढवीढाखिया ॥ इति ॥

अथक० जात्यनुमान संख्या ॥ ३४ ॥

कपोतजाति कवित्त ॥ ७४ ॥

तामड़े तिलकखे ताखी तालमार तहेवंद तीरा तूसी तेलिया
 तमोलिया तमीले हैं । तीतुरी तिलेचाताजी थिरोड़ान ललन
 जूदेल्हीवार दोंगिया डुवाजहू दमीलेहैं ॥ डुम्मेदरखंब डुपहरिये
 धुरील धूमे नीरजी निसाउड़ी निलाम्बरीक नीले हैं । पम्बई पिल-

कवे पुंज पेशौरीक पांय मोज फाकसी फतोईदार फूल पग पीले
हैं ॥ इति ॥

अथक० जात्यनुमान संख्या ॥ ३५ ॥

कपोतजाति कवित्त ॥ ७५ ॥

बिडुमी बदामी बहु बबरे बगूलईक भूरेभौरई ललनु मंजु मो-
दते महासु । मूंगई मिथील मोठई मकोइ मोमियारु मोचेमानू मै-
नाज्जाद मोतीचूर मैडुमासु ॥ मासल मटीले महामखियारे मासी
मुख मोजेदार मंगसी ममोलेहू मुँगेरियासु । मोजेगर्क रामपुरी
येलचिये हू हेरेरे ललिसरे ललांख लप लप लाखीलाल लम्डुमासु ॥

इति श्रीपण्डित ललनपिया विरचित ललनचन्द्रिका पूर्वार्द्ध
विभागसम्पूर्णम् शुभमस्तु ॥



ललनलहरी ॥

अर्थात् ललनसागरके चौथेभागकाहिस्सादोयमकी
भूमिका ॥

इस विभाग में अन्योक्ति श्रेणी अमित भाव सुख सृजेणी तथा पक्षीविलास, व प्रसूनप्रकाश, बानाकिराना, व मसालादि अनुमाना, विटप वर्णना, व सागभाजी विवर्णना, व्याख्यानतरु फलानु, व रङ्गणना विधान, पात्रणुशैली, व नकसिक गैली, तंडुलादि अनाजजाती वर्णन, व प्रकरण वस्त्रन, संख्या मिष्टान, व निमकीन सामान, पात्रसृजायक शस्त्रसूचनिका, व लोहपात्रस्य गणनिका, आभूषण प्रसंग, व रत्नादि तरंग, गोटा किनारी बाना, व भूमिका विसांतखाना इत्यादि अनेक रंगीले ढंगीले, व छबीले फवीले, व चटकीले मटकीले, व रसीले सुखसरसीले भावों में अनूठे अनूठे कवित्त अनेकनायकालंकार सम्पन्नित मुद्रित हैं यह ललनचन्द्रिकाका उत्तरार्द्ध द्वितीयभाग है यथानामा तथा गुणा यह ललनलहरी क्या है आनन्द की छहरी है रसोंमें गहरी है और भावों में जहरी है, अर्थोंकी नहरी और गूढ़तामें क्रहरी है, सोंगोंसे बहरी शुभ योगोंमें ठहरी है, भाआभरण पहरी और प्रभुपद सेवा की महरी है कि जिसको पढ़तेही मन लहराने लगता है प्रिय महाशयो लीजिये लीजिये इसकी लहरों में गोता लगाइये और अपने दुखरूपी तनमनका मैल धो बहाइये हरियश गुणगाइये मजेउड़ाइये कुछ बहुतमोल भी नहीं है मत सकुचाइये लोभको हटाइये मोल बिसाइये और इसे पढ़कर जो कुछ सुखउठाइये सो मुझे लिखपठाइये ता कि मैं आपको कोटिशय धन्यवाद दै अपने आपको कृतार्थ समझूं ज्यादा क्या लिखूं ॥ हरि ॐ तत्सत् ॥



अथ ललनचन्द्रिका का उत्तरार्द्धभाग ललनलहरीका मङ्गलाचरण ॥

दोहा ॥

अग्रणीय अग्रहि सुमिरि गौरी ललन गणेश ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश पद नमो शारदा शेश ॥ १ ॥
गुरु गोविंद दशरथ ललन सिय रुक्मिणी धनेश ॥
वेद विबुध कमला चरण वन्दहुँ संत सुरेश ॥ २ ॥
ललनचन्द्रिकाजमकप्रिय द्वितियविभामविशाल ॥
रचहुँ ललनलहरीललित अन्योक्ति क पदमाला ॥ ३ ॥
कृति नन्दन वन वाटिका कवित सुमनवर अङ्ग ॥
अलंकार सौरभ ललन हाव भाव रस रङ्ग ॥ ४ ॥
पात्र पुनीत प्रसंग भल अर्थअनुप हरियालि ॥
शाखाशब्द सुहावने ललन मनोहर चालि ॥ ५ ॥
भेद नायका रूपरस बहुप्रसंग शुभ ढंग ॥
ललन सुघरई सम्पन्नित मृदु मन मौज तरंग ॥ ६ ॥

अथवन्दनाश्रीगणेशजीकी ॥

कवित्त ॥ ७६ ॥

^५ वंदत ^१ प्रथम ^२ गणेश ^३ ईशपुत्र ^४ पद ऋद्धि सिद्धि नवौ निद्धि
^८ दासी ^७ नित जाके हैं । ^६ विष्णु ^९ औ ^{१०} विरञ्चि ^{११} शेश ^{१२} शंकर ^{१४} सुरेश ^{१३} देव
^{१८} अग्रणीय ^{१९} थापे ^{२०} सुख ^{२१} भौन ^{२२} वसुधाके हैं ॥ ^{२३} चारिफल ^{२४} मनशाके ^{२६} दाता
^{२९} नंत ^{३१} वित्त ^{३२} वर ^{३३} ज्ञानगूढ़ ^{३४} वृद्धिवृद्धि ^{३५} रक्षक ^{३६} लज्जाके हैं । ^{३७} ललन ^{३८} उ-
^{३९} माके ^{४०} प्रभुताके ^{४१} सिन्ध ^{४२} बांके ^{४३} हम ^{४४} सेवक ^{४५} सदाके ^{४६} शम्भु ^{४७} लाडिले ^{४८} ल-
^{४९} लाके हैं ॥ इति ॥ अथ सन्धि प्रकरणम् ॥

दाता+अग्ने+अनन्त=दातानन्त ॥ अर्थ दाता (देनेवाले)
 अर्थ अनन्त (अत्यंति अपार)

टीका ॥ ७६ ॥ पहिले गणन के स्वामी श्री महादेवजी के ललन (जो गणेशजी महाराज हैं तिनके) चरणों को प्रणाम करत हूँ (कैसे गणेशजी हैं) जिनके पास आठो धारिमादिक ऋद्धि सिद्धि व नवो निद्धि सदैव चाकरी रहें हैं । (और) विष्णु भगवान् व ब्रह्माजी व महिभारधारी शेषजी व महदेवजी व तेंतीसकोटि देवता व देवराज इन्द्र ने आनन्दरूपी धनके स्थल (जो गणेशजी हैं तिनहें) आदिपूजनीयकर स्थापित कररक्खा है ॥

(फेर गणेशजी कैसे हैं कि) अर्थ धर्म काम मोक्ष वाञ्छित फलोंरूपी श्रेष्ठ धन व विमलज्ञान व तीक्ष्ण सुमती के अत्यंति देनेवाले (और भक्तोंकी लज्जा जो) पति इज्जत रखनेवाले हैं ॥ पार्वतीजी के पुत्र प्रताप में अथाह समुद्र ऐसे जो श्रीमहादेवजी के प्राणप्यारे कुंवर श्री गणेश जी महाराज हैं हम तिनके सनातन के दास हैं ॥ इति ॥

ललनचंद्रिका द्वितीयविभागः ललनलहरीप्रारम्भः ॥

॥ ७७ ॥ मानवतीनायका मालिनी दूतिका प्रसंग पुष्पोंका ॥
अथपुष्पानुमान ॥ २४ ॥

जाही ॥ १ ॥ जुही ॥ २ ॥ बेला ॥ ३ ॥ केतकी ॥ ४ ॥ नि-
वारी ॥ ५ ॥ चंपा ॥ ६ ॥ चांदिनी ॥ ७ ॥ विप्रगुक्रान्ता (व)
कोइलिया ॥ ८ ॥ मालती ॥ ९ ॥ चमेली ॥ १० ॥ सेवती ॥ ११ ॥
इश्कपेंचा ॥ १२ ॥ मयूरपंखी व मोरपंखी ॥ १३ ॥ मोतिया ॥ १४ ॥
दोनामरुआ ॥ १५ ॥ वसंती व जर्द चमेली ॥ १६ ॥ गुलछब्बो व
गुलशब्बो ॥ १७ ॥ गुलाब ॥ १८ ॥ मोगरा ॥ १९ ॥ कदंब ॥
२० ॥ गुलेदावली ॥ २१ ॥ गुलेहजारा ॥ २२ ॥ पियावांसा ॥ २३ ॥
गुलेकचनार ॥ २४ ॥ इति

अन्योक्तिककवित्त ॥

जाही^३हु^४ जुही^५री^६ बेला^७ केतकी^८ निवारी^९ वीर^{१०} चंपतौ^{११} चांदनि^{१२} विष्णु-
१३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
क्रान्त छविछाई^{१३}है । रूपमाल ती^{१४} च^{१५} मेली^{१६} सेवती^{१७} हरीति^{१८} वर^{१९} तेरे^{२०} इश्क-
२१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९
पेंचा^{२१} में^{२२} मयूरपंखि^{२३} न्याई^{२४} है ॥ भनत^{२५} ललन^{२६} मो^{२७} तिया^{२८} वसंत^{२९} ही^{३०} गु-
३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९
लाब^{३१} बौरी^{३२} गुलछब्बो^{३३} मारुआ^{३४} ली^{३५} निठुराई^{३६} है । मो^{३७} गरा^{३८} परो^{३९} कदंब^{४०}
४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५०
दावदी^{४१} हजारा^{४२} बार^{४३} पिया^{४४} वास^{४५} धा^{४६} ना^{४७} कचनारि^{४८} ना^{४९} भलाई^{५०} है।इति॥

प्रसङ्ग ॥ ७७ ॥ किसी एक समय चन्द्रावलि सखी
कृष्णचन्द्र भगवान्से रूठि बैठी दिनभर होगया कि
महाराजकी सेवामें न पहुँची सायंकाल के समय जोकि
एक मालिनी सुमन आभूषण लेकर श्रीराधिकाजी के

वास्ते आया करतीथी तिसकी मार्फत श्रीकृष्ण महाराज उसे बुलवावते भये वो नारायण की आज्ञा ग्रहणकर उसके पास जाय कर यह कहती हुई कि अरी प्यारी तू ऐसी नादानी करती है कि बिना बातके वास्ते महाराज से रूठ बैठतीहै चल तुझे महाराजने बुलायाहै परन्तु क्रोधवश उसने उसके वचन का कुछ उत्तर नहीं दिया तो दूतीने अपने मनमें ये अनुमान किया कि मालूम परैहै कि एकतो चन्द्रचांदनी छिटक रहीहै और दूसरे गर्मी का मौसमहै अपने अपने भवन द्वारपर सबलोग बैठेहुये हैंस बोल रहेहोंगे उनके देखलेनेकी लज्जा से यह नहीं चलतीहै और न कुछ उत्तर देतीहै परन्तु उस समय घंटे सवाव घंटे में अंधियारी होजानेवाली थी ऐसा विचार कर संसारी वार्ताओंको कर उतना समय गुजारती भई जब अँधेरी रात होजाने परभी कुछ उसने चलने का विचार नहीं किया तबतो वो दूती चन्द्रावलि के प्रति फिर इस प्रकार कवित्त विरचि वचन कहती भई कि ॥

सखि प्रति मालिन दूतिका वचनम् ॥

टीका ॥ ७७ ॥ अरी प्यारी यहवार्ता भी (तैने) देखी (कि तेरे पास
 आये हुये मुझे) कितना समय व्यतीतहोगया कि चन्द्रउजियालीभी समाप्तहो
 अँधेरा होगयाहै ॥ (परंतु फिर भी तू कुछ चलने का विचार नहीं करती)
 और (हे) सखि सुन्दरि कृष्णमिलापिनि (तू) केवलश्याम सुन्दरहीसे (प्रीति)
 सेवन करनेवाली है सो (तेरे) सनेहरूपी जालमें (उन) घोरमुकुटधारी गोपाल लाल

का (मन फँसरहा है और इसमें जो कुछ मेरा कहना भूठ मानती होय तौ
 तू खुद) ^{२३}इंसाफ़ करलेनेवाली है ॥ (इतना दूतीके कहने पर भी कुछ उसने
 उत्तर न दिया तौ फेर वो इसप्रकार कहतीभई कि हे प्रिया तेरी मीति के बारे
 में तौ जब कभी मुझसे महाराजसे बातचीत होती है तब बोलो तेरी बड़ी मशंसा
 किया करतेहैं और) ^{२४}नन्दललन (यह) ^{२५}कहाकरतेहैं (कि वो) ^{२६}मेरी ^{२७}प्रिया ^{२८}स्त्रियों
 में ^{२९}शिरोमणि (मेरे) ^{३०}हृदयमें बसीरहतीहै (सो अरी) ^{३१}नासमुझ ^{३२}रूपवती (तैने)
 भली कठोरता धारण कररक्खीहै ॥ (देखु तेरी खुशामद करते करते) ^{३३}मेरा ^{३४}गला
 पड़गया (और) ^{३५}हजारों ^{३६}वक्तू (तेरे) ^{३७}पैर छुये (परन्तु तू न मानी अब भी सोच
 समझले) ^{३८}प्रीतम के निवासको ^{३९}चलु (औरजो) ^{४०}नहींचलैगी (तौ हे) ^{४१}नादान
 इस्त्री (इसमें) ^{४२}अच्छाई नहीं होयगी ॥ इति ॥

विप्रलब्धा नायका ॥

चिरीमारिनिदूतिका ॥

पक्षीविलास अथखगानुमान संख्या ॥ २४ ॥

लवा ॥ १ ॥ लाल ॥ २ ॥ तूती ॥ ३ ॥ फाक्का ॥ ४ ॥ कैवर
 ॥ ५ ॥ बटेर ॥ ६ ॥ बाज ॥ ७ ॥ भांक ॥ ८ ॥ कोकिला ॥ ९ ॥ चं-
 डूल ॥ १० ॥ अगिन ॥ ११ ॥ बहिरी ॥ १२ ॥ समन ॥ १३ ॥
 तीतुर ॥ १४ ॥ छौना ॥ १५ ॥ मैना ॥ १६ ॥ ममांख ॥ १७ ॥
 तोता वसुवा ॥ १८ ॥ बया १९ ॥ काकातुआ ॥ २० ॥ मराली
 व हंसनी ॥ २१ ॥ मोर ॥ २२ ॥ भुजैली ॥ २३ ॥ तिलोरी ॥ २४ ॥

अन्योक्ति कवित्त ॥ ७८ ॥

लवालाई लालकाहिं तू ती भईफाकतासो कैवर बटेर बाजआई
 १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
 ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
 हूं न पाई भौन । भांके को किला गई चँडूल अग्न रीति जाहि

^{२३} बहिरीगई ^{२२} समन ^{२४ २७} ती तुरी ^{२६} मिताई ^{२५} छौन ॥ ^{२८ २९} मैंनाहीं ^{३०} ममांख ^{३३} समुहायगी
^{३२} ललनके ^{३२ ३४ ३६ ३८} न तो ते ^{३६ ३७ ३९} बयानेह ^{४०} का हरीसों ^{४१} रिपुताई ^{४४} बौन । ^{४३} काकातू ^{४२} म-
^{४३ ४२ ४६} राली मोर ^{४७} सुयशु ^{४६} भुजैली ^{५०} घोर ^{४८ ५१} अपनो ^{४९ ५४ ५२} ति लोरी ^{५३} हित ^{५५} विरचै ^{५६} बुराई
 कौन ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ७८ ॥ एक चिरीमारिनि दूतिका जोकि श्रीकृष्ण महाराज के दरबारमें नित्यप्रति हाजिरी दिया करतीथी उससे किसी एक सुन्दरी से स्नेह उत्पत्ति होनेसे रोज सत्संग होने लगा तौ दूती प्रतिदिन सखि प्रति श्यामसुयश वर्णन कर हरि अनुरागमें उसका मन रमण कराय देती भई तौ एक समय उस सखीने दूतीसे कहा कि ऐसीभी कभी कृपाकर कि मेरे यहां भी महाराज को बुलाय लाउ ऐसेही जब कभी वो हरि चरित्र सुनाया करै तब तब वो महाराजके मिलनेकी अभिलाषा जताया करै एक दिन कहीं दूतीने करारकर लिया कि आज मैं जाय महाराज को बुलाय तुझसे मिलायेदेतीहूं ऐसे कहकर वो तो महाराज के घरकोगई वहां बैठे २ उसे दो पहरव्यतीत होगये कि महाराजको एकान्तमें न पाउने से प्रार्थना करनेका अवकाश न मिला और उस सखीने हरि आगमनकी खुशीकेमारे अपना घर चोत्रा चन्दनसे लिपाय सुन्दर सेज सजाय सोरहु शृंगार बत्तीसौ आभूषण सजकर बैठे बैठे हरिदर्शनाभिलाषामें दुइपहर बिताय देती भई महाराज के न आवने पर उस सखी के

मनमें यह निश्चय होता भया कि वो दूती मेरी मुँहदेखी कहिकर चलीगई जो महाराज को बोलाय लावना होता तौ अब तक दश दफा आय जाती मैंने नाहकके वास्ते इतना परिश्रम किया अब इस शृंगाररस का भोगने वाला कौनहै फिर मनै मन में सोचकर कहने लगी खैर न होय चलौ अपनी दूसरी सहेलीही से मिलिआऊं जो शृंगार करना तो सुफल होय घरमें ताला लगाय चलदेती भई अब जब उस दूतीने महाराज का एकाग्र चित्त देख अवकाश पाया तब उस सखी की प्रीतिरूपी विकलता का हाल कहि सुनाया भगवान् तो भक्तवत्सल हैं अपने वियोग में व्याकुल जान दूती को संग लेकर उस सखीके घरपर जोई आये तौ क्या देखते हैं कि उसके घरमें ताला पड़ा है सखी का कुछ पता निशान न पायकर दूती प्रति रिसाय अपने घरको लौट चलते भये दूतीने कई एक दफे तीर पड़ोस में पुकाराभी उसे न पाउने से महाराज के पहुँचावने को गोकुलपुरी में आय श्रीहरि को पहुँचाय अपने घरको चलने लगी तो मार्ग में सोंची कि ये सखी तो बड़ी ओछी है इस से प्रीति करना अच्छा नहीं अगर वो अपने मकान पर आगई हो तौ उसकी प्रीति को नमस्कार करदेना चाहिये कि इतने में सायंकाल होजाने पर वो सखी अपनी सहेली के यहां से अपने घर आवती भई दूती उसका खुला दरवाजा देख उस के घर जाय उसकी नादानी बताय समस्त व्यवस्था सुनाय

यों कहती भई कि तैंने जो मुझसे कहाथा कि कृष्ण
महाराज को मेरे पास बुलाय लाइये सो मैंतो ॥

सखि प्रति चिरीमारिनि दूतिका वचनम् ॥

टीका ॥ ७= ॥ लालजीमहाराज को बुलायलाई (और) तैं सखि कहीं अंत
चलीगई मैं कितनीवार वड़ेजोर से पुकारकर थकगई (तुझे) मकानपर नहीं पाया (तब
मैंश्रीगोपाललालको लौटार लेगई) ॥ अरी चांडालिनी तू किसकेघर मिलनेको चली
गई थी आंगीपरै इसवर्तावपर (बस अब तू श्यामके व मेरे) मनसे उतरगई सखी (तूने)
नंदलालसे प्रीति तोरलई (तबमानी) ॥ (ऐसा दूतिका वचनसुन सखि शंकित है
विनयवत् समस्त हाल वर्णनकर यों कहतीभई कि) मैंने नहींजाना (कि तू इतनी
देरकरके महाराजको बुलाय लावैगी तो मैं कहीं ना जाती खैर अब मेरा अपराध
क्षमाकर अब तू कल महाराजको बुलाय लइये इतना सुन दूती बोलती भई कि मैं अब
न बुलाय लावोंगी क्योंकि एकदफे तो मैं महाराजसे भूँठी पर चूकीहूँ और अब)
मेरी आंख नन्दलालके नहीं सामने होस स्तीहै तेरे संग (मैंने) प्रीति क्या करी (च-
परे) कृष्ण महाराजसे दुश्मनाई भईजातीथी ॥ (और जो मैं तेरे साथ फेर ऐसा
रुक्ं तौ) हे मेरी गोरी क्याक्या तू (मुझे) बहुतसा इनाम वकसीस दैदेयगी
(हे) सखि (ऐसी) प्रीति तो अपनी घरमें उठाय रक्खो (मैं दरगुजरी तुम्हारे
पीछे नारायण से) विरोध बिगार कौन पैदाकरै ॥ इति ॥

विरह निवेदन भाव ॥

प्रोपितपतिकानायका ॥

पंसारिनि दूतिका जिला किराने का ॥

अथमसालानुमानसंख्या ॥ ३१ ॥

सून (व) निमकपांचौ ॥ ५ ॥ राई ॥ ६ ॥ स्याह मिरच ॥ ७ ॥

सुख मिरच ॥ ८ ॥ सफेद जीरा ॥ ९ ॥ कालाजीरा ॥ १० ॥ आजमोद व अजमोद ॥ ११ छोटी हड़ ॥ १२ ॥ बड़ी हड़ ॥ १३ ॥ काकरासिंही ॥ १४ ॥ सोंठ घारकी ॥ १५ ॥ सोंठ बैतरा ॥ १६ ॥ रसवत (व) रसौत ॥ १७ ॥ छोटी पीपल ॥ १८ ॥ बड़ी पीपल ॥ १९ ॥ कस्तूरी ॥ २० ॥ बालछड़ ॥ २१ ॥ मुलहट्टी (व) मुँठी ॥ २२ ॥ तून ॥ २३ ॥ तज ॥ २४ ॥ कत्था ॥ २५ ॥ सुपियारी (व) सुपारी ॥ २६ ॥ हालों ॥ २७ ॥ किसमिस ॥ २८ ॥ धनियां ॥ २९ ॥ जाफल (व) जायफल ॥ ३० ॥ करपूर (व) कपूर ॥ ३१ ॥

अन्योक्तिककवित्त ॥ ७६ ॥

१२ ११ ४ ३ ६ ६ १ २ ९ ४
 वारुंनोंनराईमिर्चजीरा तो उदास किमि सखिआज मोदमोर
 ७ १० १४ १९ २३ २६ २७ २९ ३० ३८
 हरिसों हिरायगो । का करा सिंहिककुल सोंठिहुयवैठरहि रसवत्
 १८ २१ २० २९ २२ २६ २६ २४ २३ २७ २६ ३० ३८
 कहूजी पीपर वसुआयगो ॥ ललन कस् तू री बाल मुलहट्टी तू
 ३१ ३२ ३४ ३३ ३६ ३६ ३७ ३८
 न तज कत्थो सुपियारी हाल किसिमस् छिपायगो । धनियां
 ४१ ४० ३९ ४२ ४३ ४४ ४४ ४६ ४७ ४८ ४९
 डुरौ न मोहिं जा फल चहँगी तैं सो करपूरदूंगी शोच सगरो
 ६०
 नशायगो ॥ इति ॥

विरहिनी प्रति पंसारिनि दूतिका वचनम् ॥

प्रसङ्ग ७६ ॥ एक पंसारिन दूतिका और किसी एक परमसुंदरी से पररूपर परममित्रता थी रोज सत्संग रहा करताथा एकदिन पंसारिन दूतिका उसके घर आनि उसका मन उदास देखकर अपने मनमें शंका करती भई कि मालूम होताहै मेरी सुकुमारि सहेलीको

किसीकी नजर होगई है उसकी नजर उतारने के वा-
स्ते इरादा कर यूं पूंछती भई कि ॥

सखिप्रति पंसारिन दूतिका वचनम् ॥

टीका ॥ ७६ ॥ (हे) प्यारी ^१ इससमय ^२ तेरा मन ^३ क्यों ^४ मलीन है ^५ नारायण की ^६
कसम (तुझे उदास देखकर) मेरे (भीषनका) ^७ सुख जाता रहा (तुझे किसी की ^८
नजर तो नहीं होगई है) ^९ नोनराईमिर्च ^{१०} उतारदूं (वताउतो) ॥ मर्दानिकुलकी (जाई ^{११}
यह) कौनचरित्र रचकर ^{१२} चुपचाप खामोश ^{१३} हुई बैठी है ^{१४} खुशीसे (मुझे) ^{१५} जतायदे ^{१६}
(तेरा किसी) ^{१७} पराये पिया से तो मन नहीं ^{१८} फँसगया है ॥ ^{१९} अरी तैं ^{२०} कैसी ^{२१} नादान ^{२२} स्त्री है ^{२३}
जो तैं ^{२४} अपनी जिदको नहीं ^{२५} दूरकरती (हे) ^{२६} लाडिली (मुझसे) ^{२७} कहिदे (ये) ^{२८}
भेद कौनबहानेसे ^{२९} छिपसकैगा ॥ ^{३०} सखि मुझसे ^{३१} मन ^{३२} छिपाउ ^{३३} जिस बातकी ^{३४} तू चाहना ^{३५}
करती होयगी ^{३६} उसे (मैं) ^{३७} पूराकर ^{३८} देखूंगी (और ये तेरा) ^{३९} दुःख ^{४०} सब ^{४१} दूरहो ^{४२} जायगा ॥
इति ॥

प्रौढा परकिया नायका ॥

मालिनिदूतिकाजिलावृक्षों का ॥

अथ विटपानुमान संख्या ॥ २१ ॥

आम ॥ १ ॥ इमली ॥ २ ॥ आमिला ॥ ३ ॥ शरीफा ॥ ४ ॥ सर-
स (व) सिरस (व) सिरसा ॥ ५ ॥ बड़ (व) बरगद ॥ ६ ॥ पा-
कर (व) पकरिया ॥ ७ ॥ सरों ॥ ८ ॥ सफरी (व) अमरूद ॥
९ ॥ बेरभरबेरी (व) बेल ॥ १० ॥ जामुन ॥ ११ ॥ अनार ॥
१२ ॥ अनेक प्रकारिक नीबू यथा विहारी ॥ १३ ॥ कठा ॥ १४ ॥
कशमीरी ॥ १५ ॥ कागदी ॥ १६ ॥ खट्टा ॥ १७ ॥ मलगल ॥

१८ ॥ विजौरा ॥ १६ ॥ इत्यादि तोर (व) तिनस ॥ २० ॥
सैजन (व) सैजना ॥ २१ ॥ इति ॥

अन्योक्ति ॥ कवित्त ॥ ८० ॥

जानैनाहिं आमजन इमि लीलानूप रचु तोर आमिलेते मन
मोर दून हैगयो । चाल जो शरीफी मुख सरसै सजनि बड़ पाक-
रके तोहि जी अदेश न्यून हैगयो ॥ सरो अबकाज गम साफरी
बंधायनाथी बेरबेर कहूंथी ये का जिमून हैगयो । गो आनारिको
मिलैगो नन्दको ललन किमु हौलदिल मुहि विहारी विदून है
गयो ॥ इति ॥

(मालिनि दूतिका प्रति सखि वचनम्)

प्रसंग ॥८०॥ एक सखी नारायण की परमदर्शना-
भिलाषिन उस मालिनदूती से जो कि श्रीकृष्णजी से मि-
लनेके वास्ते प्रतिदिन कहा करती थी उससे यह क-
हतीभई कि ॥

टीका ॥ ८० ॥ (अरी बीर कोई) ऐसा सुन्दरउपाय करु (कि जिसमें) कोई
आदमी जाननपावै तेरे आनमिलनेसे मेरे जीको हिम्मत बँधगई ॥ (क्योंकि) हे
सखि भलमंसीही के चलन में अत्यंत आनन्द उपजैहै तुझे मिलकरके (मेरे)
मनका खटका जातारहा यानी थोड़ा होगया ॥ (बस मैंने जानलिया कि मेरा)
अबकाम सिद्धहोजायगा मेरेतो कुञ्ज बनाये नहीं बनता था वारंवार कहा करती
थी (कि) यह क्या खराबी पैदा होगई है ॥ (काहेसं कि) मुझसरसिखी कुबु-

३६ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२
 द्विनीको नंदलाल काहेको मिलैगे मेरे तो मनमें गोपाललाल विना हौला समाय
 गयाथा (यानी मैं उनके बगैर सिङ्गनसी होरहीथी) ॥ इति ॥

प्रोषितपतिका नायका ॥

पनसारिन दूतिका प्रसंग किराने का ॥

अथ किरानानुमान संख्या ॥ २६ ॥

जावित्री ॥ १ ॥ कामराज ॥ २ ॥ सज्जी ॥ ३ ॥ सनाय ॥ ४ ॥
 अगर ॥ ५ ॥ तगर ॥ ६ ॥ त्रिफला याने हड़ बड़ी ॥ ७ ॥ बहेरा ॥
 ८ ॥ आमला ॥ ९ ॥ हड़छोटी ॥ १० ॥ सरफोंका ॥ ११ ॥ लोहवा-
 न (व) लोबान ॥ १२ ॥ तेजपात ॥ १३ ॥ मैनसिल ॥ १४ ॥
 करपूर (व) कपूर ॥ १५ ॥ छोटबड़े गोखुरू ॥ १६ ॥ सोंफ ॥
 १७ ॥ नौनपांचौ यथा सेंधा ॥ १८ ॥ काला ॥ १९ ॥ साम्हर ॥
 २० ॥ छाटा (व) खारी ॥ २१ ॥ विड़नोंना ॥ २२ ॥ जीरास्याह
 ॥ २३ ॥ जीरा सफेद ॥ २४ ॥ जरिश्क ॥ २५ ॥ आजमाइन
 (व) अजमाइन ॥ २६ ॥ मैनफल ॥ २७ ॥ अजमोद ॥ २८ ॥
 तोतिया (व) तूतिया ॥ २९ ॥ इति ॥

अन्योक्ति कवित्त ॥ ८१ ॥

११ १० ९ २ ४ ३ १ ६ ७ ६
 जावि त्री री कामराज सज्जी है सेना अगर त्रिफलादि सर फोंका
 ८ १४ १९ १६ १७ १२ १३ १८ २१
 दार लैहदाय कै । लोहवानते तगर तेजपाते मैनशिल उर करपूर
 १९ २० २२ २७ २८ २९ २६ २३
 देंगे गोखुरू से जाय कै ॥ सोंफियानी नून भई जीरा जरि इश्क
 २४ ३४ ३० २९ ३१ ३२ ३३ ३६ ३८ ३९ ३७ ३९
 माहिं आजमाइन री हाय मैनफल तायकै । आजमोद हो तोतिया
 ४२ ४० ४१ ४३ ४४ ४७ ४६ ४९
 पास जो ललनपियाकारो निमकैहराम करतोका आयकै ॥ इति ॥

प्रसंग ॥ ८५ ॥ एक विरहिनी जोकि अपने पतिके वियोगमें अत्यन्त खेदित यौवन उमंगसे भर रही थी तिसको कामोद्दीपन करनेवाली जो वर्षाऋतु चन्द्र बलाहकोंसे पूरित उस समय उस रूपवती नवयौवना को देख कर उसकी मित्र मालिन दूती ने अपने मनमें यह विचार किया कि कहीं इस सुकुमारि पर किसी रसिक जनकी दृष्टि न पड़जाय तो फिर ये हाथ से बेहाथ हो जायगी इसी कारण उसकी सहायक बनकर उससे ये कहिती भई प्यारी देखु इस समय जो घनघुमंडनि सुखमंडनि छवि नभमंडल छाई है और इसी दल बादल के साथ ॥

सखिप्रति पंसारिन दूतिकावचनम् ॥

टीका ॥ ८१ ॥ जो काम देवने (अपनी) ^१ सैना (ऐसी) ^२ सजाई है (कि) ^३ तीन ^४ २
 फलके (पैनी) ^५ धारवाने ^६ बाण ^७ ग्रहण ^८ कियेहै ^९ अरी ^{१०} अबला (तू इस वक्त यहांसे)
 चलीजा ॥ मदनके ^{११} बाण ^{१२} लोहे ^{१३} के ^{१४} बाणों ^{१५} से भी ^{१६} अत्यंत ^{१७} पैने ^{१८} हैं (वो तेरे) ^{१९} हृदयको
 गऊके ^{२०} खुरों ^{२१} के ^{२२} समान (दागों से चिह्नित कर) पूर्ण ^{२३} बिदीर्ण ^{२४} करदेयेंगे ॥ (ऐसा
 चुनकर ^{२५} घो) ^{२६} नाजुक ^{२७} बदनी (जिसका ^{२८} कि) ^{२९} चाहरूपी (विथा) में जी जलाहुआ
 (दुखितहुई ^{३०} अपने ^{३१} मन ^{३२} मनमें) ^{३३} छोटी ^{३४} व थोरी ^{३५} होजाती ^{३६} भई ^{३७} ठंठी ^{३८} श्वासें ^{३९} भरकर (क-
 हित्ती ^{४०} भई ^{४१} कि) ^{४२} अरीवीर ^{४३} मन्मथने (अपने) ^{४४} बाणोंको ^{४५} पैनाय ^{४६} कर (मुझ ^{४७} जली
 हुई ^{४८} को ^{४९} आनकर ^{५०} फेर) ^{५१} जलाया (तथा ^{५२} आजमाया ^{५३} क्या ^{५४} कहां ^{५५} अपसोस ^{५६} है) ॥
 प्यारी ^{५७} इस ^{५८} समयतो ^{५९} तब ^{६०} सुख ^{६१} प्राप्तहोता ^{६२} जो ^{६३} कहीं (मेरा) ^{६४} प्यारापिया (मेरे) ^{६५} ती-

रहोता (तौफिर यह) ^{४३} कालेमुहका ^{४४} दगाबाज (मनोज) ^{४६} यहां आनकर (मेरा)
^{४६} क्या बनायलेता ॥ इति ॥

॥ शीक्षाभाव ॥

॥ मध्या धीरानायका ॥

॥ कबड़िनि दूतिका प्रसंग सागतरकारीका ॥

अथसागानुमानसंख्या ॥ २५ ॥

बैंगन ॥ १ ॥ तोर (व) तोरई ॥ २ ॥ आंवला (व) औरा
 ॥ ३ ॥ आसकी फलियां ॥ ४ ॥ सलगम ॥ ५ ॥ भिंड ॥ ६ ॥
 भिंडी ॥ ७ ॥ बंधागोभी ॥ ८ ॥ आलू ॥ ९ ॥ परवर ॥ १० ॥ करे-
 ला (व) करेल ॥ ११ ॥ अरबी (व) घुईयां ॥ १२ ॥ सागपालक ॥
 १३ ॥ कचनारकीकली ॥ १४ ॥ लौकी ॥ १५ ॥ बाहु बाहु की
 छियां ॥ १६ ॥ करमकल्ला ॥ १७ ॥ सोयाका साग ॥ १८ ॥ लह-
 सुन ॥ १९ ॥ पियाज ॥ २० ॥ मूलकंद यथा सकरकंद ॥ २१ ॥
 जिमीकंद ॥ २२ ॥ खंत ॥ २३ ॥ मोरी (व) मूली ॥ २४ ॥ साग-
 चूका ॥ २५ ॥

॥ अन्यौक्तिक कवित्त ८२ ॥

^{२ ७} वै गन रहे हैं ^१ दिन ^{३ ४} तोर आभिले की ^६ आस ^{१३ ११ ८} सलगम ^{१२} हीय ^{१०} भिंडु
^{१०} बन्ध गये ^९ आलरी । ^{१ १४ १६ १६ १८} पर वर ^{१९} लेखु ही ^{१७} करेल ^{२३ २० २१ २२} उनको री तैं तो ^{२४ २५ २६} अरबी
^{२८ २५ २६} मिली पै ^{२८} वो पालक ^{२७} कचनारली ॥ ^{३० ३४ ३२ २९} लौकी कहु ^{३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ४१ ४२ ४० ३६} बाहुबाहु ललन
^{४४ ४३ ४५ ४७ ४८ ४६ ४९ ५०} लागी सराहु ^{५१ ५३ ५४} कर्म कला ^{५१ ५३ ५४} सोया नीरु ^{५१ ५३ ५४} लहि सुनी ^{५१ ५३ ५४} वालरी । ^{५१ ५३ ५४} अबतो
^{५१ ५३ ५४} पि आज ^{५१ ५३ ५४} मिलु ^{५१ ५३ ५४} मूलि ^{५१ ५३ ५४} बात ^{५१ ५३ ५४} मोरी ^{५१ ५३ ५४} सुनु ^{५१ ५३ ५४} चूका ^{५१ ५३ ५४} जो समय ^{५१ ५३ ५४} न हाथ ^{५१ ५३ ५४} आवै
^{६२} तिहुँकालरी ॥ इति ॥

प्रसंग ॥ ८२ ॥ एक समय ललिता सखी श्रीकृष्ण
महाराज से मानकर बैठती भई उसको मनावने के
वास्ते कबड़िन दूती आन कर यह कहती भई कि ॥

॥ सखि प्रति कबड़िन दूतिका वचनम् ॥

टीका ॥ ८२ ॥ अरी प्यारी गोपाललाल जी महाराज तेरे आनमिलने की
आशाके दिवस शुमार कर रहेहैं (और ये हाल हो रहा है कि जिनके) हृदयमें
बाल बांधें दुखोंके वृन्द विधगये हैं ॥ परंतु देखु (इतनी खैरियत व) कुशल (है
कि) कृष्ण महाराजका हृदय कड़ा है तू ऐसी अजूबा खी (उनके) पालेपड़ी है
तिसपरभी वह (तुझसरीखी) नादानसे निवाह करने वाले हैं ॥ (मैंतेरी कुञ्ज
भी बड़ाई नहीं करतीहों वो जो तुझसे) नन्दलाल की लगन लगगई है (उ-
सकी) भलाई वा बड़ाई करु (और तेरी) करनी का फल वह अच्छा है (याने
तू नशीब वर है) अरी पिया (तैंने मेरी बात) देखी सुनी ॥ (खैर जो कुञ्ज भया
सो भया) अबतो (तू) इस समय पिया से (चनकरके) भेंटकरु मेरे मुख्य
वचनपर ध्यानदे (क्योंकि) गया वक्त (फिर) तीनोंकाल नहीं भितसक्त है ॥ इति ॥

॥ विश्रब्ध नवोदा नायका ॥

॥ काञ्चिन दूतिका ॥

॥ प्रसंग ऋतुफलानि ॥

॥ अथ फल अनुमान संख्या ॥ २० ॥

मकुइयां ॥ १ ॥ फालसे ॥ २ ॥ सरफारेवड़ी ॥ ३ ॥ खिरनी (व)
खिन्नी ॥ ४ ॥ करौंदरा (व) करौंदा ॥ ५ ॥ अंगूर ॥ ६ ॥ पेंवदी (व)
देर भरबेरी ॥ ७ ॥ जामुन (व) जमुनी ॥ ८ ॥ नींबू ॥ ९ ॥ अम्बु (व)

आम ॥ १० ॥ अमरूद ॥ ११ ॥ मीठा (व) मिट्टा ॥ १२ ॥ विही ॥
१३ ॥ सेव ॥ १४ ॥ नासपाती ॥ १५ ॥ नारंगी (व) नरंगी ॥ १६ ॥
अनार ॥ १७ ॥ बेल ॥ १८ ॥ खरबूजा ॥ १९ ॥ चकोतरा ॥ २० ॥

॥ अन्योक्तिक कवित्त ॥ ८३ ॥

नाहीं तो मकैयां फालसे न सफ़ारेउड़ी न खिरनी करौंदा ना
अँगूर गदराने हैं । बेरपेंवदीहू नाहिं जामुनी न नींबू नाहिं अम्बु
अमरूद नाहिं मीठा मनमाने हैं । विही सेव नासपाति निपट न-
रंगी नाहिं नोखी ना अनार है न बेल गुठलाने हैं । खर्बुजा सृजाने
हैं चकोतरा न ध्याने अलि ललन पनै में स्यान रतिक दृढ़ाने
हैं ॥ इति ॥

नवोदाप्रतिकाछिनिदूतिकावचनम् ॥

प्रसंगार्थ ८३ ॥ कोई एक लघु अवस्था वाली सखी
जोकि रतिभाविक चिह्नों से रहित उसकी अत्यन्त चा-
लांकीकी चतुरई देखकर एक काछिनि दूतिका जोके
निम्नलिखित इसकवित्तमें फलोंके नामहैं तिनकी अंतसे
आदि के फलकी समता देकर उससे इस प्रकार प्रष्ण
करती भई ॥ कि हे सखि इन समताओं मेंसे एक चिह्न
भी तेरे शरीर पर भाषित नहीं होते हैं परंतु तुझे ल-
ड़कपनमेंही रति संबंधी चतुरई याद होगई है सो तुझे
कौन चतुरके सतसंगसे ये गुण प्राप्त हुआहै ॥ इति ॥

॥ अज्ञात यौवना नायका ॥

॥ मुगलानी दूतिका प्रसंग मेवाका ॥

॥ अथ मेवानुमान संख्या ॥ १३ ॥

अकरोट ॥ १ ॥ किसमिश ॥ २ ॥ झुंकफली (व) झुंगफली ॥

३ ॥ पिस्ता ॥ ४ ॥ बादाम ॥ ५ ॥ छुआरा ॥ ६ ॥ चिलगोजा ॥ ७ ॥
मीठा (व) दार्मी अनार ॥ ८ ॥ अंजीर ॥ ९ ॥ गरी (व) गोला ॥
१० ॥ आवजोरा ॥ ११ ॥ अंगूर ॥ १२ ॥ लीची ॥ १३ ॥

॥ अन्योक्ति कवित्त ॥ ८४ ॥

अकरोटै^१ किसमिसि^४ हृद^६ मूक^३ फली^७ बाल^८ पिस्ताँ^२ ठाँ^९ बादाम^{१०} भई^{११}
छुआरा^{१३} सी^{१४} शालेरी^{१५} । चिलगोजाँ^{१६} है^{१७} अनारि^{२०} मायके^{१९} जननि^{२८} तातु^{२१}
होंय^{२४} अनजीरा^{२६} रहें^{२७} फेरनासम्हाले^{२७} री ॥ गौरी^{२८} गरियात^{२९} हाय^{३०} पीर^{३०}
तो^{३१} सहीनजाय^{३२} आव^{३३} जोरा^{३४} हानी^{३५} कहा^{३५} फोड़ा^{३६} अंगुराले^{३६} री । ल-
लनि^{३९} निकाम^{४१} मोरि^{४२} लीची^{४३} भई^{४३} बात^{४३} गोरि^{४०} कै^{४७} कल्लु^{४६} यतन^{४६} वीर^{४८} वैद्य^{४९}
धौं^{४८} दिखाले^{६०} री ॥ इति ॥

प्रसंग ॥ ८४ किसी एक केलिरस भाव भेदके न
जानने वाली सुन्दरी को अपने उरोज आदरसहो आ-
उने पर इस्तन इस्थलके खेदकी व्यथासे पीड़ितहो एक
अपनी परम सनेहिन मुगलानी दूतिकाके पास आनकर
एकांतमें उससे ये पूछती भई कि ॥

मुगलानीदूतिकाप्रतिसखिवचनम् ॥

टीका ॥ ८८ ॥ हे सखि (कुछ मुझे समझ नहीं पड़ता है कि मेरा) उरस्थल^३
कौन कारण से दुखता है (मैं) मौन गहे (वैठी सकाय सी गईहूँ मेरी) छातियोंकी^१
जगह (बदअर्थ सूनना खराबी आम अर्थ सब विलकुल बद अर्थ आम तिसका
हुआ बादाम अर्थ) सबसूज गईहैं^{११} छुड़जाने पर (हृदय पर) आरा सा चल^{१२} ^{१३} ^{१४} ^{१५}

जाय है आरा एक लोहे का शस्त्र है जिस्से काष्ठादिक चीरा जाता है ॥ अरी-
 वीर (जो मैं) नादान बनकर रुदन करूं (तो मैं) नैहर (में अपने बाबुल की
 परम लाडिली हूं जो कहीं मेरी व्यथा को जान पावें तौ मेरे) माता पिता घब-
 राय जावें फिर किसी के समझाये नहीं समझैं ॥ अरी सखि (मैं) ठंढी श्वासैं
 भरा करती हूं दर्दरेदर्द (अब मुझसे) दुःख नहीं सहन किया जाता है (मेरी
 मुख की) शोभा (तनुकी) उमंग घटगई है क्या जानें (मेरे दो) फुडियां
 निकल आई हैं ॥ अरी प्यारी सखी वृथाकेवास्ते मेरी बदनामी हुई जाती है
 (तू) सखि कोई उपाय बताउ या (कोई) हकीम को दिखवाय दे ॥ (कि
 जिस में मेरा दुख दूरि होजाय) इति ॥

॥ शंकाभाव ॥ परकिया नायका ॥

॥ रंगरेजिन दूतिका प्रसंग रंगोंका ॥

॥ अथ रंगानुमान संख्या ॥ १८ ॥

सेवती ॥ १ ॥ गुलाबी ॥ २ ॥ और गुलाबी शब्दमें से गुल अ-
 लग करदेने से निकला आवी ॥ ३ ॥ अरुण यानी महिरागुलाबी
 ४ ॥ शर्वती ॥ ५ ॥ बांसी ॥ ६ ॥ सेत (व) सफेद ॥ ७ ॥ लाल
 (व) सुख ॥ ८ ॥ सुनहैला ॥ ९ ॥ अवीरी ॥ १० ॥ स्याम (व)
 काला ॥ ११ ॥ पियरो (व) पीला ॥ १२ ॥ पड़ोरी (व) पिंडोली
 १३ ॥ गेहुंआं ॥ १४ ॥ किशमिसी ॥ १५ ॥ सोसनी ॥ १६ ॥ क-
 सीसी ॥ १७ ॥ सुलेमानी ॥ १८ ॥

अन्योक्तिक कवित्त ॥ ८५ ॥

सेवती गुलाबी हरी अम्बुज अरुण पाद शर्वती वचनवारि

^{१०} ^{११} ^{२४} ^{२३} ^६ ^१ ^४ ^३ ^२ ^{२६}
 बंशुरी बजैयाको ॥ सेतमेत लाल सुन हेरी ए आ वीरि बर मदन
^{२६} ^{२७} ^{२९} ^{२८} ^{२१} ^{२२} ^{२९} ^{१७}
 जगावै श्याम बर्ज यदुरैयाको ॥ पियरो पड़ोरी गात गेंहुआं
^{२०} ^{१८} ^{१६} ^{४२} ^{४३} ^{४६} ^{४४} ^{४६} ^{३१}
 होरंग मोर किसमिसी मिलौंगी नंदललनै कन्हैयाको ॥ दुखसों
^{३२} ^{३०} ^{३३} ^{३४} ^{३६} ^{३६} ^{३७} ^{३८} ^{४०} ^{४१}
 सनीक शीश आफत चढ़ी है मोर सांचु सुले मानी मोहिं डरहै
^{३६}
 घरैयाको ॥ इति ॥

॥ रंगरेजिनि दूतिका प्रति सखिवचनम् ॥

^१ ^२ ^३ ^४ ^६
 टीका ॥८५॥ येरी सुन्दर सखी आउ (मेरी विथाको) समुझकर देख (मेरा
 जो) गुल अग्रे आबी इन दो शब्दों का एक शब्द बना ॥ गुलाबी ॥ गुल × अर्थ फूल
 यहां फूल की कोमलता ली गई और गुल शब्द को उरदू में माशूरक तथा यार के
 वास्ते बांधते हैं तौ गुल शब्द का अर्थ हुआ फूल से कोमल शरीरवाला मित्र और
 आबी + अर्थ श्यामवर्ण क्योंकि आबी रंगभी कुछ श्यामताई लियेहुये होता है तौ
 अब दो शब्दों से बना हुआ जो एक शब्द गुलाबी तिसका अर्थ हुआ श्यामवर्ण
 वाले मित्र श्रीकृष्ण शर्वत सरिखे मीठे शब्दोंवाली बंशी के बजानेवाले (तिनके
^{१२} ^{१३} ^{१४} ^{१६} ^{१०} ^{११}
 में) लाल कमल सरिखे चरणों को सेवन किया करती हूं (सो उन के वियोग
^{१६} ^{१७} ^{१८} ^{१९} ^{२०} ^{२१} ^{२२}
 में) मेरा (जो) गेंहुंकी रंगत सरिखा शरीर था (वो) पीला पड़गया है (अब
^{२३} ^{२४} ^{२६}
 उस पर बांसुरी बजाय सुनाय कर) मनमोहन वृथा के वास्ते (मेरे तन में) काम
^{२६} ^{२७} ^{२८} ^{२९}
 उड़ीपन किया करै है (इस से हे प्यारी तू) गोपाल लाल यदुवंशमणि को मना
^{३०} ^{३१} ^{३२}
 करदे (कि यहां पर मुरली ना बजाया करै वैसेही मेरे तो) शिर पर खेद से भरी
^{३३} ^{३४} ^{३६} ^{३७} ^{३८} ^{३९}
 हुई विथा सवार है मेरा (वचन) सत्य ही जानना (क्योंकि अपने) घरवालों

का मुझे (^{४०} ऐसा खौफ) तथा ^{४१} भय है (^{४२} कि) ^{४३} कौन बहाने से ^{४४} नन्दनन्दन श्रीकृष्ण ^{४५}
 महाराज से भेटूंगी (तू कोई ऐसी यत्न कर कि जिस में मुझे श्याम सुन्दर मदन-
 लाल का दर्शन होजाय ॥ इति ॥

॥ उद्दीपन विभाव ॥

॥ अनुसयना नायका ॥

॥ कशेरिन दूतिका प्रसंग बरतनों का ॥

॥ अथ पात्रानुमान संख्या ॥ १४ ॥

कलछी ॥ १ ॥ लोटा ॥ २ ॥ चिमटा ॥ ३ ॥ बटुआ ॥ ४ ॥
 घंटा ॥ ५ ॥ घड़ियाल ॥ ६ ॥ कड़ाही ॥ ७ ॥ पतीली ॥ ८ ॥ क-
 टोरी (व) कटोरा ॥ ९ ॥ पानदान ॥ १० ॥ शमेदान ॥ ११ ॥
 परात ॥ १२ ॥ थाली ॥ १३ ॥ आचमनी ॥ १४ ॥

॥ अन्योक्ति कवित्त ॥ ८६ ॥

^२ कल ^४ छीकही ^३ मिलन ^५ आजै ^६ मन ^७ लोटा ^८ काह ^९ चिमटाय ^{१०} आई
^१ हरि ^२ बटुवा ^३ प्रसाद ^४ री ॥ ^५ घंटाघरियाल ^६ करे ^७ शुभ ^८ ना ^९ कड़ाही ^{१०} कर
^{११} पतीलीकरत ^{१२} बात ^{१३} नेकही ^{१४} प्रमाद ^{१५} री ॥ ^{१६} काटोरीकपट ^{१७} जिन ^{१८} पानदान
^{१९} पायो ^{२०} तिन ^{२१} समै ^{२२} दान ^{२३} मोद ^{२४} हेत ^{२५} देत ^{२६} लेत ^{२७} शाद ^{२८} री ॥ ^{२९} आजकी ^{३०} पै-
^{३१} रात ^{३२} घनि ^{३३} थाली ^{३४} सुख ^{३५} आचमनि ^{३६} नंदकोललन ^{३७} मेलो ^{३८} मेटिकै ^{३९} वि-
^{४०} खाद ^{४१} री ॥ इति ॥

प्रसंग ॥ ८६ ॥ कोई एक कशेरिन दूतिका एक प-
 रम सुंदरीकी शोभाको देख मोहितहो यह विचार करती
 भई कि इस सुशीलाका महाराजसे दरश परश होयतौ

वो बड़ाही मोह गानें इससे प्रीति प्रचार अमृत रूपी हरिचरित्रों का रस चखाय उसका मन अपने हाथ में लेकर सोचती भई कि अब इससे प्रभु सभीप चलनेके वास्ते कहना चाहिये उधर तीर पड़ोस वाली स्त्रियोंने उस प्रपंचित से सुकुमारी का अत्यन्त सतसंग देखकर उसके भवनमें जाय कर उससे कहती भई ॥ कि हे प्रिया तू इस प्रपंचित के पाँदों न पड़जैये यहतो देश बखानी कलंककी निशानीहै खरद्वार हमसब तुम्हे चिताये देती हैं उनका वचन सुन उस सुकुमारीका चितना प्रेम प्रीति उस परथा सब जाता रहा अब उसकी संगति त्याग करनेमें चिन्तित होती भई तैययोगमे उस तूती ने दूम्हरेही दिन कहीं सुकुमारिकासे कहिदिषा कि चल सखी आज तुम्हे श्रीकृष्ण महाराजनी भेंट कराय लाऊं तो उस सुकुमारिने वही अब हाथ उचित जानकर उसको फटकारा बतलाया कि खरद्वार अब ऐसा मुंह से वचनमत निकालना मैंक्या चित्ती परपुरुषसे मिलनेवालियों मेंहूं मेरे यहां अब कभी न आउना वह अपना सा मुख लेकर महाग शोकमें भरकर उठि चलती भई रात्रि भर उसे इस सोचमें कि प्रात समय कृष्ण महाराज के पास चलकर उसके प्रसन्न होनेका कोई उपाय पँडैगी ऐसेही सारी रात बीत जाती भई इधर इस हरि दरशनाभिलाषी सुकुमारिकाने विचारा कि यह मौका महाराजसे मिलनेका बड़ाही अच्छाहै क्योंकि आज तो मैंने उसे ललकारही दियाहै अगर भली मानस होगी

तबतो मेरे घरही न आवैगी और जो आवैगी भी तो अब जल्दी उसका कोई बात कहनेका मुझसे मुंह न पड़ेगा अतएव सुघर शृंगार साज सायंकालही को इयाम सुन्दरके सदनमें पहुंचती भई तो कृष्णचन्द्र महाराज उसदूतके मुखसे प्रशंसा सुनीहुई सखीको जान आदर देतेभये रैनिभर युगुलावास में निवास कर प्रातःकाल तारोंकी छांह छादित समथमें लोकलाजके डरके मारे वह सुकुमारिका महाराज से घरजानेकी आज्ञा मांगती भई कि हेभगवन जैसे कि मैं अपने घरसे छिपकर आई हूं वैसेही मुझे अँधेरोहि अँधेरे घर पहुंच जाना चाहिये तो महाराजकी आज्ञानुसार मंदिरको सिधारती भई उधर देव योगसे वह दूतीभी निज भवन से चली हरि समीप जातीथी मारगमें दोनोंका भेटा होताभया दूती उसकी चतुर्थाई व इयानपन को देख चकितहो अँगुरी दामन दवाय उसके सम्मुख आय थीं कहती भई कि ॥

॥ सखिभति कसेरिनि हृत्तिका बचनम् ॥

टीका ॥ =३॥ अरीप्यरी कज्ञ (तुझने श्रीकृष्ण महाराज ले) मिताने के वास्ते
 गितानधारणकीरही (और मेरे) चनेभाउनेशीपर क्या तेरा) जी लोटपोट हो-
 गया कृष्णमहाराजको मिलआई (आज तो कुछ) मिठाई बटवावनी चाहिये ॥
 हे सखि (तू बड़ी बुद्धिवान् है देखु जौन) थोड़ेही घमण्ड में हृदय को पुष्ट करके
 (अपनी फजिहत कराय लेते और) मुजादी पिठवाय देते हैं (सो) अच्छा नहीं
 करणे (उन की) पद्धति घटजाती है ॥ हे सखि (और जौन तुझ सरीखी चुर

हैं) जिन्हकामन साफ है उन्हींको (तुम शरीखा) सनमान मिलता है
 (क्योंकि जो कोई किसी को) आनन्दरूपी रसको देता है पुण्यके समतुल्य है
 (उस को प्राप्त करते ही मन) मोद को ग्रहण करता है ॥ (वस मैं तुझ से और
 ज्यादा क्या कहूं यही वारंवार कहती हूं) अरीवीर परन्तु आज के दिन की
 रात्रि परम सुखदाई रही (कि तैने अपने मन की) दुविधा दूरकर नारायण से
 मिलकर आनन्द की थाह ली (और अमित सुख) ग्रहण किया ॥ ऐसेवचनों
 को सुनाय दूती उस सखी से अपना मेल कर लेती भई ॥ इति ॥

॥ उपदेश ॥

॥ युक्ता उत्कंठा नायका ॥

किसानिन दूतिका प्रसंग तंडुलजातियों का ॥

॥ अथ तंडुलजातिकानुमान संख्या ॥ ८ ॥

चाउर (व) चात्रल ॥ यथा ॥ अंजना ॥ १ ॥ स्यामजीरा ॥ २ ॥
 गोरिया ॥ ३ ॥ केतकी ॥ ४ ॥ रहिमुनियां ॥ ५ ॥ हंसराज ॥ ६ ॥
 वांसमती ॥ ७ ॥ साठी ॥ ८ ॥ इत्यादिक ॥

॥ अन्योक्तिक कवित्त ॥ ८७ ॥

धारे चाउरु वीर अंजनादि साजकर श्याम जीरा मोहिबेको
 वानकै बनाउ री ॥ गोरिया यह बात में केतकीहु वार कही रहि मनु
 वाँ न तोर कस तो स्वभाउ री ॥ जीवनको सुख बोल हंस राज मन
 को जो मीतै ते कहब वास मती अनखाउ री ॥ साठी बाँकी प्रीति
 जोहै नन्दकेललन सन धीर राखु मिलि है री जो तो सत भाउ
 री ॥ इति ॥

प्रसंग ८७ ॥ कोई एक परम सुंदरी श्याम सुन्दरके वियोगमें भरी शृंगारको त्याग कियेहुये अपने गृह में मलीन मन करे बैठी थी कि उतनेमें एक उसकी परम मित्र किसानिन दूतिका आनकर उसका हाल बेहाल देख यह उपदेश दे कहती भई कि अरी प्यारी इन बातोंमें क्या रक्खाहै कि जो तूने अपना शृंगार करनाभी छोड़ दियाहै क्या इस कृत्यसे भगवान् प्रसन्न होयँगे नहीं २ ऐसानहीं करना चाहिये देखु ॥

सखिप्रति किसानिन दूतिका वचनम् ॥

॥टीका॥ ८७ ॥ अरी सखि(अपनेमनमें) काजरआदिविविध शृंगारों के(सजने
 का)बत्साह ग्रहण कियेरहु कृष्णमहाराजका मन बशीभूतकरनेको उपायतो करा॥
 हे सखि मैंने अनेकोंहीं दफे येही शीक्षा करी (परन्तु) तेरे चित्तमें (मेरीसिखा-
 वनकुल) नहीं दृढ़ानी (यह) तेरी कैसी आदतहै ॥ अरी वीर (इस) जिन्दगी
 का आनन्द हँसना बोलनाही है (और अपने) जीका जोकि भेदहै (तो अपने)
 मित्रही से कहाजाता है (मुझसे) छिपाउनेपर आमादा यानी आरुढ़ न हो ॥
 अरी प्यारी जत्रके (तुझने) नन्दनन्दन से सुन्दर प्रेम कियाहै (तो सावधानरहु
 यानी) हिम्मत बांधु जोके तेरी सखी लगन है (तो निश्चय रखु तुझे जरुरही
 महाराज) मिलजायँगे ॥ इति ॥

॥ उपदेश ॥

॥ धीरानायका ॥

॥ किसानिन दूतिका प्रसंग अनाज नामानि वर्णन ॥

॥ अथ नाजानुमान संख्या १२ ॥

मक्का १ मकाई १ जुन्हरी २ बाजरा ३ धान ४ तिल ५ गेंहूँ ६

जउ ७ अरहर ८ चारल ९ उरह १० सागा ११ गमूर १२

॥ अन्योक्ति सिंहावलोकन कवित्त ॥ ८८ ॥

छोरिये मकार ना प्रपंचताहि जू न हरी वा जरा कुहृत्य धान्य
 तिलहू नजोरिये ॥ जोरिये सनेह उरगोहु जउ चहैहै सुख अरि
 हरि शेष हनु मदनु बटेरिये ॥ बटेरिये री चाउरति ललनै मिलाप
 को उर दर्शनाभिलाप लै वा सुख मोरिये ॥ मोरियेन सागाभर
 जीदैं चिन चोरिये री चोरिये गमूर आंट गाधवै न छोरिये ॥

प्रसंग ॥ ८८ ॥ एक समय विशाखासखी श्रीकृष्ण
 महाराज से रुष्टित होय नाग मनाय बैठी तिसकी एक
 किसानिन दूतिका जायकर यों उपदेश देती भई कि ॥

सखिप्रति किसानिन दूतिका वचनम् ॥

॥ टीका ॥ ८८ ॥ (अरीसखि ज तो तू कुञ्ज) नादागहै न कोरिन है जोके
 बढंगापनको नहीं छोड़ती ऐसे खोटे धन के (चाल चलन को) छुँदखान
 तिलभर यानी जगाभी नहीं जनाकरनाचादिभे ॥ (औरजो तू कुञ्ज जवा इक-
 ट्टीही किया चाहती होइ या) जोकुञ्ज आनन्द भोगने की इच्छा होइ (तो
 अपने) हृदयरूपी घर में भीभित्तो इकट्ठा कर (और) हृग्गु मत्सजसा बैरी
 (यानी उनके अनुचित जोते) गुस्ता (है तिसकी) दुस्कारके सर्गुस्वों को
 ग्रहणकरिये ॥ (अथवा) हे सखि (अपने) प्यारे के मिलने के वास्ते (जो)
 प्रीति रूपी लग्न है (तिसकी) धारण कर (क्योंकि) मनमें हरिदर्शनों की
 चाह रखकर मुह नहीं फेरना चादिये (याने रुची वा लालसा ना हटानी चा-

हिये)॥(सब अनाजों में सांभा नामक अनाज का दाना बहुतही छोटा होता है
 सो दूती कहनी भई कि)^{३७} ये सखी सांभा भरभी याने थोड़ा भी (मतों) म-^{३८}
^{३९} तीहटाउना चित्तलगायइर (उन्नका)^{४०} मन अपने हाथसे लैले (और तेरे जो
 मनमें वसाहुषा)^{४१} मुख्य विचावट करी मैउहै (उसो)^{४२} निकालडाल (परन्तु
 तेरेजो समेही)^{४३} श्री कृष्णचन्द्र भगवाद् हैं (उनको कभी)^{४४} नहीं त्याग करना
 चाहिये ॥ इति ॥

॥ चित्र दर्शन ॥

॥ प्रेमवतीनायका ॥

समता सकेतिक उदाहरणीय ॥

अथ समतासुमान संख्या ॥ २८ ॥

मधुप (व) भौरा १ अभिषल यानी अष्टुगका चबूतरा २ के-
 सर ३ मकराकृत ४ धनुं (व) धनुा ५ बैन (व) कामदेव ६
 मीन (व) मछली ७ फंज (व) अम्बोरुह (व) कमल ८ जाडू
 (व) टोना ९ विशिप यानी वाण कामदेवी १० शुक (व) सु-
 वा ११ ज्योयनी कबोरी १२ विष्णुकल यानी कुंदरु १३ गजसु-
 क्ता १४ चिकनी (व) चिकनावट १५ अनूपता १६ कंबु (व)
 संख १७ घृणम यानी बैल १८ घृणालि (व) कपलवाल १९ चं-
 पककली (व) चभेखीकी कली २० हुति (व) मकारा २१ चन्द्र-
 मा २२ भृगुपाद २३ त्रिवलिकन (व) त्रिवली २४ कुंड (व)
 गढ़हा २५ सुधा (व) अमृत २६ सिंह (व) शेर २७ केल या-
 नी केला २८ ॥

नख शिख वणन अन्योक्तिरु कवित्त ॥ ८६ ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
 मधुप मणामिथल केसरतिलक व्याप कुंडल मकरकृत धनु

^{१०} ^८ ^{११} ^{१२} ^{१३} ^{१६} ^{१४} ^{१६} ^{१७}
 खंड मैनके ॥ मीन कंजु ग्रहजादू विशिष मनोज शुक्र मोयनीक
^{१८} ^{२०} ^{१९} ^{२१} ^{२२} ^{२३} ^{२४} ^{२६}
 चौरि बिम्ब मुक्का मकुनैनके ॥ चीकनी अनूप कम्बु वृषभ मृनालि
^{२१} ^{२७} ^{२८} ^{२९} ^{३०} ^{३१} ^{३२}
 चंपकलि दुति अर्धचन्द्र भृगुपादजैनके ॥ त्रवलित कुंड मुधा
^{३१} ^{३४} ^{३६} ^{३८} ^{३६} ^{४०} ^{३९} ^{३७}
 सिंह केल अम्बोरुह ललन पिछान चित्र येही प्रदचैनके ॥ इति ॥

प्रसंग ॥ ८६ ॥ जिस समय बाणासुरकी पुत्री ऊषा
 ने श्रीकृष्णात्मज श्रीप्रद्युम्नपुत्र श्रीअनुरुद्धजी महाराज
 को स्वप्न में देख व्याकुल होती भई उस समय उसकी
 परम सहायक स्यान सागरी चित्रलेखा चाकरी ने भेद
 जाना तब उसै समस्त देवनाओं वा मुनिजनों वा रा-
 जाओं की तस्बीरों को खींच खींच कर दिखलाय फेर
 पीछेसे श्रीरूपराज राजेश्वर श्रीअनुरुद्धजी महाराजका
 चित्र लिख दिखलाय पूछतीभई कि हे प्यारी देखु प-
 हिचानु तेरा चित्त चुषावनेवाला यह तो नहीं है तिस
 चित्रकी विचित्र छटा वर्णन ॥

ऊषा प्रति चित्रलेखा दूनी का वचन ॥

॥ टीका ॥ ८६ ॥ भौरों सरीखे काले ^१ भँवराले बाल ^२ महाअभृतका ^३ चंद्रनरा
 ऐसा ^४ मस्तक (तिसपर) ^५ केसर के टीकेका ^६ चिह्न (कानों में) मगर के आकार सरीखे
 वाले ^७ (विराजमान मानों) ^८ कामदेव के ^९ धनुषके ^{१०} (दो) ^{११} टुकड़े होय ऐसी ^{१२} भौहें ॥
^{१३} मछली से ^{१४} चंचल ^{१५} कमलसे ^{१६} सुन्दर ^{१७} नैन ^{१८} जादूटोनाकाघर ऐसी ^{१९} चितवन ^{२०} मदनके वा-
^{२१} यों सी ^{२२} पलकें ^{२३} सुया ^{२४} कैसी ^{२५} नासिका ^{२६} मोइनदार ^{२७} कचैरी ^{२८} से ^{२९} प्रफुल्लितगाल ^{३०} कुंदुरु

के फलसे अधिक अरुण अधर (हॉठ) हाथियों से (उत्पत्त्यभयेहुये) मोती याने ^{१९} ^{२०}
 गजमुक्ता सरीखे दांत ॥ चिकनी चांगिली चिबुक (ठोंड़ी) अलबेली मुसक्यान ^{२१} ^{२२}
^{२३} शंख सदृश सुडौल गरदन धैलसे विशाल ऊंचे ऊंचे कंधे (शाने) कमलकी ^{२५}
 डांड़ीसी लंबी लंबी भुजा बांहें) (कोमल कोमलसे हाथ) चमेतीकी कलियोंसी ^{२६}
 अंगुलियां (नखोंकी) शाभा (मानों अष्टमी की रात्रि सरीखे) आधेअङ्गवाला ^{२८}
 चन्द्रमा (तिसका समूह सोहायमान) भृगुमुनि चरण चिह्नित (भगवान् के जाये ^{२९}
 हुये श्रीप्रद्युम्नजीके पुत्र श्रीअनरुद्धजी महाराज जिनके पेट पर) तीनतीन बल्ल पड़े ^{३०}
 हुए (तोंदीमानों) अमृत का तालाव चीते (शेरसे पतली कमर) केजा सीखी ^{३१} ^{३२} ^{३३} ^{३४}
 चिकनी जांघें कमलसरीखे कोमल चरण (इसप्रकार श्री अनरुद्ध जीका चित्र ^{३६}
 लिखकर चित्रलेखादूती ऊषाको दिखाय पूछती भई कि हे प्यारी) परख ले ^{३७} ^{३८} ^{३९} ^{४०}
 (तेरे) सुःखदेनेवाले (मीतम) प्यारे की यही तसवीर है ॥ इति ॥

॥ मानीनायक ॥

॥ वज्राजिन दूतिका प्रसंग कपड़ोंका ॥

॥ अथ वस्त्रानुमान संख्या १६ ॥

तन्जेव ॥ १ ॥ मार्कीना ॥ २ ॥ पिलाम ॥ ३ ॥ तूल व दूला ॥ ४ ॥
 नैनमुख ॥ ५ ॥ दरैस ॥ ६ ॥ गाढ़ा ॥ ७ ॥ अतलस ॥ ८ ॥ जा-
 ली ॥ ९ ॥ निवाड़ (व) निवार ॥ १० ॥ कमरख ॥ ११ ॥ डोरिया
 ॥ १२ ॥ कामदनी ॥ १३ ॥ मलमल ॥ १४ ॥ नाखूना ॥ १५ ॥
 खासा ॥ १६ ॥ दुशाला ॥ १७ ॥ मालीदा (व) मलीदा ॥ १८ ॥
 साठन ॥ १९ ॥

॥ अन्योक्ति कवित्त ॥ ६० ॥

७ ६ ६ १ ४ ३ २ १२ १० ११
 हीनी तन जेव मार कीनहै पिलाम तूल नैन मुख निदरैसै
 ११

१ ८ १४ १३ १६ १६ १९ १७ १८
 दृश तिहारे को ॥ गाढ़ा विरहा दुसाह अति लसि शोक मांहि
 २२ २३ २० २१ २४ २६ २७ २६ ३२ ३४ ३३ २८
 जाली ना ललन बात तो धिनु निवारे को ॥ कम रखी डोरि थार
 २९ ३० ३१ ३७ ३६ ३६ ४० ३९ ४१ ३८
 काम दानियां विचारु मलमल पाण ती ना खूनै करडारे को ॥
 ४२ ४३ ४४ ४६ ४६ ४७ ६० ४८ ४९
 खासा है दुशाला माल साठनी जरूर चही वाला यों रसाल
 ६१ ६३ ६२
 नाहिं मिलिहै निहारेको ॥ इति ॥

प्रसंग ॥६०॥ कोई एक परम सुकमारि सलोनी सुंदरी
 श्रीकृष्ण महाराज के दर्शन वियोगसे दुखित एक अ-
 पनी सगीसहेली सनेहिन बजाजिन दूतिका की मारफत
 महाराजके पास सँदेसा भेजकर बुलवावती भई वह दूती
 अपनी सहेलीकी पठाईहुई श्री गोपाललाल महाराजके
 समीप आनकर यह कहती भई कि हे भगवान् जल्दी
 चलकर अब अपनी दर्शनाभिलाषिन वियोगिनीको दृ-
 शन दीजिये आपके मारे उसकी यह दशा होरही है कि॥

हरिप्रति बजाजिन दूतिका वचनम् ॥

१ २ ३ ४
 ॥ टीका ॥ ९० ॥ कामदेवकी (विथा ने जिसको) अत्यन्त पीला कर
 ६ ६ ७ ८ ९ १० ११
 दियाहै शरीर की शोभा जातीरही है आपके दर्शनरूपी आनन्दसे निरादर कि-
 १२ १३ १४ १६ १७ १८
 येहुयेसे (जिसके) नेत्र (होरहे हैं) ॥ जुदाईरूपी कराल विथासे महा दुःख में
 १९ २० २१ २२ २३ २४ २६
 भरीहै (सो हे) प्यारे (मेरा) वचन भूठ मत (जानियो) आप के वगैर (उस
 २६ २७ २८ २९ ३०
 का दुःख) कौन दूरकरेगा ॥ (हेमित्र अपने) सनेहियों की कामना पूरीकरनेवाले
 ३१ ३२ ३३ ३४
 सोचलीजिये (जो मेरे कहनेपर आप) कामनी ख्याल करीये (नो मुझे दृष्टिगत

है कि आपके दुःखमें वो) नारि हाथ मीज मीजकर कहीं कुछ उत्पात न कर^{३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१} ॥

(दुशाला अर्थ दो वस्तु जिसै सालें व सतावैहैं क्या लज्जा और काम ये म-
ध्या को सतावैहैं तो दुशाला कहिने से यहां मध्यानायका जाननी चाहिये सो दूती
कहती भई कि हे महाराज ये ऐसा) सुन्दर मध्यानायका (सरीखा) धन निश्चय
कर प्राप्त (व) कवजे करलेना चाहिये ऐसी सुन्दर स्त्री (फिर कभी) नहीं
आपके हाथआवैगी ॥ इति ॥

॥ क्रिया विदग्धानायका ॥

॥ हलवाइन दूतिका प्रसंग मिठाईका ॥

॥ अय मिठाईनामानुसंख्या ॥ १२ ॥

रसडोबी ॥ १ ॥ अमृती (व) अमिरती ॥ २ ॥ कपूरकंदा ॥ ३ ॥
वरफी ॥ ४ ॥ मोहन भोग ॥ ५ ॥ हलवा ॥ ६ ॥ गुलाबजामुन
॥ ७ ॥ मोदक यानी लड्डू ॥ ८ ॥ निवासा (व) अंदरसा ॥ ९ ॥
मिसरी ॥ १० ॥ बतासे ॥ ११ ॥ मीठा (व) बूरा ॥ १२ ॥

अन्योक्ति कवित ॥ ११ ॥

रस डोबी वाके अस अमृती सुनाये बैन वचन क पूरकंद
कीन्हों वस हातही ॥ जोहती अवरफी नकी मोहनभोग वात
हलवेहिसे प्रतीत आपुन सो घालही ॥ गुले आव जामुन री
मोदको निवासाभयो सोई नंदललनने घाल यह चालही ॥ बा-
तन के मिस री यों बवतासे आन ढिग वरवस मीठा मुख लैलियो
गुपालही ॥ इति ॥

हलवाइन दूतिका प्रति सखि वचनम् ॥

॥ टीका ९? ॥ अरीसखि (आज मैं) श्रीकृष्ण के प्रेम में ऐसी मोहित होगई
 (कुछऐसे) सुधासरीखे वचन कहे (सो वह) बातें क्या (थीं मानों) मिठाई
 से भरी हुई होंय (तिनकरिकै मेरामन) नुरतै वशीभूत करलिया ॥ और (जो कहूं
 कि कुछभुभे) शुभाशक मालूम पड़ा हो (सो कुछ) गोपाललाल ने विषय
 रूपी प्रसंग चलायानथा धीरे २ अपना विश्वास (मेरेमन में) बँधाय दिया ॥
 (गुल अग्रे आव तिसका हुआ गुलाब + गुल अर्थ=मित्र और आव अर्थ
 शोभा (अदा) और गुल शब्दको उरदूमें मित्र (व) यार के वास्ते बांधते हैं तो
 गुलशब्दका अर्थ हुआ कृष्ण सो हे सखि) कृष्ण की शोभा (मेरेमनमें)
 बसगई (और) सुख प्राप्तहुआ इतनेमें नन्दनन्दन ने ऐसी घात करी (कि) ॥
 बातों २ के बहाने अरीसखि ऐसे हंगसे (मेरे) पास आयकर कृष्णचन्द्र ने
 अचानक (मेरे) मुँहका चूँमा लेलिया ॥ (हे सखि वो नन्दनललन तो बड़ाही
 नटखट है) इति ॥

॥ संघट्टन भाव ॥

॥ मानवती नायका ॥

॥ हलवाइन दूतिका प्रसंग मिठाई का ॥

॥ अथ मिठाईनामानु संख्या ॥ १४ ॥

मनोहरी (व) रसफैनी ॥ १ ॥ खाभा ॥ २ ॥ लड्डू ॥ ३ ॥
 खोवा ॥ ४ ॥ रसगुल्ला (व) जलाव ॥ ५ ॥ पापर (व) पापड़
 ॥ ६ ॥ सेउ ॥ ७ ॥ तिकोना ॥ ८ ॥ मठरी ॥ ९ ॥ स्वाल ॥ १० ॥
 बरफी ॥ ११ ॥ गुपचप ॥ १२ ॥ जलेबी ॥ १३ ॥ पेड़ा ॥ १४ ॥

॥ अन्योक्ति कवित्त ॥ ६२ ॥

लेमान मनोहरी हरीसों जानि खाभाकर लाय हित लङ्घ वर
 खोयारसचाहे है ॥ पा परो कहोतो हौतो सेउ सुख स्यानी भई
 ललन पिया को त्याग तीको नाहिं लाहे है ॥ मट्टरीका बुधि तोरि
 स्वाल यह तोसों मोर वर फी न कोऊ अस जाको तुहि डाहे है ॥
 गुप्चुप जा ले बी आउ साज पट शोक टाउ मोरे सँग चालु प्रभु
 पेंडा तुव गाहे है ॥ इति ॥

प्रसंग ॥ ६२ ॥ एक समय वृषभान किशोरी श्री
 राधिकार्जी श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् से रूठकर मानकर
 बैठतीभई तौ प्रभुने अकुलाकर एक परमचातुरी हल-
 वाइन दूतिका को प्रिय महरानी के मनावने के वास्ते
 भेजा वह दूती श्री कीरतिकुमारी हरिप्यारी के पास
 आनकर यह उपदेश देती भई कि ॥

प्रियपति हलवाइन दूतिका वचनम् ॥

॥टीका॥ ६२ ॥ मनके हरनेवाली (मेरी सीखको) ग्रहणाकरु गोपाललालजीसे
 मत तकरार कर (देखु) लङ्घ तथा मोदक (सरीखामीठा) श्रेष्ठ सनेह जोड़कर (उसका)
 स्वाद नहीं चाखै है ॥ (तू) कहै तौ मैं (तेरे) पैरो पडूं मौज उड़ाऊ (आनन्दभोग)
 चतुरा (हैकर फिर) नादान बनी जाती है स्त्रीको (अपने) अतिको छोड़ देना नहीं
 उचित है ॥ मेरा तुझसे यह मरन है (यानी मैं यह तुझसे पूछूं) क्या तेरी मति कुंद
 होगई है (क्या तेरी अकिल जातीरही बुद्धि पथरायगई है) ऐसा हरेक कोईका

३६ ३६ ३७ ३८ ३९
 पियानहीं (होयगा) जिसको कि तू जलावेहै ॥ (खैर जो कुद्र हुआ उसे भूलजा व
 ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६
 अब) प्यारी चुपचाते से जायकर कपड़ोंको उठाय पहिरकर आयजा (और
 ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५
 सांचको दूरकर मेरे साथ चल कृष्णमहाराज तेरा आसरा ताक रहेहै ॥ इति ।

परकिया नायका ॥

ठोरेनि दूतिका प्रसंगपात्र रचनीय शस्त्रोंका ॥

अथ पात्र शस्त्रानुमान संख्या ॥ १४ ॥

सांचा ॥ १ ॥ ढाल ॥ २ ॥ डोल ॥ ३ ॥ मटीना (व) मटकैन
 घड़ा (व) गगरा ॥ ४ ॥ निहाई ॥ ५ ॥ परकाल ॥ ६ ॥ ढकन
 ॥ ७ ॥ घरानेकी (व) फुकनी ॥ ८ ॥ केरी (व) कैची ॥ ९ ॥
 हथोड़ी (व) हांथोड़ी ॥ १० ॥ सारिवा (व) सूत (व) डोरा
 ॥ ११ ॥ छेनी ॥ १२ ॥ चीतैकी (व) चीतकी (व) कपल ॥ १३ ॥
 कतरनी ॥ १४ ॥

अन्योक्ति कवित्त ॥ ६३ ॥

१ २ ४ ६ ३ ९
 सांचा ढालि आऊं डोलबांधि आऊं मिलवेको माटीनाकरीजै
 ६ ८ ७ १३ ११ १२ १० १७
 वचतूल दै प्रतीतैको । होइना निहाईतै वदीहू परकालकहूं ढकन
 १८ १४ १५ १६ २१ १९ २० २४ २२
 परैगोना क्यहूते वा फजीतै को ॥ बेटी तैं घरानेकी वहूहै अमीराने
 २३ २५ २६ २६ २८ २७ ३० ३१
 केरि हां थोरीनबात वीर सारिवो सुप्रीतै को । अछेनीक चीतैको क-
 ३३ ३२ ३५ ३६ ३४ ३८ ३७
 तरनी कुरीतै को ललन सों सुनीतैको पुराइवो सुरीतैको ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ६३ ॥ कोई एक नवीना यौवना सुन्दरी
 श्यामसुन्दर केवियोगमाती अपनी परमसनेहिन ठठे-

रिन दूतिका से यह कहती भई कि हे सखि अबतो मु-
 भसे यह श्रीकृष्णके विछोहरूपीदुःख सहन नहीं किया
 जाताहै कोई यत्नसे तू मुझे उनको मिलायदे नहीं तो
 मेरेप्राणोंपर बीतती मालूम होती है उसने उसकी आ-
 कुलता को देखकर यह कहा कि हे प्यारी नारायण से
 मिलाय देना यहतौ कोई बड़ी बात नहींहै परंतु काम
 वो करना कि जिसमें मेरा तेरा दोनोंका फजिहता न होने
 पावे क्योंकि मैं पचास घरकी जानेवालीहूँ आजतक
 किसीने मेरे ऊपर अँगुली नहीं उठाय पाईहै लेकिन खैर
 मैं तेरी व्याकुलता देखकर और तेरे कहनेपर मैं कुछ
 तेरे वास्ते उपाय करूंगी और कृष्ण महाराजसे मिलाय
 भी दूंगी लेकिन अपने मनकी बात किसी को प्रगट न
 करना इस भांति उसको धीर बँधाय समझाय बुझाय
 यों कहकर चलदेती भई कि हे सखि ॥

सखिप्रतिउठेरिनदूतिका वचनम् ॥

टीका ॥ ९३ ॥ ^१ सीजा ^२ लगाय ^३ आऊं (औरउनके) ^४ मिलनेका ^५ ढँग ^६ जमायआऊं
 (तब तुझसे कहूंगी लेकिन हे प्यारी कहीं मुझको इसतरह की) लम्बी चौड़ी
 बातों से विश्वास को दिलाय (मेरीबात में कहीं) धूमति मिनाय दीजिये ॥
 (काहेसे यह बातें बहुत कठिन हैं मैं) ^{१०} ठीक ^{११} २ ^{१२} कहती हूँ (कहीं) अत्यन्त बदनामी
 न होजाय (तौफिर) ^{१३} किसी ^{१४} से ^{१५} उस ^{१६} बदनामी ^{१७} वा ^{१८} फजिहत्पर ^{१९} परदा ^{२०} भी ^{२१} डाले ^{२२} ना
 डाला जायगा ॥ (क्योंकि) ^{२३} तू ^{२४} नामजद ^{२५} कुलीन ^{२६} की ^{२७} पुत्री ^{२८} है (और) ^{२९} अमीरोंके ^{३०} घर
 की पतोहै (हां शब्द आश्चर्य को दर्शाता है इसीसे कहागया है कि) देख

समुझले सखी स्नेहका करना (कुछ) हँसी खेल नहीं है ॥ (क्योंकि) भलाइयों का
 विचारना बुराइयों से बचना नेक चाल चलनों से प्यारे से सच्चाबरतावकर
 निबाह करना (कुछलड़कों का खेलनहीं अपना मन देकर परायामन बस करना
 यह बड़ी मुशकिल बात है) ॥ इति ॥

परक्रिया प्रोषितपतिका नायका ॥

लोहारिन दूतिका प्रसंग लोहपात्रोंका ॥

अथ लोह शस्त्र व पात्रानुमान संख्या ॥ १३ ॥

सूजा ॥ १ ॥ कीली (व) कील ॥ २ ॥ तकुवा ॥ ३ ॥
 कड़ाही ॥ ४ ॥ कुंजी ॥ ५ ॥ कुफल (व) ताला ॥ ६ ॥ जंजीर
 ॥ ७ ॥ सँड़सी ॥ ८ ॥ चलनी ॥ ९ ॥ तवा (व) तावा ॥ १० ॥
 तसला ॥ ११ ॥ कवजा ॥ १२ ॥ कल हरेक प्रकार की ॥ १३ ॥
 कुल्हाड़ी ॥ १४ ॥

अन्योक्तिक कवित्त ॥ ६४ ॥

उन सँ जाकहु इमु कीलिकोउमेठु बीर तक वाके हाथहै कड़ा
 ही तुम राखिये । युक्तिकुंजिसों टटोल कुफल कठिनाई खोल प्रेम
 की जँजीरसों सँड़सि रस भाखिये ॥ कीजैना कुचलनीहि तवा
 लीजै तस लाय घात कवजामें मन लै यों अभिलाखिये । हैना
 वाहि कल छिन नन्दकेललन सुनु विरहाकुल्हाड़ी हनि ताहि
 सुख माखिये ॥ इति ॥

लोहारिन दूतिका प्रति सखिवचनम् ॥

प्रसंग ॥ ६४ ॥ कोई एक विरहिनी सुन्दरी नारायण

के वियोग में अतिव्याकुल है एक अपनी सुखद सहे-
ली लोहारिन दूतिका से हाथ जोड़ विनती करके यह
कहती भई कि अब मुझसे विरह वेदना का दुख नहीं
सहन किया जाता है आज तू जाकर श्रीगोपाललालको
बुलाय लाउ ॥

टीका ॥ ६४॥ (हे) सखि (कुञ्ज उनकी) ऐसी मति फेरदे (और) श्रीकृष्ण
महाराज से जायकर कहु (कि) भलाई बुराई वा ताकघात (सब) उसके जिम्मे है
आप अपना जी मजबूत रखो ॥ (परंतु) यतनरूपी तालीसे दूँडकर (उन के
रुकावटरूपी) कठिन ताले को खोल नेहरूपी सांकरमें फांस (तब अपना) मतलब
जाहिर करना ॥ (देखकहींकुञ्ज) अनुचित नकरबैठिये (अपने) बश में (उनका)
जी करके (खूब) अजमाय लेना तैसाही दांव लगाय (तब कुञ्ज) ऐसी प्रार्थना
करना (कि) ॥ सुनो नन्दनन्दन (तुम्हारे विना) उसको घड़ीभर को चैन नहीं है
जुदाईरूपीकुलहाड़ी से घायल है तिसको (अब आप चलकर) आनन्द(देने को)
चाउ करिये ॥ इति ॥

मध्यमानलाजवती नायका और ॥

उत्साहवर्द्धक परकियानायका ॥

सुनारिन दूतिका का संघटन प्रसंग आभूषणोंका ॥

अथआभूषणानुमान संख्या ॥ १४ ॥

भूमड़ १ कटियां २ बेना ३ बाली ४ वाला ५ पात. पत्ते ६
तरकी ७ मुरकी ८ हैकल ९ जुगुनू १० चन्दनसेनीहार ११ धुक-
धुकी १२ बहंटा १३ जोसन १४ ॥

॥ अन्योक्ति कवित्त ॥ ६५ ॥

^३नासमु^१भु^३ मरक^४की^५वा^६त क^७टिया^८ जी^९तौ^{१०}ल वे^{११} ना^{१२} है^{१३} अ^{१४}जा^{१५}न^{१६} स्या^{१७}न
^{१८}गा^{१९}ठरी^{२०} गँ^{२१}भी^{२२}रता । वारी^{२३}ही^{२४} र^{२५}ही^{२६} री^{२७} बाला^{२८} पा^{२९}तर^{३०}ही^{३१} बु^{३२}द्धि^{३३} तो^{३४}र^{३५} तर^{३६}क
^{३७}मु^{३८}रक^{३९} र^{४०}सकी^{४१} न^{४२}जां^{४३}च^{४४} शी^{४५}रता ॥ है^{४६}क^{४७}ल^{४८} जु^{४९} गु^{५०}नु^{५१} न^{५२} च^{५३}न्द^{५४}न^{५५}मे^{५६} नि^{५७}हार
^{५८}गा^{५९}त^{६०} उ^{६१}र^{६२} धु^{६३}क^{६४}धु^{६५}की^{६६} वा^{६७}सि^{६८} त^{६९}कै^{७०}ना^{७१} अधी^{७२}रता । बहू^{७३} टाल^{७४} दे^{७५}ति^{७६}रही
^{७७}जो^{७८} स^{७९}नि^{८०}त^{८१} ने^{८२}ह^{८३}स^{८४}न^{८५} न^{८६}न्द^{८७}को^{८८}ल^{८९}ल^{९०}न^{९१} मे^{९२}लु^{९३} य^{९४}ही^{९५} ना^{९६}रि^{९७} वी^{९८}रता ॥ इति ॥

साखिप्रति सुनारिन दूतिका वचनम् ।

प्रसंग ॥ ६५ ॥ कोई एक नायक किसी एक परम
 सुन्दरी से प्रीति करनेको महाव्याकुलथा अनेकों उपाय
 किया करै परंतु वो उसके हाथ नहीं आवै एक दिन वो
 सुनारिन दूतिका जोकि बड़ी होशियारथी उसे बोलाय
 कर अपने दुःखकी व्यवस्था सुनावता भया तब वो दूती
 उसको अपने साथमें उसी सुकुमारी के मकान पर लैगई
 नायकने सब कुछ संकेतिक वचनोंसे अपनी प्रीति प्र-
 गट कर दिखाई परंतु उस चातुरीने उसका आदर नहीं
 किया औ न कुछ मुंह से बोली ऐसा बरताव देखकर
 दूतीने नायकको तो इशारा देकर उसके घरसे उठाय
 दिया और उसके बाद दूती उस सुकुमारी को एकांतमें
 लेजाय यह कहती भई कि ॥

टीका ॥ ६५ ॥ (हे साखि तू) ^१पंचकी ^२बातको ^३नहीं ^४समझती (अपने) ^५तराजूरूपी
^६मनमें ^७अजमाय ^८देखु ^९अरी (अब तू कुछ) ^{१०}अनारिन ^{११}नहीं है ^{१२}चतुरता (ब) गरु-

^{१०} आपनकी गठरी है ॥ (^{११ १२ १३} परन्तु ^{१४} फिरभी) हे सखि नादान ही बनी है (तू कुछ आदिमी
^{१५ १६ १७} नहीं) तेरी ओझीही मति है (तू) ^{१८ १९} प्रीतिकी छेड़छाड़ (व) ^{२०} रसाई (सुशीलता) को
^{२१} जानतीही नहीं ॥ (हे प्यारी तू अपने चाहनेवाले के मनकी) ^{२२ २३} घबराहट को नहीं
^{२४ २५ २६} देखती है (उसे) ^{२७ २८ २९} भैन जो कुछ विचारती होय (सो) नहीं है ^{३०} देखु चन्दन सरीखा
^{३१ ३२ ३३} सफेदरंग तो शरीरका (होगया है और तेरी जुदाई की बिथा के मारे उसके)
 कलेजे में धकधका सनाय रहा है ॥ (अरी सखि आदमी का चोलापायकर कुछ
 पराये दुख दर्दकोभी विचारना चाहिये देखु अब कुछ मेरे आव्रनेका भी ख्याल
 कर जो कुछ मैं कहूं उसको मान सुनु) ^{३४ ३५ ३६ ३७} जोकि (तेरी) प्रीति से भरा नंदका
^{३८ ३९ ४०} प्यारा (जिसको कि तू) बहुतसा टालावाला बतलावती रही है (उससेअब)
^{४१ ४२ ४३ ४४} मिनु गोरी (तेरी) येड़ी सूरबीरता वा भलमंसी है ॥ इति ॥

उत्साहवर्द्धक नायक ॥

सुनारिनदूतिका प्रसंग आभूषणों का ॥

अथ आभूषणी अनुमान संख्या ॥ ६ ॥ धातुनाम २ ॥

सोना १ कुंदन २ बाला १ तर्की २ विचकत्री ३ विजुलीका
 बाला ४ मछली ५ बाली ६ सवजा ७ कुटिला (व) करनफूल ८
 पात ६ ॥ ॥ अन्योक्ति कवित्त ॥ ६६ ॥

^{४ ५ ६ ७ ८ १३ १४ ९}
 ललन सोवर्ण रंग कुन्दन सों भूर भाह जिलाकीन्ह मानों
^{१० ११ १२ १ २ ३ २० १९}
 मंजु गातकी गुरोलीमें । बालवोहै बाला बाल तर्किजात नैकहीमें
^{१७ १८ १६ १५ ११ २२}
 मुखलावै विचकन तुरतै ठठोली में ॥ विजुलीसी चम्कजात

^{२४} ^{२३} ^{२५} ^{२६} ^{२८} ^{२९} ^{२७}
 आवैनाहींहाथ छांह मीन मतिवारी भारी चातुरता बोलीमें ।
^{३३} ^{३०} ^{३१} ^{३२} ^{३६} ^{३४} ^{३५} ^{३७} ^{३८} ^{४०}
 देख स वजाकी भांकी कुटिलानो मोर मन पातपात वारुं ठोली
^{४२} ^{३९} ^{४१}
 मिलै जोवो होली में ॥ इति ॥

अथ सुनारिनदूतिका प्रति नायक वचनम् ॥

प्रसंग ॥ ६६ ॥ एक समय श्रीकृष्ण महाराजने कहीं
 एक अत्यंत सुन्दरी चातुर्यागरी चंचलता सागरी रूप
 नव नागरी को देख प्रसन्नहो एक सुनारिन दूतिकासे
 यह कहते भये कि आज मैंने एक ऐसी अनोखी अबला
 अवलोकी है कि जिसकी निकाई कुछ कही नहीं जाती

^१ ^२ ^३ ^४ ^६
 टीका ॥ ६६ ॥ (हे) सखि वो (ऐसी) सुंदरि अबलाहै (कि) प्यारा सोने
^६ ^७ ^८
 सरीखा (तो शरीरका) वर्ण (और) कुंदन से भी ज्यादा चिमत्कारी (द्वि) ^९
^९ ^{१०} ^{११} ^{१२} ^{१३} ^{१४}
 साक्षात मालूम होताहै (कि) सुंदर शरीर की गुरावट पर सिकल कीहुईहोवै॥
^{१५}
 (और फिर उसका तीक्ष्ण स्त्रभाव कैसाहै यानी तुनुक भिजाज ऐसीहै कि) हँसी ^{१६}
^{१६} ^{१७} ^{१८} ^{१९} ^{२०}
 करतेही उसीसमय मुंहको बिगाड़ लेती (और) थोड़ीहीसी बातमें चिड़ जाती(व) ^{२१}
^{२१} ^{२२} ^{२३} ^{२४}
 खफा होजाती है ॥ (वा) चपलासी छिपजाती परद्वहीं (जिसकी) पकड़े न पकड़ाई ^{२५}
^{२५} ^{२६} ^{२७} ^{२८} ^{२९}
 देती मञ्जली सरीखीचंचल बुद्धिवाली बोलचालमें अत्यन्त चतुराई (भरीहुई ^{३०}
^{३०} ^{३१} ^{३२} ^{३३} ^{३४} ^{३५} ^{३६}
 ऐसी) ॥ सहित वज्रहदारी याने शोभावारी गुरत देखकर मेरा जी चलायमान यानी ^{३७}
^{३७} ^{३८}
 उसपर डिग जाताभया (सो हे सखि मैं अपना) तनमनधन अर्पण तथा नि- ^{३९}
^{३९} ^{४०} ^{४१} ^{४२}
 छावर करदूं जोकिवो अबला (मुझेइस) फाग के मौसम में मिलजाय ॥ इति ॥

गणिका सामान्या मानवती नायका ॥

सुनारिनिदूतिका प्रसंग गहिनोंका ॥

अथ अभरण अनुमान संख्या ॥ १४ ॥

कड़ा १ चूड़ी २ पञ्जेली ३ पहुंची ४ चुहेदन्तीकी पहुंची ५

आशी ६ मुँदरी वा अंगूठी ७ छल्ला = तोड़ा ८ जंजीर

१० माला ११ दुलरी १२ हमेल १३ करधनी १४ ॥

[अन्योक्तिक कवित्त ॥ ६७ ॥

नाकरु कड़ाकुड़ी री रूपमद चूरभई हैपखेलिमतिकी नपहुंची
 वावातको । चही दत्त दीवो गृह आवै जो आरस तजु मूँद री न
 मुख छलु कैना कछु घातको ॥ तोड़ै नहिथोड़ै मन प्रेमकी जंजीर
 गांस मालनिधि भीत पाइ कीजै रस नातको । दुलरी दुलारी तैं
 वोनंदकोललन प्यारो लीजै री हमेल कर धनी रतिजातको ॥

प्रसंग ॥ ९७ ॥ किसी एक समय चन्द्रावलि सखी के वहां गये हुये भगवान् को श्रीराधिका जी महारानी ने कहीं जान लिया तो इस बात पर क्रोध कर खटपाट लै रोषभवन में जाय प्राप्त होती भई तो श्रीकृष्ण चन्द्र महाराजने एक परम चातुरी चालांक सोनारिन दूतिकाको बुलवाय हाल सुनाय महारानी के मनावने (व) बुलवावने के वारते उससे कहा वह दूती महाराज को धीरज बँधाय अपने संग में लेकर श्रीप्रियाजीके घर पर पहुंचती भई महारानी को कोपमंदिर में पड़ा देख बड़ी सावधानी और बुद्धिमानी की चतुरता से

श्री वृषभानदुलारी से विनयवत प्रार्थना कर यों कहती
भई कि ॥

टीका ॥ १७ ॥ अरीप्यारी (तू अपने पिय प्यारे से बहुत) तनातुनी मतकर (अपने)
स्वरूपके गुमानमें बेहोशहुई है (तेरी ऐसी) पिछली बुद्धि है याने जिस काम को ना
करके फिर उसीको करती है (और पहिने) उसखयालको यानी परणामको नहीं
विचारती ॥ हेप्यारी (देखतेरे मनाउने और अपना अपराध क्षमापन करावने को
तेरेपास साक्षात् महाराज आयेहैं उठकर महाराज का सत्कार करु क्योंकि) जो
कोई (अपने) मकानपर चलकर आवै (तो फिर उसको तो जरूरही) सनमान
देना चाहिये (अबइस) आलस्यरूपीरुकावट यानी अपने मनके मैलको दूरकरदे
मुंहको मत छिपाउ (उनके मनको) कोई यत्नसे अपनेवसमें क्यों नहीं करलेती है ॥
(प्यारी प्रीतिको) लुड़ायकर (उनका) जी नथोड़ाकरु नेहरूपी सांकरमें फांसकर
(ऐसे) गुणरूपीतालेवर मित्रको प्राप्तकर (उस्से) हितरूपी सगावट (व) नातेदारी
ही करनी चाहिये ॥ हे पिय तू (उनकी) प्यारी (है और) वोनन्दजीको कुँवर
(तेरा) दुलारा है (सोऐसे) प्रीतिरीतिके स्वामीको तो (हृदयकी) माला
करलेना चाहिये ॥ इति ॥

॥ धीरामानवती नायका ॥

॥ सुनारिनि दूतिका प्रसंग भूपणोंका ॥

॥ अथ आभरण अनुमान संख्या ॥ १४ ॥

पायजेब १ कड़ा वा खड्डा २ चूरी ३ तोड़ा ४ छागल ५
बिछुवा ६ नहियां ७ पलनियां ८ बोर ९ चुटकी १० तोर ११ भलका
१२ मोर व मोरनी १३ टुरी (व) टोर १४ ॥

॥ अन्योक्तिक कवित्त ॥ ६८ ॥

पाय जेब परिवो तिहारोही सकलभांति कड़ाकुड़ी भल का भ-
 लाई किन्ह पाई है ॥ परचूरी सब कृत्य तोड़ा जिन्ह नेह जोर छाग
 लीन कुयशु बिछूवन बुराई है ॥ नहिंयां असत्य गोरि पालनियां
 भूलैं वो रि मीतैं नन्दकोललन येही सुघराई है ॥ देखु शिशुपन तोर
 चुटकीले मन मोर मो सिख बटोर तोर मान अनन्याई है ॥ इति ॥

प्रसंग ॥ ९८ ॥ एक सखी के मनाउने से जब वृ-
 षभान नन्दिनी कीर्तिकुमारी श्रीराधिकाजी महारानी
 नहीं मानी तब दूसरी स्यान सदनी सुनारिनि दूतिका
 प्रियाजी के पास जायकर यों प्रार्थना सुनाय कहिती
 भई किं हे प्यारी अबकी बार तो तैंने बड़ीहठ कीन्हीं
 है अब तेरे मन में क्या है देखु कृष्णचन्द महाराज
 तुम्हे मनाउने के वास्ते तेरे पास चलकर खुदही आये
 और तैंने उनको निरासकर लौटाल दिया फिर अब क्या
 तू चाहती है कि वह मेरे पैरों पड़ें तौ यह बात तुम्हे
 उचित है नही ऐसा नहीं चाहिये वो तेरे स्वामी हैं ॥

टीका ॥ ६८ ॥ (हेप्यारी, सब तरहसे (अपनेपतीके) पांउ पड़ना तुम्हीं को
 शोभादेय है (बहुत) तनातुनीमें कौन अच्छाई है (और कलेशको करके) किसने
 नामवरी प्राप्तकी है ॥ अरीप्रिया (मैं) सबतरहके वर्ताव देखचुकी हूं जिन्होंने प्रीति
 करके छोड़दीनी (उनको) खानेको बदनामी (और) बिछाने को बदी (व) खुटाई
 ही मिलती है ॥ हे प्यारी (मेराकहिना) भूठ नहीं है वोही (सुखरूपी) पालनोंमें

^{३१} विराजा करती हैं (जोकि) ^{३२} नन्दलालजी से ^{३३} प्रीति किया करती हैं (और इससे-
^{३४} सार में नारायण से जो ^{३५} हेन रखना है ^{३६} सबतरकी) इसी में ^{३७} अच्छाई है ॥ तेरा
^{३८} लड़कपन देखकर ^{३९} भेरा जी ^{४०} स्वसोटा करै है ^{४१} यानी दुखाकरता है (इससे अब) ^{४२} मेरी
^{४३} शिक्षाको ग्रहणकर ^{४४} तेरा (इस तरहका) ^{४५} कठना न्याय से ^{४६} वादरहै ॥ (आगे जो
 तुझे अच्छा लगे सो कर तू अपने मनकी आज्ञाकरि और में क्या कहूं ॥ इति ॥
 रतिप्रिया नायका ॥

जौहरिनि दूतिका प्रसंग धातुरत्नोंका ॥

अथधातु रत्नानुमान संख्या ॥ १५ ॥

पैसा १ रुपिया २ गिन्नी ३ अशरफी ४ चुनी ५ पन्ना ६ हीर (व)
 हीरा ७ पुपराज ८ गौमेदक ९ नीलक व नीलम १० फि
 रोजा ११ लाल १२ लैहसुनियां १३ मुक्कामोती १४ प्रवाल (व)
 मूंगा १५ इति ॥

दुग्ध गुण ॥

चौ० ॥ स्वादिक सुखद विपुल बलदाई । पैसमान औपध नहिंभाई ॥

अन्योक्तिक कवित्त ॥ ६६ ॥

^२ पै ^३ सारु ^४ पियाके ^५ हित ^६ गिन्निये ^७ अशरफी ^८ ना ^९ पै है ^{१०} व्यय ^{११} व्याज ^{१२} युति
^{१३} रतिको ^{१४} अनंदरी ॥ ^{१५} चुनी ^{१६} वात ^{१७} चितैदीन ^{१८} पन्नामें ^{१९} ललनि ^{२०} टीपु ^{२१} हीर
^{२२} सुख ^{२३} लाहै ^{२४} तव ^{२५} भानिये ^{२६} जो ^{२७} कंदरी ॥ ^{२८} पुष्पराज ^{२९} आननि ^{३०} गौमेदक ^{३१} प्र-
^{३२} ताप ^{३३} घन ^{३४} नातो ^{३५} बल ^{३६} नीलकीहो ^{३७} मदन ^{३८} गयंदरी ॥ ^{३९} चाहिये ^{४०} फीरोजा
^{४१} वीर ^{४२} लालकाहिं ^{४३} लहि ^{४४} सुनी ^{४५} मुक्का ^{४६} बलदा ^{४७} प्रवाल ^{४८} रंग ^{४९} हो ^{५०} अमंदरी ॥
 इति ॥

प्रसंग ॥ ६६ ॥ श्रीभगवान् तो सनातन भक्तवत्सल हैं जभी कोई सखी सच्चे प्रेमसेऽस्मरण करे तभी उसके घरमें जाय पहुँचै तब श्रीराधिका जी महारानी की जो प्रिय सहेली किसी के यहां कृष्णमहाराज को देखपावें उसीसमय प्रियाजी से जाय कहि सबहाल सुनायाकरें अपने प्रीतमका भेद और २ सखियों को जानलिया देखि खेदित हैं जबमहाराज शत्रिको सुख शय्यापर हुआकरें तब श्री प्रियाजी महारानी महाराज की सेवा करते पर ये प्रार्थना करि कहाकरें कि हे भगवन् आप पराये घरों में क्यों जाया करते हो मुझे इस बात को सुन करिके बड़ाही खेद होताहै क्योंकि परनारियों से रतकरने में कामकी हानी औ बल बुद्धी औ मुखकी शोभा जाती रहती है तो उससमय पर कोई महारानी की साखी सहाई तो होती न थी महाराज प्रियाकी बातों को हँसी में उड़ाय भूँठी बनायदिया करते थे एकदिन कहींकोई एक प्रियाजीकी चाकरी कहीं चन्द्रावलिसखी के यहां गई तौ क्या देखा कि वो अपनी सेज सजाय चुकी थी और अपना शृंगार कर रहीथी उसको मालूम पड़ गया कि इस के यहां आज महाराज की अवाई मालूम होती है सोई वहांसे चुप चुपाते चलकर महारानी से आय खबर करती भई कि देखुप्यारी आज तो कृष्णचन्द्र महाराज चन्द्रावलिके यहां जानेवाले हैं उसको में सेज सजाये शृंगार करते हुई देखआई हूं तअज्जुब नहीं की मुझे वहांसे आने २में इतनी देरहुई है चाहेवो वहां पहुंच

भी गये हों ऐसा सुन महरानी श्रीश्याम सुन्दरको पकड़ लेने की ताक में उसीदम सखी के संगमें चन्द्रावली के मकानको चल देती भई जो चन्द्रावलिने महारानी को आउतेहुये पहिले तो दूरसे देखा तब तो उसे मालूम हुवा कि महाराज आवते हैं बड़ी प्रसन्न हुई फूली ना समावै थोड़ी दूर चल आवने पर क्या देखती है कि महाराज तो हैं नहीं ये तो प्रिया जी मालूम होती हैं तबतो उसके प्राण हवा होगये और इसने ये समझा कि ऐसातो नहीं हुवा कहीं महरानीजी को आज श्रीकृष्ण चन्द्र का मेरे यहां का आउना मालूम होगया होय तभी तो मेरे घरको आरही हैं आज नारायण कुशल करै तो मेरी लज्जा बचै नहीं तो आज कुछ मेरे वास्ते बुराई जरूर होने वाली है होश फाक्का होगये सक्ते के आलममें आगई दिल धड़कने लगा हाथ मलने लगी परन्तु अपनी स्वामिनी समुझ कर और कुछ मनको सावधान कर पचास कदम चलकर बड़ेही आउ आदरसे महरानी जी का हाथसे हाथ पकड़ अपने घरमें लाय रत्नजटित सिंहासन पर बैठार बड़े सत्कार युति सेवामें ततपर होकर यों कहिती भई कि हे प्यारी आज तो मेरे बड़ेही भाग हैं जो आपने मुझे घर बैठे दर्शन दिये आज किधरको यह चन्द्रमा उदयहो आया और महरानीने जो उसके यहां देखा तो महाराजका कुछ पता निशानही न था अब तो वो अपने मनै मन में शोचने लगीं कि मैं तो पकड़ने महाराजको आई थी सो वोतो

हैं नहीं और मेरे बैठे पर, वो आय भी गये तौ क्याहोगा वो उल्टघड़ा मेरेही ऊपर बांधेंगे मुझे देख वो यही कहिने लगेंगे कि मैं तो तुमारे ही कारणसे यहां चला आयाहूं ये तो कुछभी न हुआ अब क्या करना चाहिये परंतु प्रियाजी तो बड़ी चतुरथी उसी छिन चतुराई के साथ एक अद्भुत युक्ती रचकर कहने लगीं कि हे सखि राति मैंने एक ऐसी सुन्दर बात श्रीकृष्णचंद्र महाराजके मुखारविन्दसे सुनीरही सो उस खुशीके आनन्दको तुझे सुनाउने आईहूं तबतो इसकी घबराहटका खेद सब जा-तारहा और अत्यन्त खुशी होइ महारानीके पीछे पड़जा-ती भई कि वो कौनसी बात है आप मुझे जरूर सुनाइये प्रियाजीने उसका मन अपनेकाबूमें करके कहा कि हे सखि तू नहीं मानती है तो मैं तुझे सुनाऊं सुनु यह बात है कि मैं महाराजसे हमेशः उरहनादिया करती थी कि आप पर-स्त्रियोंके यहां जाया करतेहौ तौ वो सदैव मुझे भुँठाय लिया करतेथे कलके दिन फिर मैंने कुछ हाल सुनकर रातको उनसे कहा तौये मेरे भाग्यकी बात है कि रात उन्होंने अपने मनका सच्चाभेद मुझसे कहिदिया कि हे प्रिया औरतौ मैं कहीं नहीं जाताहूं जोकभी जाताभीहूं तो तुम्हारी जो परम प्रिय चन्द्रावलि सखी है वो मुझ सेभी सनेह मानती है जब तब कभी उसके घरतौ मैं जरूर चला जाताहूं और ये भी कहाथा कि कल मैं उसके यहां जाऊंगा सो अभीतक महाराज तैरे यहां आये नहीं इसका क्या कारण है मैंतो उनकेही सबबसे आज

तेरे यहां आई हूँ तो चन्द्रावलि को प्रियाजीका वचन सुनकर यह निश्चय हुआ क्या आश्चर्य है जो महाराजने यह बात कहि दी होय क्योंकि वोतो रसिक शिरोमणि हैं ऐसा जानकर हँसपड़ी और हाथ जोड़कर महारानीजी से कहिने लगी कि हे प्यारी सब है जैसी कि आप की ममता मेरे ऊपर रहा करती है वैसिहि आपकी सगी समझकर मेरे ऊपर महाराज भी क्या किया करते हैं आने को तो जरूर कहाथा लेकिन अभी आये नहीं हैं ऐसा उसके मुखसे सुनकर सोई महारानी उससे पूछने लगी कि भला सखी यह तो मुझे बतलाव कि हमारे महाराजको अपने यहां बुलायकर कुछ उन की खातिर भी करती है या कि उनको वे सनमानहीं भेज दिया करती है चन्द्रावलि हाथ जोड़ कर कहिने लगी कि महारानी जी आप कैसी बात कहिती हैं ऐसी भी कोई सुख होयगी कि जिसके यहां साक्षात् महाराज पधारें और फिर उनकी कोई खातिर वा सन्मान न करे महारानी पूछने लगी तोतू क्या खातिर उनकी करती है सो बतलाउ महारानीकी बातों में आनकर चन्द्रावलि हँसिकर प्रियाजी का हाथ पकड़ उठ खड़ी हुई और कहनेलगी चलो दिखलाऊं जहां के रंगमहिल में महाराजके वास्ते शय्या सजीधी और खातिरदारीके अनेकसामान मेवा मिष्ठान इतर इलाची पान रखेथे जाय दिखलाये महारानीने सब सामानों पर नजर डाली तो क्या देखा कि और सब चीजें तो मौजूद हैं परंतु रति

कराके वास्ते जौन बलदायक पदार्थ जो दूधहै सो नहीं है ऐसा देख उसको धिक्कार दे कहिती भई कि बस इसी तरह की खातिरदारी कीजाती है तू केलि रसके स्वाद को क्या जानै तू बड़ी गँवारहै वो मुसिक्यायकर कहिने लगी कि महारानी कौनसी बात की कमताई है सोतो कहिये तब प्रियाजी उरसे यों कहतीभई कि

टीका ॥ ६६ ॥ अरीसखि दूध तो मँगाउ महराज के वासो (वो कुछ रुकनेलगी तो महारानीने कहा नहीं २ वह कुछ) निसप्रयोजनीय (वस्तु) पनी सप्रभिये (जो कुछके तेरा खर्चा पड़ेगा सो वह) खर्चा भोग संयोग का सुखरूपी सूद सहित (तुझे) भिन्न जायगा ॥ अरीप्यारी (मैंनेतुझे लाखोंबातोंमेंसे) छटीहुई (यहएक) शिंशारूपीऔषधी बतलावदीहै (अपनी पुस्तकवा वहीके) पत्रा व पत्रामें लिख रख जो कुछ केगोपाललालको (दूधके पित्तानेमें तुझे) आनन्द का सार प्राप्त होय सोतो (कलह मिलकरके मुझसे) कहिना (कियह) मजाथा ॥ (पुष्प एक नक्षत्र कानामहै और नक्षत्रोंका राजा चन्द्रमा है तिस सरीखा जिसका मुख होय उस कहिये पुष्पराज आननि सोई महारानी कहितीभई कि) हेसखि चन्द्रमुखी गौमेदक कहिये गऊके मेदेका निकसा हुआ जो दूधहै (उसमें) बड़ा ऐश्वर्य्य (व) गुणहै (और जो स्त्री अपने भिन्न को रतिके पश्चात् दुग्ध गृहण करावती) नहींहै तौ (उसके पतिके शरीर का जो) हाथी (सरीखा बलवान) कामदेवका बल व ताकत है (सो थोड़ेही दिनोंमें) निर्बल हांजाताहै (यानी जो पुरुष रनिकरने के पीछे दूध नहीं पीता है सो थोड़ेही दिनोंमें नपुंशक होजाताहै इसे) ॥ हे राखि (यह शिंशारूपन कुछ मैं तुझे आजकेही वास्ते नहीं देतीहूँ) देखु मुनने

४३
लाञ्जनी महाराजको प्रतिदिन (दूध पिलावना) उचित है (बोद्ध कैसा गुणदा-
४६ ४७ ४८ ४९
य कहै कि) अत्यन्त ताकत देनेवाला (और) मूंगे के समान लालरंगत (करके
६० ६१
बदनकी ताकत पर) चिमित्कार कर देता है ॥ इति ॥

परिहास्य शिक्षा ॥

गुप्तानायका ॥

गोटेवारी दूतिका प्रसंग गोटा किनारी ॥

अथ गोटा किनारी जात्यानुमानसंख्या ॥ १० ॥

गोटा १ पट्टा २ दाख (व) डोरी ३ पट (व) पटनी ४ किरन ५
बादला ६ धनुष ७ कैतून ८ वनत ९ कतावतू ॥ १० इति ॥

॥ अन्योक्तिक कवित्त ॥ १०० ॥

२ १ ४ ३ ६ ७ ९ ६
गुटियाले दाम पट गंगयमुनी विहार पटिया लेमंग गोटवाल
८ ११ १२ १० १६ १३ १४ १८ १९
नवचालकी । बा दला किरन होपैरगो रसि कौ दगनु धनु शर
१७ २० २३ २२ २१ २६ २५ २७ २८ ३० २९
रूप साज चालें चढ़ पालकी ॥ कई तूने सुन्दर वनतके बनाये जोड़
३१ ३२ ३४ ३३ २४ ३६ ३६ ३९
सो सज कला तूरी यौवनरसालकी ॥ जलविहारमांहि जोहि नंद
३७ ४० ४२ ३८ ४१
केललन मिल करिहैं गुपाललालजूसों जैगुपालकी ॥ इति ॥

अथ संधिप्रकरण ॥ कल+अग्रे+आवतू=कतावतू ॥ १ ॥

सखिप्रति गोटेवारी दूतिका की उक्ति ॥

प्रसङ्ग १०० ॥ कोई एक गोटेवारिन दूतिका एक
नवयौवना सुशीलासुकुमारीपर अपनी मतलबी रङ्गत
चढ़ाउती भई उसकी बहुतसी प्रशंसाकर यहकहती भई
कि हे सखि कलकेरोज जलविहारका मेलाहै सो नहीं दे-

खनेको चलैगी वहांतो बड़े बड़े अच्छे रसिकजन और
अनेकों एकसे एक रूपवतीस्त्रियां अपने २ परम अनूठे
शृंगारादिकों को साजकर आया करती हैं और कृष्ण
महाराजभी अपनी सलोनी शोभा सजायकर आवते हैं
ऐसा सुन कर उसने कहा तबतो जरूर चलूंगी तूनी
उसकी मंशा पायकर बोल उठी तौ मैं बनलाऊं निमटंग
से चलु कि ॥

टीका ॥ १०० ॥ (हे सखि खर्चके वास्ते तो कुछ) ^१ ^२ रूपये गोटमेंघुरसने (और)
गंगाधमुनी यानी ^३ सुनहिने ^४ रूपहिने ^५ कामके कपड़े पहिनने (और कोई एक) ^६ अनी
साथवाली थोड़ीउम्रकी नई ^७ शोभावाली स्त्री ^८ साथ में ^९ नैले ॥ ^{१०} काहेसे (कि वा मेला
है) ^{११} उस समाज में ^{१२} रसिकों ^{१३} कहिये ^{१४} इशकवा ^{१५} ाों की ^{१६} भांखोंस ^{१७} चोटें ^{१८} होवेहींगी (सो)
यौवनरूपी ^{१९} धनुष ^{२०} वा ^{२१} ग ^{२२} सजायकर ^{२३} पीनसर ^{२४} सवागहो (हम तुम सबजनी) ^{२५} चलै ॥
(और) ^{२६} हे सखि ^{२७} तुझने ^{२८} कईएक ^{२९} जो ^{३०} अच्छी ^{३१} र ^{३२} बनावट ^{३३} की ^{३४} पोशाकें ^{३५} बनाई ^{३६} हैं ^{३७} तिनमें
से ^{३८} पहिरकर (मेरेवरपर) ^{३९} तैं ^{४०} कलहआउ (तौ हे) ^{४१} सुन्दर ^{४२} रूपवाली ॥ (उस) ^{४३} जल
विहारके ^{४४} मेलेमें ^{४५} नन्दकुंवर ^{४६} कन्हई ^{४७} को ^{४८} डूंडकर ^{४९} मिलकरके (उनसे ^{५०} हमतुम भी)
रामराम करैगी ॥

उपदेश ॥

उत्साहवर्द्धनीनायका ॥

विसातिन दूतिका ॥

प्रसङ्ग विसातखानेका ॥

वस्तुअनुमान संख्या ॥ १३ ॥

कंधी व ककही १ डोरी डोरा २ आइना व शीसा ३ सिंगरफ

व सेंदूर ४ डविपा ५ काजर व सुर्मा ६ मिहरी व मंजन ७ मोती
८ जोर व चूड़ी ९ बट्टा १० सूई ११ पेंचक १२ तर्की १३ ॥

अन्योक्ति प्रणोत्तरी कवित्त ॥ १०१ ॥

लीजिपे विसातनु का कहीं प्रेम डेरी मन आई गहि ध्यान
११ ८ ६ १० १४ १६ १९ २० १५ १८ १७
बात मोर जा निहारेकी । शुभ संग रफ डविपाने उर वाक्य मोर
२६ २७ २४ २५ २१ २२ २३ २९ २८ ३० ३१
कज राखे कौन मिसी मो ती मनजोरेकी ॥ बट्टा जो लगाहि सुई
३२ ३४ ३६ ३३ ३६ ३७ ३८
सीखना सिखैकेकी हौं पेंचपेंच की कहन जानिये छत्रारेकी । तर
४२ ४१ ४६ ४३ ४४ ४५ ३६ ४० ४७ ४९ ५०
कना मोरीही ललन यह पक्षकी कि मो ती विनुप्रीति वृथा जूनि
४८ ४६
जग थोरेकी ॥ इति ॥

सखिप्रति विसातिन दूतिका वचनम् ॥

प्रसङ्ग ॥ १०१ ॥ कोई एक नवयौवना सुकुमारी
को कहीं किसी विसातिन दूतिका से जान पहिचान
होगई जब किसी राह बाट में मिलजाया करै तो राम
रमौअल होनेपर वह सुकुमारीसे हमेशा श्रीकृष्ण महा-
राजके मिलनेको कहाकरै परन्तु वो सुनकर चुप रहि-
जाया करतीथी एकदिन कहीं वो दूती बाजारमें किसी
बिसांती की दूकानपर कुछ सौदालेरही थी इतनेमें कहीं
वो सुकुमारी उसके नजर पड़ी तो उसको देखकर वो
बिसातखाने के जिलेमें उससे यह कहतीभई कि ॥

१ २ ३ ४
टीका ॥ १०१ ॥ (हे सखि वृषी) कुलमोन लैले (उमनेकहा) यथा कहती है

(दू०व०) भीतिरूपी सुन्दर डोरी (जूझामें बांधने को उसने कुछ उत्तर नहीं दिया
 तौ फिर दूतीबोली कि) मेरी यह बिनती का बचन (तेरे) खयालमें नहीं आया ॥
 (पुनः सखी बोली क्या कहा दू०व०) सुन्दर सूक्ष्म सत्संग (यह) मेरा बचन मन
 में रखले (हे) मेरी प्यारी (महाराजसे) भीति करनेमें (तू) किस कारणसे (अपने
 मनमें) आंठ (ब)रुकवट रखती है ॥ (इस बात में तू निसाखातिरहु कि) जिसमें
 वदनामी होजाय सो सलाह मैं (कभी) नहीं देऊंगी (और) येचपेच व ओछी सलाह
 देना आंछीबुद्धिवालोंका काम है ॥ (फिर) मेरी प्यारीनारि मेरीतो छेड़छांड इस
 मसंगकी है यानी (कोई) प्यारे मित्रके स्नेहबिना (यह) संसारमें थोड़े दिनोंकी मनु-
 प्यके चालेकी जिन्दगी निष्फलही है ॥ इति ॥

प्रसंग कविजनानु ॥

अथ पुराचीन कविजन नामानि वर्णनानुमान ॥ ३० ॥

बेनी १ देव २ भगवन्ता ३ द्विजदेव ४ पद्माकर ५ शम्भु ६
 सुन्दर ७ नवीन ८ ठाकुर ९ नाथ १० नौनिधि ११ अनन्त १२
 सुवदेव १३ दयानिधि १४ घनआनँड १५ तुलसी १६ निवान्त
 १७ दाम १८ ब्रह्म १९ गणिदेव २० महादेव २१ अजवेग २२
 हरिचन्द्र २३ चन्द्र २४ शेखर २५ अथापि २६ गंग २७ शिव २८
 दयाल २९ ललन ३० ॥ इति ॥

अन्योक्ति कवित्त ॥ १०२ ॥

बेनीके मुदेव भगवन्ता द्विजदेव मेरी पद्माकर अर्था शम्भु
 चक्र धर पायो है । सुन्दर नवीन ठाकुरतय दा ललन नाथ नौनिधि
 अनन्त सुभ देवन मुहापो है ॥ दयानिधि घनानन्द तुलसी नि-

२९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७
 वाजै दाम ब्रह्म मणिदेव महादेव जिन्ह ठायो है । अजवेश हर
 चन्द्र शेखर अधारि गंग शिव सो दयाल देव दूजो ना गनायो
 है ॥ इति ॥

श्रीमहादेव प्रभाव वर्णन ॥

टीका ॥ १०२ ॥ (कैसे महादेवजी महाराज हैं कि जिनको) वह श्रेष्ठ सुन्दर
 स्वासी पृथिवी के देवता ब्राह्मणों को पूजनेवाले भगवान् ने कमल पुष्पसमूह से
 पूजकर महादेवजी से सुदर्शनचक्र वरदानमें प्राप्त किया ॥ (और फिर कैसे महादेव
 जी हैं) उत्तम (व) पुत्रील अंचीपदवी (व) पुत्र के देनेवाले स्वामी (व) नवी
 निद्धी और अथाह सुन्दर आनन्द के देनेवाले हैं ॥ (तथा) कृपाकेसागर अ-
 स्यन्त आनन्द स्वरूप जचै हैं (अरु) सेवकोंपर कृपा करें व उद्धार करें हैं जिन
 को पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्दने देवतों में शिरोमणि भारी देवता स्थापित किया है ॥
 अपूर्व स्वामी महादेव चन्द्रमा ललाट गंगाजी के धारण करनेवाले (ऐसे जो)
 कङ्कर हैं तिन सरीखा दया करनेवाला दूसरा देवता नहीं कहागया है ॥

प्रसंगकविजनानु ॥

अथ कविनामानि वर्णनानुमान ॥ १५ ॥

श्रीपति १ रघुराज २ ऋषिनाथ ३ कविराज ४ श्रीधर ५ सर-
 दार ६ सुमारख ७ आलम = द्विज ९ परिडन १० नरेन्द्र ११ क-
 तिपाल १२ परमेश १३ ललनेश (व) ललन १४ पारस १५
 इति ॥

अन्योक्तिरसवेद्या ॥ १०३ ॥

श्रीपति श्रीरघुराज करै ऋषिनाथ वही कवि राज करैया । श्री

१० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ २०
 धर औ सरदार मुमारख दा कुल आलम आश पुरैया ॥ धौं दिज
 २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०
 पंडित बोध नरेन्द्र सिंहौ छतिपाल मुमेरु सृजैया । वो परमेश सदा
 ३१ ३२ ३३ ३४
 ललनेश प्रदा सुख पारस पुंज पुजैया ॥ इति ॥

श्रीरामचन्द्र प्रताप वर्णन ॥

टीका ॥ १०३ ॥ श्रीरामचन्द्र महाराजही धनवान कासकै हैं । तथा सुन्नो में
 १ २ ३ ४
 शिरोमणि व कवियों में प्रधान बोही करनेवाले हैं ॥ और मुखिया चिरंजीवों
 ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
 में लक्ष्मी के स्वामी समस्त संसार की मनसा पूरी कर देनेवाले (और मुमारख
 १३ १४ १५ १६ १७
 याने अचल आनंदका सुख) देनेवाले हैं ॥ अथवा ब्राह्मण व ज्ञानइ (व)
 १८ १९ २०
 बुद्धिमान साक्षर व विवेकी व नृा व बलवान् व छत्रधारियों में शिरोमणि पैदा
 २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७
 करनेवाले हैं ॥ व पितारूपी परमेश्वर सदैव आनन्दरूपी पारस का समूह के प्राप्त
 २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४
 कराय देनेवाले हैं ॥ इति ॥

प्रसंगकविजनानु ॥

अथ कविनामानि वर्णनानुमान ॥ २२ ॥

प्रेम १ मकरन्द २ वलदेव ३ वीर ४ श्याम ५ रामनाथ ६ रस-
 खानि ७ राज ८ महाराज ९ देवकीनन्दन १० गिरिधरदास ११
 विनोद १२ महाकवि १३ शिव १४ शेषजी १५ नरेश १६ म-
 रडन १७ दिगपाल १८ प्रमोदकवि १९ ललन २० अूपण २१
 गोपाल २२ ॥ इति ॥

अन्योक्ति कवित्त ॥ १०४ ॥

१ २ ३ ४ ५ ६
 प्रेम मकरन्द सौं पसन्द वलदेव वीर श्याम राम नाथ रसखानि
 ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६
 निधि मोदके । राजन के राज महाराज देवकीनन्दन गिरिधर वा-

सनकी आश दा विनोदके ॥ महाकवि बानी शिव भुजंगनेरश
 भनि मण्डनकरत दिग पालहू प्रमोदके । अवधललन भक्त भूषण
 गोपाल माहिं भेद जौन मानै तासु नाशै सुख गोदके ॥ इति ॥
 श्रीरामचन्द्र व कृष्णचन्द्र महिमा वर्णन ॥

टीका ॥ १०४ ॥ शेषावतारी बलदाऊजीके भ्राता श्रीकृष्णचन्द्र व श्रीरामचन्द्र
 जी स्वामी सर्वरसोंकेस्थल व आनन्द के सागर प्रीतिरूपी वासना सेही प्रसन्न
 होते हैं ॥ राजन के राजा महाराजन के महाराजा देवकी के पुत्र गोवर्द्धन पर्वण
 के धारणा करनेवाले संवकों की आनन्दरूपी कामना के देनेवाले हैं ॥ महात्र
 कवि, सरस्वती, महादेव, शेषजी वधिनकरनेहैं व दशोदिशानके पालक आन-
 न्दपूर्वक सिद्ध करते (व) मानते हैं ॥ रामचन्द्रजी व दासों के आभूषण कृष्ण-
 चन्द्र में जोकोई फर्क समझताहै तिसके सर्वआनन्दभाग और गोदी के
 पुत्र विनाश होजाते हैं ॥ इति ॥

दो० श्रीनन्देमत्त गुरुके शिष्य भीजे खात ॥

पितु ज्वालापरसादमम ललन नाम द्विजगात ॥ १ ॥
 इति श्रीललनचन्द्रिकापरिडतललनपियाशर्मासारस्वत
 अष्टवंशभारद्वाजीकहवावादमुहल्लामित्तकृन्वानिवामी
 दुमरीवनायकप्रसिद्धकविविरचितकवित्तलनिका
 सम्पूर्णमगुणम् ॥